राहू-केतू
और
ग्रहण - विचार
नागपुर प्रकाशन, नागपुर

"राहु-केतु" (ग्रहण) विचार

लेखक :

ज्योतिषी स्व. ह. ने. काटवे

संशोधित हिन्दी अनुवाद

प्रथमावृत्ति
६-७-१९६२

देवविचार माला क्रमांक ८

अनुक्रमणिका

प्रकरण		पृष्ठ

प्रकाशक :
दि. मा. घुमाळ
नागपूर प्रकाशन,
सीतावर्डी, नागपूर-१.

★

मुद्रक :
दि. गो. लवाटे
मॅजेस्टिक प्रिं. प्रेस,
टिळक पुतळा, नागपूर-२

ग्रहण-'राहु-केतु' विचार

ग्रहण विचार

चन्द्र और सूर्य के ग्रहणों का ज्ञान भारत में वेदकाल से ही चलता आया है। यह सृष्टि का एक चमत्कार है। प्रायः सभी राष्ट्रों में ग्रहणों के फल बहुत अशुभ माने गये हैं। अब भी सर्वत्र वेधशालाओं मे ग्रहणों के वेध लेने की बहुत कोशिश की जाती है। पश्चिमी ज्योतिषी भी ग्रहणों के फल अशुभ ही मानते हैं।।

चन्द्र का ग्रहण पौर्णिमा के पूर्ण होने पर हो सकता है। चन्द्र और राहुका अन्तर सात अंश से कम हो तो ग्रहण अवश्य होता है। सात से नौ अंशों तक अन्तर होने पर ग्रहण की सम्भावना होती है। इस से अधिक अन्तर हो तो ग्रहण नहीं होता। राहु की पात कक्षा में चन्द्र हो और उस का शर एक या डेढ अंश में हो तो ग्रहण होता है। ऐसी स्थिति में पृथ्वी और सूर्य की विरुद्ध दिशा में चन्द्र होता है तथा पृथ्वी की छाया से चन्द्र का कुल भाग आच्छादित होता है– यही ग्रहण कहलाता है। जब पृथ्वी और सुर्य के बीच चन्द्र आता है तब सूर्य का कुछ भाग दीखता नहीं है– यही सूर्यग्रहण है। सूर्यग्रहण में सूर्य, चन्द्र तथा राहु का विचार करना होता है। चन्द्रग्रहण में चन्द्र और राहु का ही विचार होता है। अब हम कुण्डली के भावों के अनुसार ग्रहण फलों का विचार करेंगे।

प्रथम स्थान में ग्रहण के फल

प्रथम स्थान में मेष, सिंह या धनु में राहु चन्द्र हों त
यह व्यक्ति विक्षिप्त, साहसी, गुस्सैल, बुद्धिमान होता है
बचपन में नजर लगना, रक्तदोष आदि से कष्ट होता है
दांत जलदी नही आते, बोलना सीखने में देर लगती है। वृषभ
कन्या तथा मकर में— मन के अनुसार चलनेवाला, किसी के
प्रभाव में न आनेवाला, स्वार्थी, अपनी ही फिक्र करनेवाला
घर के लोगों की भी चिन्ता न करनेवाला, पत्नी से सरल व्यव
हार न करनेवाला, कुछ व्यभिचारी, धन का संचय करनेवाल
होता है। मिथुन, तुला व कुम्भ में— बचपन में सूखा होन
मस्तक के विकार, बोलना सीखने में देर होना, गले में कौ
का विकार होना, अति बुद्धि, लोकविरुद्ध बरताव, शिक्षा
रुकावट ये फल होते हैं। कर्क, वृश्चिक, मीन में— भाग्यवा
किन्तु सदा रोगी, मितव्ययी, प्रपंच में बहुत आसक्त किन्तु मृत
से न घबरानेवाला, अभिमानी, बातूनी, विचारी, शान्त, पैसे
बारे में चिकित्सक होता है। लग्न में राहु-चन्द्र के साधार
फल इस प्रकार हैं— तरुण वय से प्रकृति नीरोग रहती है
प्रसिद्ध, चंचल, हठी, अनेक धंन्धें करनेवाला, पिता औ
कुटुम्ब को कष्ट देनेवाला होता है। लग्न में सूर्यग्रह
(रवि, चन्द्र और केतु एकत्र होना) बहुत कम देखने में आता है
ऐसे व्यक्ति बचपन में हमेशा बीमार रहते हैं, चलना बोलन
देर से आता है, दांत देर से आते हैं। अतिसार, संग्रहणी, कॉलर
आदि का कष्ट होता है। शिक्षा में शुरूसे ही रुकावटें आती
हैं। मां-बाप को कष्ट होता है। जन्म के समय स्थिति साधारण
रहती है। अपनी मेहनत से तरक्की करते हैं। घर में किसी

दुर्घटना से मृत्यु का डर रहता है। घर की बातें ये गुप्त नही रखते। झूठ बोलना, स्त्रियों से अधिक मित्रता रखना, पैसे के बारे में अविश्वास, दुष्टता, अति अभिमान होना ये इनके विशेष हैं। इनके आंख या वाणी में दोष होता है। बरताव कुछ गूढ, आलसी, बिना कुछ काम किये स्वस्थ रहना, पत्नी की कमाईपर निर्वाह करना आदि फल मिलते हैं। यह योग शुभ युति में हो तो शरीर स्वस्थ रहता है। अशुभ युति में हो तो दुबला पतला होता है। शुभ युति में बुद्धि शान्त, संशोधनप्रिय, एकान्त प्रिय, मिलनसार, उद्योगी स्वभाव होता है। इस योग में भाई बहिन कम होते हैं। दो विवाह होते हैं। सन्तति कम होती है।

द्वितीय स्थान के फल

इस स्थान में चन्द्रग्रहण शुभ युति में हो तो मेष, सिंह, धनु में——पूर्वार्जित सम्पत्ति नहीं होती। खुद की मेहनत से प्रगति कर धन प्राप्त करते हैं। धन बहुत कमाते हैं किन्तु संचय नही कर पाते। मिलनसार किन्तु व्यवहार में अनुशासन प्रिय, पैसे की फिक्र न करनेवाले, खाने के शौकीन, निर्व्यसनी, कुछ डरपोक होते हैं। सामाजिक रुचि कम होती है। वृषभ, कन्या, मकर में——बरताव बहुत व्यवस्थित, मितव्ययी, कम बोलनेवाला होता है। पूर्वार्जित धन थोडा होता है, उसे बढाते हैं। व्यवसाय में सफल होते हैं। बचपन में बहुत कष्ट रहता है। उत्तरार्ध में, सुख मिलता है। मिथुन, तुला, कुम्भ में——पूर्वार्जित सम्पत्ति नही होती। अपनी मेहनत से प्रगति करते हैं।

इस स्थान में सूर्यग्रहण हो तो—पूर्वार्जित सम्पत्ति होती है किन्तु बडे व्यवसायों में नुकसान हो कर आयु के ४२ से ४८ वें वर्ष तक निर्धन अवस्था आती है । फिर अपनी मेहनत से कुछ प्रगति करते हैं। निडर स्वभाव होता है । कीर्ति के लिए कोशिश करते हैं, स्वभाव से कम बोलनेवाले किन्तु मौका पाकर अच्छा बोलते हैं। प्रवास बहुत होता है। यह ग्रहण शुभ युति में हो तो बडे व्यवसायों में अच्छा लाभ होता है। उपयुक्त संस्थाओं को दानधर्म बहुत करता है। माता-पिता का सुख कम तथा पारिवारिक सुख अच्छा मिलता है। इसकी पत्नी की मृत्यु इस से पहले होती है। इसकी कीर्ति अच्छी होती है। सन्तति अच्छी नही होती ।

धनस्थान में ग्रहण अशुभ हो तो प्रसिद्ध खानदान की हालत बिगड़ती है। घर के कई लोगों की मृत्यु एक ही विशिष्ट ढंग से होती है। आखिरी समय संकट आते हैं। दो पीढ़ियों में ही खानदान उजड़ जाता है। शुभ ग्रहण हो तो अप्रसिद्ध घराना धीरे-धीरे अच्छी हालत में आता है। विद्वान, बुद्धिमान व्यक्ति होते हैं। इस योग में विद्या अथवा धन में एक की प्राप्ति होती हैं। कुल में पहले धन हो तो वह नष्ट होकर विद्वत्ता आती है विद्वत्ता हो तो वह कम होकर धन मिलता है।

तीसरे स्थान के फल

इस स्थान में चन्द्रग्रहण शुभ हो तो यह व्यक्ति विद्या में आसक्त, शान्त, बुद्धिमान, विना शोरगुल के काम करनेवाला होता है। यह बहनों के लिए घातक योग है—वे जीवित नही रहती अथवा विधवा होती हैं अथवा कुटुम्बसुख नही मिलता ।- माता

तथा भाइयों के लिए भी यह मारक योग है। इस व्यक्ति को कीर्ति मिलती है। ग्रहण अशुभ युति में हो तो यह बहुत बोलने-वाला, खर्चीला, अविश्वासी, निपुत्रिक, कई ब्याह करनेवाला होता है। इसे कान के रोग होते है। वृद्ध वय में दाहिना कान बेकार होता है। क्वचित दृष्टि में भी दोष होता है। इस स्थान में सूर्यग्रहण शुभ युति में हो तो यह व्यक्ति बहुत साहसी, अपने पराक्रम से प्रगति करनेवाला, लोकप्रिय, मिलनसार, सात्विक स्वभाव का, उदार, बडे व्यवसाय करनेवाला, संस्थाओं का स्थापक होता है। यह ग्रहण अशुभ युति में भाइयों को मारक होता है। उन्हें धन या सन्तति का कष्ट रहता है। अपघात से भाई बहनों का अन्त होता है। यह तामसी, गुस्सैल, गुस्से में आकर लोगों का नुकसान करनेवाला, आलसी, निरुद्योगी होता है। यह झगड़ालू, व्यसनी, लोगों पर आश्रित, समाज के लिए निरुपयोगी होता है। इसे मस्तिष्क विकार होते हैं।

चतुर्थ स्थान के फल

इस स्थान में चन्द्रग्रहण हो तो माता की मृत्यु ७ वें वर्ष के पहले होती है। इस के मृत्यु के बाद पत्नी जीवित रहती है। कई व्यवसाय करता है। जन्मभूमि से दूर जाना पड़ता है। यह असफल, अपमानित, अविश्वसनीय होता है। क्वचित गोद जाने का योग होता है। इस का स्वभाव निग्रही, किसी का न मानने-वाला, अपने ही मन से चलनेवाला, व्यवसाय में गलती करनेवाला होता है। इस की स्थावर सम्पत्ति नष्ट होती हैं। स्थिति अस्थिर रहती है। अन्त में दारिद्र रहता है। मृत्यु के समय इस का अपना घर नहीं होता। इस के माता के कुल में वंशवृद्धि

नही होती या बडे रोग होते हैं। इस के कुल में किसी बडे दोष से हालत बिगड़ कर अगली पीढी दरिद्र होती है। यह ग्रहण शुभ युति में हो तो कीर्ति बहुत और पैसा कम मिलता है। आचरण अच्छा होता है। इस योग में दो माताएं, दो पत्नियां होती हैं। यह लोगों के लिए बहुत अच्छे कार्य करता है किन्तु अपने घर का बहुत कल्याण नही कर पाता। यह साहसी होता है। घर-वार मिलता है किन्तु टिकता नही। वृद्ध आयु में बच्चों से कष्ट होता है। अन्त दारिद्र में तथा चमत्कारिक रीति से होता है। इस स्थान में सूर्यग्रहण शुभ युति में हो, तो पूर्वार्जित इस्टेट नही होती। हो तो नष्ट होती है। अपनी मेहनत से प्रगति करते हैं। इसे पिता का सुख कम माता का सुख अच्छा मिलता है। यह प्रामाणिक, विश्वासु, व्यवसाय में कुशल होता है। धन अच्छा मिलता है। दान बहुत करता है। सदाचारी, शीलवान, नियमित, स्वाभिमानी, मिलनसार, बलवान शरीर का, परोपकारी, लोगों के लिये कष्ट सहनेवाला होता है।

यह ग्रहण अशुभ युति में हो तो स्वभाव हलका, अविश्वासु, सच-झूठ की फिक्र न करनेवाला, शीलरहित, पापपुण्य से उदासीन होता है। माता को कष्ट होता है अथवा उस का मृत्यु होता है। इसका किसी से बनता नही। चतुर्थ स्थान में ग्रहण हो तो सन्तति नही होती। अथवा पहली सन्तति के बहुत बाद दूसरी सन्तति होती है। वृद्ध वय में अधिक सन्तति होती है।

पांचवें स्थान के फल

इस स्थान में चन्द्रग्रहण शुभ युति में हो तो यह बुद्धिमान, संशोधक, शान्त, स्त्रीभोग से कुछ उदासीन, कीर्तिमान होता है।

मृत्यु के बाद इस की कीर्ति नही होती। पुत्र नही होते अथवा अल्पायुषी होते हैं। शीलवान होता है। माता का मृत्यु जलदी होता है। यह उच्च दैवी प्रेम का इच्छुक होता है तथा पत्नी पर ऐसा ही उदात्त प्रेम करता है। ग्रहण अशुभ युति में हो तो यह बुद्धिभ्रष्ट, दुराचारी, परस्त्रियों में आसक्त, उद्योग में अस्थिर, सांसारिक सुख से वंचित तथा कुल की कीर्ति को नष्ट करनेवाला होता है। इस स्थान में सूर्यग्रहण शुभ युति में हो तो अतिशय कीर्ति का योग होता है। इस के विवाह दो तथा पुत्र बहुत कम होते हैं। यह बड़े उद्योग कर के बहुत धन कमाता है। बहुत विद्या सीख कर विदेश में भी जाता है। संस्थाए स्थापन करता है। शान्त, मिलनसार, दयालु, नियमित होता है। अशुभ युति में ग्रहण हो तो यह उद्धत, किसी की परवाह न करनेवाला, जंगली जैसा, तामसी, गुस्सैल, निरुद्योगी, आलसी दूसरों के व्यवसाय में विघ्न लानेवाला, झूठी अफवाहें फैलानेवाला, व्यभिचारी होता है। इसकी पत्नी को सन्ततिप्रतिबन्धक रोग होते हैं। इस स्थान में ग्रहण से पेट के रोग, तथा गुप्त रोग होते हैं। स्त्रीसुख की चिन्ता रहती है।

छठवें स्थान के फल

इस स्थान में ग्रहण शुभ युति में हो तो शरीर नीरोग रहता है। अकारण शत्रु बहुत होते हैं किन्तु शत्रुत्व कायम नही रहता। इस की नौकरी ठीक तरह चलती है, पेन्शन निर्बाध मिलती है। प्रगति होती है। लोगों पर प्रभाव रहता है। योगाभ्यास की ओर रुचि होती है। व्यवहार ठीक रहते हैं। अशुभ युति में ग्रहण हो तो हमेशा रोग होते हैं। रोगों की चिकित्सा

डॉक्टर या वैद्य नहीं कर पाते। रोगी अवस्था के कारण असमय में पेन्शन लेनी पडती है। योगाभ्यास में दोष होने से रोग होते हैं। इस के व्यवहार हमेशा उलझनभरे रहते हैं। उन्नति के लिये यह जो काम करता है उस से अवनति ही होती है। लोगो मे निन्दा का पात्र होता है। तरह तरह की अफवाहें फैलती हैं। अकारण विवाद करनेवाला, झगडालू, शत्रुओं से त्रस्त होता है। रोग अल्पकाल के होते हैं।

इस स्थान में सूर्यग्रहण शुभ युति में हो तो मेहनत से प्रगति होती है। नौकरी में प्रगति हो कर पेन्शन योग्य समय मिलती है। वरिष्ठ अधिकारी से झगडकर प्रगति होती है। शरीर नीरोग रहता है तथा शत्रु नष्ट होते हैं। सब व्यवहार सरल होते हैं। यह ग्रहण अशुभ युति में हो तो हमेशा रोग होते हैं। शत्रु बहुत होते हैं। व्यवसाय में नुकसान होता है। नौकरी ठीक नही चलती। असमय में पेन्शन लेनी पडती है। इस का स्वभाव दुष्ट, स्वार्थी, वंचक होता है।

इस स्थान में ग्रहण का साधारण फल इस प्रकार है। मामा व मौसियों का संसार ठीक नही होता–मौसियाँ विधवा होती हैं, मामा को पुत्र सन्तति नही होती। इस स्थान में ग्रहण से अनैतिक सम्बन्ध–परस्त्री, परपुरुष से सम्बन्ध होना अथवा अविवाहित रहना या पुत्रहीन होना यह फल भी देखा है। किन्तु वसिष्ठ के कथनानुसार इस स्थान में ग्रहण शुभ फल देता है। यथा–त्रिषट्दशाविलग्ने नराणां शुभप्रदं स्यात् ग्रहणं रवीन्द्वोः। द्विसप्तनन्देषु च मध्यमं स्यात् शेषेष्वनिष्टं मुनयो वदन्ति। सूर्य अथवा चन्द्र का ग्रहण ३–६–१० इन स्थानों में शुभ होता है, २–७–९ इन में मध्यम यथा बाकी स्थानों में अनिष्ट होता है।

सातवें स्थान के फल

इस स्थान में चन्द्रग्रहण शुभ युति में हो तो सप्तम स्थान के विषय–स्त्री तथा उद्योग में किसी एक की हानि होती है। शुभ युति में स्त्री राशि में हो तो साधारण शुभ फल मिलते हैं। विवाह एकही होना, पतिपत्नी में अच्छा प्रेम रहना, नौकरी या धन्धा ठीक चलना आदि फल मिलते हैं। यह सदाचारी और समाधानी होता है किन्तु भाग्योदय विशेष नहीं होता। वृद्ध वय में पत्नी की मृत्यु पहले होती है। उस का स्वास्थ्य अच्छा नही रहता। ग्रहण पुरुष राशि में अशुभ युति में हो तो विवाह अधिक होते हैं। नौकरी स्थिर नही रहती। सन्तति बहुत कम होती है। आपत्तियां बहुत आती हैं। स्त्री का स्वभाव अच्छा न होने से संसार से उदासीन होता है। घर छोडने या देहत्याग की इच्छा होती है।

इस स्थान में सूर्यग्रहण शुभ हो तो स्त्रीसुख साधारण अच्छा मिलता है। ४८ वें वर्ष में स्त्री का मृत्युयोग होता है। सन्तति १–२ होती है। यह औकात के बाहर के धन्धे करता है। लोगों में कीर्ति पाता है। लोकोपयोगी कार्य करता है। अशुभ योग हो तो स्त्रीसुख नही मिलता, नौकरी स्थिर नही होती, विवाह अनेक होते हैं, अपना घरबार कभी नही हो पाता, प्रवास से बहुत कष्ट होता है।

आठवें स्थान के फल

इस स्थान में चन्द्रग्रहण शुभ हो तो आयु ३८ वर्ष तक होती है। इसी अल्पकाल में कीर्ति मिलती है। स्त्रीधन मिलता है। अशुभ हो तो अल्पायु होता है, आयुष्य कष्टपूर्ण होता है।

स्त्री या सन्तति का सुख नही मिलता। सूर्यग्रहण शुभ हो तो ४८ वर्ष तक आयु होती है। स्त्री अच्छी मिलती है। विवाह जलदी होता है। स्त्रीधन मिलता है। पुत्र एकही होता है। स्वास्थ्य अच्छा रहता है किन्तु आयु के पूर्वार्ध में कष्ट रहता है। अशुभ हो तो विवाह में कठिनाई होती है। धनहानि होती है। आयु के उत्तरार्ध में शारीरिक कष्ट होता है। क्षय, दमा श्वास, पण्डु-रोग आदि से कष्ट होता है।

नौवें स्थान के फल

इस स्थान में चन्द्रग्रहण शुभ युति में हो तो इस की अगली पीढी बहुत भाग्यवान होती है। लम्बे प्रवास, यात्राएं होती हैं। धार्मिक वृत्ति तथा शील अच्छा होता है। इसे छोटे भाई नही होते—बहनें रहती हैं। बहनों के पोषण की चिन्ता रहती है। यह बहुपत्नीयोग है। इसे प्रथम कन्याएं होती हैं। वृद्ध वय में पुत्र होता है। बचपन से मेहनत कर प्रगति करता है। नौकरी अच्छी तरह होती है। माता या पिता की बचपन में ही मृत्यु होती है। आयु के अन्तिम भाग में घरबार प्राप्त होता है। पूर्वार्जित सम्पत्ति को यह बढाता है। ग्रहण अशुभ हो तो यह व्यभिचारी होता है। पिता की बचपन में मृत्यु होती है। भाईबहनें नही होतीं। इज्जत नही होती। हीन स्त्रियों से सम्बन्ध रखता है। यह परावलम्बी, बेकार भटकनेवाला, गप्पें हांकनेवाला, कुल की कीर्ति नष्ट करनेवाला होता है।

इस स्थान में सूर्यग्रहण शुभ युतिमें हो तो यह कीर्तिमान, तेजस्वी, कार्यकुशल होता है। इस के पुत्र भाग्यवान होते हैं। किसी के मदद के विना प्रगति करता है। दयालु, संस्थाओं का

स्थापक, मिलनसार, शीलवान, विद्वान होता है। शिक्षा पूरी होती है। यह योग भाईबहनों के लिए मारक है। भाई रहे तो समझदारी से बटवारा होता है। एकत्र रहें तो भाई की प्रगति में बाधा रहती है। भाईबहनों से बनती नही। यह प्रीतिविवाह करता है किन्तु अपने धर्म को नही छोडता। शिक्षा या व्यवसाय के लिए विदेश में जाता है। इस योग में कीर्ति अधिक और धन कम मिलता है। ग्रहण अशुभ युति में हो तो आलसी, उद्योग रहित, परावलम्बी, व्यभिचारी, हमेशा भटकनेवाला होता है। विवाह न करने की प्रवृत्ति होती है। माता-पिता का सुख जलदी नष्ट होता है। भाईबहनें नही होतीं या उन से झगडे होते हैं। बटवारे में झगडे होते हैं। लोगों में अप्रिय होता है। नौकरी या व्यवसाय में अस्थिरता रहती है। नेत्ररोग या कान के रोग होते हैं। इस स्थान में ग्रहणों के शुभफल का मुख्य समय १९ व २१ वें वर्ष से तथा अशुभफलों का मुख्य समय २८ व ३७ वें वर्ष से रहता है जब अपमान, धनहानि, कुटुम्ब के लोगों की मृत्यु आदि होते हैं।

दसवें स्थान के फल

इस स्थान में चन्द्रग्रहण शुभ युति में हो तो पूर्वार्जित इस्टेट नही होती। खुद की कमाई सम्पत्ति उपयुक्त संस्थाओं को दान देता है बचपन से कष्ट कर प्रगति करता है। पिता दीर्घायु होता है। यह स्वतन्त्र वृत्ति का, किसी का अंकित न रहनेवाला होता है। इस की शिक्षा धनार्जन के काम नही आती। दूसरे ही व्यवसाय में कीर्ति मिलती है। तपस्वी, निग्रही, योगी, जनता का सेवक, राजनीतिक या सामाजिक आन्दोलन का नेता,

सामाजिक तत्त्वों का पुरस्कर्ता तथा इन के प्रसार के लिए कष्ट सहनेवाला होता है। विचारशील, प्रगल्भ बुद्धि का, न्याय में कुशल, लोगों के अपने विचार समझाने में प्रवीण होता है। ग्रहण अशुभ युति में हो तो यह हलके धन्धे करनेवाला, गप्पें लडानेवाला, स्वार्थी, व्यभिचारी, व्यसनों में पूर्वाजित सम्पत्ति गमानेवाला, आलसी, निरुद्योगी, उपयोगी कार्यो में विघ्न लानेवाला, झगडे बढानेवाला होता है। यह किसी एक धन्धे में स्थिर नही रह पाता। शिक्षा पूरी नही होती।

इस स्थान में सूर्यग्रहण शुभ युति में हो तो माता पिता की मृत्यु बचपन में होती है। पूर्वाजित इस्टेट नही होती। अपने कष्ट से धन, विद्या प्राप्त करता है तथा बडा अधिकारी अथवा अकल्पित व्यवसाय करनेवाला होता है। ग्रहण अशुभ युति में हो तो मातापिता का सुख नही मिलता, पूर्वाजित सम्पत्ति नही होती। इसे सन्तति नही होती। यह दत्तकपुत्र होता है अथवा दत्तक लेता है। आयुष्य में स्थिरता होती है, बहुत प्रगति नही होती। प्रवास बहुत होता है। यह द्विभार्या योग है। साधारणतः इस स्थान का सूर्यग्रहण उन्नति का सूचक है। जीवन समाधानपूर्ण रहता है।

ग्यारहवें स्थान के फल

इस स्थान में चन्द्रग्रहण शुभ युति में हो तो लाभ बहुत होता है। कई व्यवसाय होते है। विधानसभा आदि में चुने जाते हैं तथा उस काम में कीर्ति मिलती है। इसे कन्याएं अधिक होती है। पुत्र नहीं होते अथवा हो कर मृत होते है, गर्भपात होते है। इसे बडे भाई के कुटुम्ब का पोषण करना पडता है।

रिश्वत लेने से हानि नही होती । मृत्युसमय सन्तुष्ट होता है । ग्रहण अशुभ युति में हो तो सन्तति नही होती । लाभ के समय विघ्न आते है वासना बुरी होती है । रिश्वत से हानि होती है । बडे भाई के कुटुम्ब का पोषण करना पडता है । आंख या कान के रोग होते है । इस स्थान में सूर्यग्रहण शुभ योग में हो तो अचानक बहुत लाभ होते है । ३६ वें वर्ष में धन, कीर्ति, सन्मान मिलता है । पूर्व आयु में व्यवसाय सफल रहता है । पिता, भाई आदि नही रहते । यह अधिकारयोग है । पुत्र एक होता है तथा वह भाग्यवान होता है । कन्याएं बहुत होती है । अशुभ योग में ग्रहण हो तो सन्तति नही होती । पत्नी को आर्तवशूल, मासिक धर्म अनियमित होना, आदि से कष्ट होता है । सन्तति हुई तो अल्पायु होती है गर्भपात होते है । व्यवसाय में लाभ नही होता । हमेशा मानहानि तथा आर्थिक अडचनें रहती है । बुद्धिभ्रंश या मस्तिष्क के विकार होते हैं ।

बारहवें स्थान के फल

इस स्थान में चन्द्रग्रहण शुभ योग में हो तो कीर्ति मिलती है । पूर्ववय में जीविका के लिए प्रवास करना पड़ता है । उत्तर आयु में स्थिरता रहती है । पति-पत्नी सम्बन्ध प्रेमपूर्ण रहते हैं । मन विरक्त रहता है किन्तु व्यवहारी होते हैं । अपवाद आते है किन्तु वे दूर भी होते है । व्यवसाय में कुशल, साहसी, दुनिया में कही भी जाने को तैयार, लोकप्रिय, मिलनसार, नियमित, प्रसंगावधानी, उदार होते है । अकेले खाने को जी नही चाहता । दयालु, परोपकारी होता है । अशुभ योग में ग्रहण हो तो अकारण ही पति-पत्नी में वियोग होता है । व्यभिचारी होने से

अपवाद फैलते है। मुलकी या फौजदारी कारणों से कारागृह क योग होता है। अनपेक्षित संकट आते हैं। पुत्र कम होते हैं तथा वे पिता के प्रतिकूल आचरण करते हैं। दो विवाह होते हैं

इस स्थान में सूर्यग्रहण शुभ युति में हो तो प्रसिद्धि मिलती है। बड़े कार्य करता है। राजकीय या सामाजिक नेता होता है नौकरी या व्यवसाय में लोकप्रिय होता है। बडे अधिकार की नौकरी या वडे व्यवसाय करता है। इसे आप्तमित्र बहुत होते है। अनाथों को मदद करता है। मृत्यु के बाद भी नाम रहता है। पतिपत्नी में प्रेम रहता है। किन्तु प्रेम के झगडे भी रहते हैं। यह चुनाव में जीतता है। संस्थाए स्थापन करता है। उन्हें दान देता है। राजकीय या सामाजिक आन्दोलन में दण्ड, कैद या निर्वासन मिलता है : ग्रहण अशुभ योग में हो तो अयोग्य कामों मे धन गमाता है। बुरी प्रसिद्धि मिलती है। स्त्रीसुख कम मिलता है। दो विवाह होते हैं। व्यभिचारी, गुप्त रोग या कुष्ठ जैसे रोगों से कष्ट होता है। पुत्र कम होते है। अयोग्य कामों में दण्ड, कैद मिलते हैं। अविश्वासी, कोई भी काम अधूरा करता है। लोगों से अलग रहता है। व्यवसाय में अस्थिरता रहती है। कभी नौकरी, कभी व्यवसाय करता है। शुभ कार्य कभी नही करता।

इस प्रकार ग्रहणों के भावफल बतलाये। ग्रहण आकाश में दृश्य हो—अर्थात कुण्डली के लग्न, व्यय, लाभ, दशम, नवम तथा अष्टम स्थान में हो तो ये फल स्पष्ट होते हैं। द्वितीय से सप्तम स्थान तक के ग्रहण दृश्य नही होते अतः पंचांग में भी इन ग्रहणों का कोई वर्णन नही होता। किन्तु वराह, वसिष्ठ,

नारद, लोमश, भरत आदि संहिताओं में तथा दैवज्ञकामधेनु, मुहुर्तमार्तण्ड, मुहूर्तचिन्तामणि, मुहूर्तप्रकाश, मुहूर्तगणपति, मुहूर्त दीपक, मुहूर्तदर्पण, मुहूर्तमाला, धर्मसिन्धु, निर्णयसिन्धु, शूद्र-कमलाकर आदि ग्रन्थों में द्वितीय से सप्तमतक के ग्रहणों के फल भी संक्षेप में दिये हैं। अतः हमने भी इन फलों का वर्णन दे दिया है। पाठक इस का अनुभव से मिलान करें।

प्रकरण २ राहु का स्वरुप ग्रहयोनिभेद

वैद्यनाथ–स्थान–अहिध्वजाः शैलाटवी संचरन्तः। यह पर्वत-शिखरों तथा वनों में संचार करते है। आयु-शताब्दसंख्याः राहू-केतवः। इन की आयु सौ वर्ष की है। रत्न-गोमेदवैडूर्यके। राहुका रत्न गोमेद तथा केतु का वैडूर्य है। दिशा—नैऋत्य। क्रीडास्थान—वेश्मकोणे—राहु का स्थान घर तथा केतु का स्थान कोना है। दृष्टि–अधोक्षिपातः तु अहिनाथः। नीचे देखते हैं बल के स्थान-मेषालिकुम्भ तरुणीवृषकर्कटेषु मेषूरणे च बलवानुरगा-धिपः स्यात्। कन्यावसानवृषचापधरे निशायामुत्पातकेतुजनने च शिखी बली स्यात्। मेष, वृश्चिक, कुम्भ, कन्या, वृषभ तथा कर्क राशि में दशम स्थान में राहु बलवान होता है। कन्या के अन्त में, वृषभ तथा धनु में, रात्रि में तथा उत्पात एवं धूमकेतु के दर्शन के समय केतु बलवान होता है।

दोष–राहुदोषं बुधो हन्यात्। राहु के दोष को बुध दूर करता है।

पराशर–स्थान–वनस्थः। वन में रहता है। शिखिनः स्वर्भानोः वल्मीकं स्थानमुच्यते। इस का स्थान वामी में है। जाति-चाण्डाल। धातु-सीसा। केतु का रत्न-नीलमणि। वस्त्र चित्रकन्था फणीन्द्रस्य केतोश्छिद्रयुतं वस्त्रम् रंगीबंरगी गोदड़ी

राहुका तथा केतुका वस्त्र कटा हुआ होता है काल-अष्टौ मासाः स्वर्भानोः केतोः मासत्रयम् । राहुका समय आठ मास तथा केतु का तीन मास है।

मन्त्रेश्वर–सी संच जीर्णवसनं तमसस्तु केतोः मृद्भाजन विविधचित्रपटं प्रदिष्टम् । राहु का धातु सीसा, वस्त्र-जीर्ण है केतु का पात्र मिट्टी का, वस्त्र रंगबिरंगा है । गुल्मं केतुरहितश्च शालद्रुमाः–केतु छोटे वृक्षों का कर्ता है । राहू शालवृक्ष का निर्माता है ।

नीलकण्ठ–वर्ण – निषाद, लिंग – पुरुष, समय – दोपहर का, धातु – लोहा, गुण – तामस, रस – कषाय, भूमि – ऊषर धातु -- वायु, अवस्था – वृद्ध, स्थान – विवर । यह अपाद (चरणरहित), पापग्रह, चरग्रह है ।

वेंकटेश्वर शर्मा–सर्पस्थानं सैंहिकेयस्य । इस का स्थान सांप के बिल हैं । रंग नीला, चित्रविचित्र है ।

जयदेव–संध्यायां भुजंगमः । यह संध्या समय बलवान होता है । राहुः सरीसृपः–सरपट चलनेवाला है । दक्षिणतोमुखः– मुख दक्षिणकी ओर है । भोगीन्द्रः प्रकृत्या दुःखदो नृणाम् । दुःख देता है । फणिनः स्थविराः ग्रहाः । यह वृद्ध ग्रह है ।

पुंजराज–सिंहीसूनुर्म्लेच्छवंशोद्भवानाम् । यह म्लेच्छों कि अधिपति है । रस – तीखा है ।

पराशर–धूम्रकारो नीलतनु र्वनस्थोपि भयंकरः । वात प्रकृतिको धीमान् स्वर्भानुप्रतिमः शिखी । यह धूएं जैसा, नीले रंग का, वनचर, भयंकर, वात प्रकृतीका तथा बुद्धिमान होता है।

मन्त्रेश्वर–नीलद्युतिर्दीर्घतनुः कुवर्णः पापी सभापंडितः सहिक्कः। असत्यवादो कपटी न्न राहुः कुष्ठी परान् निन्दति बुद्धिहीनः। यह नीले रंग का ऊंचे कद का, कुरूप, पापी पंडित, हिचकियों से पीडित, झूठ बोलनेवाला, कपटी, कोढी, परनिन्दक बुद्धिहीन होता है। रक्तोग्रदृष्टिर्विवागुग्रदेहः सशस्त्रः पतितश्च केतुः। धूम्रद्युतिः धूमप एवं नित्यं व्रणांकितांगश्च कृशो नृशंसः। केतु की दृष्टि लाल तथा उग्र वाणी, हीन शरीर, उग्र शस्त्रसहित, पतित, धुए जैसे रंग का, व्रणसहित, दुबला, दुष्ट तथा नित्य धूम्रपान करनेवाला होता है।

नीलकण्ठ–राहुस्वरूपं शनिवत् निषादजातिर्भुजंगोऽस्थिपनैर्ऋतीशः। केतुः शिखी तद्वदनेकरूपः खगस्वरूपात् फलमित्थमुद्दाम ॥ इस का स्वरूप शनि जैसा, जाति-निषाद, धातु-अस्थि, दिशा नैऋत्य होती है। केतु अनेक रूपों का होता है।

।**अज्ञान**–अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥ सैंहिकेयस्तमो राहुः कज्जलाचलसंनिभः। यः पर्वणि महाकायो ग्रसते चन्द्रभास्करौ ॥ प्रणमामि सदा राहुं सर्पाकारं किरीटिनम्। सैंहिकेयं करालास्यं सर्वलोकभयप्रदम् ॥ इस ग्रह का शरीर आधा, महाबलवान, काजल के पहाड जैसा, अन्धकाररूप, भयंकर, सांप जैसा, मुकुटयुक्त, भयंकर मुख से युक्त है। यह सिंहिका राक्षसी का पुत्र है तथा पर्व के समय सूर्य और चन्द्र का ग्रास करता है।।

पराशर–प्रयाणसमयसर्परात्रिसकलसुप्तार्थद्यूतकारको राहुः। व्रणरोगचर्मार्तिशूलस्फुटक्षुधार्ति कारकः केतुः ॥ प्रवास का समय,

रात्रि, सोए हुए प्राणी, जुंआ तथा सांपों कारक राहु है। व्रण, चर्मरोग, शूल, भूख, फोडेफुन्सी इन का कारक केतु है ॥

वेंकटेश्वर—यशःप्रतिष्ठाछत्रकारको राहुः। कीर्ति, सन्मान, राजवैभव का कारक राहु है ॥

मन्त्रेश्वर—बौद्धाहितुण्डिखगराजवृकोष्ट्रसर्पान् ध्वान्तादर्थ मशकमत्कुणकृम्युलूकाः। बौद्ध, संपेरे, पक्षी, भेडिये, ऊंट, सांप, कौए, मच्छर, खटमल, कीडे, उल्लू ये राहु के अधिकार में हैं। स्वर्भानुर्हृदितापकुष्ठविमतिव्याधिं विषं कृत्रिमं पादार्तिं च पिशाचं पन्नगभयं भार्यातनूजापदं। ब्रह्मक्षत्रविरोधशत्रुभयजं केतुस्तु सं चयेत् प्रेतोत्थं च भयं विपंचगुलिको देहार्तिमाशौचजम् ॥ हृदय रोग, कोढ, बुद्धिभ्रंश, विषबाधा, पैर के रोग, पिशाच बाधा, पत्नी या पुत्र का दुःख, ब्राह्मण और क्षत्रियों में विरोध, शत्रु भय, प्रेतवाधा, शरीर की मलिनता से रोग यह केतु का कारकत्व है।

वैद्यनाथ—सर्पेणैव पितामहं तु शिखिना मातामहं चिन्तयेत्। राहु से दादा का तथा केतु से नाना का विचार करना चाहिए। करोत्यपस्मारमसूररज्जूक्षुधाकृमिप्रेतपिशाचभूतैः। उद्बन्धनाच्च शुचिकुष्ठरोगैः विधुंतुदश्चातिभयं नराणाम् ॥ अपस्मार, चेचक, नासूर, भूख, कृमि, प्रेतपिशाच बाधा, अरुचि, कैद, कोढ यह राहु का कारकत्व है। कण्डूमसूररिपुकृत्रिमकर्मरोगैः स्वाचारहीनल घुजातिगणैश्च केतुः। खुजली, चेचक, शत्रु का कपट, रोग, हीन जाति के लोग इन का कारक केतु है।

कालिदास— छत्रं चामरराष्ट्रसंग्रहकुतर्कक्रूरवाक्यान्त्यजा पापस्त्रीचतुररन्तयानवृषलद्यूताश्च सन्ध्याबलम्। दुष्टस्त्रीगमनान्य देशगमनाशौचास्थिगुल्मानृताऽधोदग् भ्रामिकगारुडा यममुखम्ले च्छादिनीचाश्रयाः ॥ दुष्टग्रन्थिमहाटवीविषमसंचाराद्रिपीडा बहि

ण्थानं नैऋतदिक् प्रियानिलकफक्लेशोहिविण्मारुता: । प्रयाणक्षणो द्धो वाहननागलोकजननीताता मरुच्छूलका:।। कासश्वासमहासन्तापवान् दुर्गोपासका धृष्टता सांगत्यं पशुभिस्त्वसव्यलिपिलेख्यं क्रूरभाषा: त्वग: ।। राहु के कारकत्व में निम्न विषय आते हैं—छत्रचामर (राजचिन्ह), देश की समृद्धि, कुतर्क, क्रूर भाषण, नीच जाति, पापी स्त्रियां, सीमाएं, वाहन, शूद्र लोग, जुंआ, सन्ध्यासमय, अयोग्य स्त्री से सम्बन्ध, विदेश में प्रवास, अपवित्रता, हड्डी या गांठ के रोग, झूठ बोलना, नीचे की तथा उत्तर दिशा, सपेरे, यम, म्लेच्छ आदि नीच लोग, बुरी गांठें, वन, पर्वत, बाहर के स्थान, नैऋत्य दिशा, वात तथा कफ की पीडा, सांप, हवा, छोटे और बडे सरपट चलनेवाले प्राणी, सोए हुए प्राणी, प्रवास का समय, वृद्ध, वाहन, नागलोक, नाना, वातशूल, खांसी, श्वास, दुर्गा की उपासना, ढीठपना, पशुओं की समृद्धि, दांए ओर से लिखी जानीवाली लिपि (उर्दू आदि) तथा क्रूर भाषा। केतु का कारकत्व—चण्डीशेश्वरविघ्नपादिसुरवृन्दोपासना वैद्यकं श्वान: कुक्कुटगृद्धमोक्षसकलैश्वर्यक्षयार्तिज्वरा: । गंगास्थानमहातपानिलनिषादस्नेहभृत्यप्रदा: पाषाणो व्रणमन्त्रशास्त्रचपलत्वब्रह्मवेत्तृवता । कुक्ष्यक्ष्यार्तिजडत्वकंटकमृगज्ञानानि मौनव्रतं वेदान्तोऽखिलभोगभाग्यरिपुपीडोत्पन्नतापाल्पभुक् । वैराग्यं च पितामहक्षुदतिशूलस्फोटकाद्या रुज: । शृंगीभृंगिविरुद्धबन्धनकृताज्ञां शूद्रगोष्ठीर्ध्वंनजात् ।। केतु ग्रह से निम्न विषयों का विचार करना चाहिए—शिव, विष्णु या गणेश आदि देवों की उपासना, वैद्यक, कुत्ते, मुर्गे, गीदड, क्षय, ज्वर, सब प्रकार का ऐश्वर्य, मुक्ति, गंगा के तट के स्थान, बडी तपश्चर्या, वायु, निषाद (वनचर), स्नेह, नौकर, पत्थर, व्रण, मन्त्रशास्त्र, चपलता, ब्रह्मज्ञान, पेट

या आंख के रोग, जडता, कांटे, पशु, ज्ञान, मौन, वेदान्त, प्रकार के उपभोग, भाग्य, दादा, भयंकर शूल, फोडे फुन्सी रोग, शूद्रलोग, नीच आत्माओं से कष्ट ।

हमारे मत से राहु के कारकत्व के विषय— तर्कशा स्थानिक स्वायत्त संस्थाएं—म्युनिसिपालिटी, जिला परिषद, विध सभा, लोकसभा, रेलवे कर्मचारी, कमिशन एजेन्ट, विज्ञ एजेन्ट, रबड़, डामर, बिजली सामान, गांजा, भांग, उन्म अवस्था, हिप्नाटिझम-मेस्मेरिझम, बदलते रंगों के फूल प्राणी, बरफ, सरकस, सिनेमा, सेल्युलाइड, दुराग्रह, उद्धत विनाशक बातें, भ्रम-आभास, पिशाच-भूतबाधा, दादा स्थिति, कल्पना तथा संशोधन में निपुणता, अफवाहें फैला निराधार बातें करना, कार्य में प्रेरणा, पूर्वपरम्परा-प्राचीन संस्कृ का अभिमान, अद्भुत की रुचि, आकस्मिक-विलक्षण ब अस्पष्ट-अव्यवस्थित बरताव, घपले-गबन, पवित्रता, विश्वबन्धु वासनारहित होना, भक्तियोग, आध्यात्मिक उन्नति, ज्ञ मुक्ति, घर के खेल-ताश, कैरम, पांसे, पहेलियां सुलझाना आदि

प्रकरण ५

राहु का कुछ अधिक विवरण

इस ग्रह की गति दैनिक ३ कला २१ विकला है । बारह राशियों के भ्रमण के लिए ६७८५ दिन २० घटी पल ७ $\frac{१६३}{१९९}$ विपल इतना समय लगता है । यह लगभग १८ ७ मास २ दिन होता है । इस के विषय में विलियम लिली विचार इस प्रकार हैं— यह पुरुष प्रकृति है । गुरु तथा शुक्र मिश्रण जैसा स्वभाव है । यह भाग्यदायी है । यह शुभ ग्रहों साथ हो तो उन के शुभ फल अधिक मिलते हैं । अशुभ ग्रहों

थ हो तो वे फल कम अशुभ होते हैं। केतु यदि अशुभ ग्रहों के थ हो तो अशुभ फल अधिक तीव्र होते हैं। शुभ ग्रहों से प्राप्त नेवाले फलों में केतु की युति से आकमिक विघ्न आते हैं तथा ना-बनाया काम बिगड जाता है। शुभ ग्रह केन्द्र में या बहुत अच्छे योग में हों तभी केतु का यह दोष दूर हो सकता है।

मेष–यह पुरुष राशि, दिन की, स्थलान्तर सूचक (चर), क्ष, उष्ण, अग्नि तत्त्व की है। तामसी, पशु, चैनबाजी, उद्धतपन, संयत व्यवहार, लाल रंग की द्योतक यह राशि मंगल की प्रधान राशि है। यह राहु के लिए अशुभ है।

वृषभ–यह स्त्री राशि, भूमि तत्त्व की, शीतल, रुक्ष, उदासीन, स्थिर, रात्रि की तथा नीम्बू रंग की राशि शुक्र की गौण राशि है। यह राहु के लिए शुभ है।

मिथुन–यह पुरुष राशि, वायु तत्त्व की, उष्ण, आर्द्र, लाल रंग की, दिन की, बुध की प्रधान राशि है। यह राहु की उच्च राशि है अतः राहु के लिए अशुभ है।

कर्क–यह स्त्री राशि, जल तत्त्व की, शीत, आर्द्र, कफ प्रकृति की, नारंगी या हरे रंग की, रात्रि की, चर, कम वाणी की, चन्द्र की प्रधान राशि है। यह राहु के लिए शुभ है।

सिंह–यह पुरुष राशि, अग्नि तत्त्व की, उष्ण, रुक्ष, क्रोधी प्रकृति, दिन की, पशु वन्ध्या, लाल या हरे रंग की, सूर्य की प्रधान राशि राहु को बहुत प्रिय है।

कन्या–यह स्त्री राशि, पृथ्वी तत्त्व की, शीत, उदासीन, वन्ध्या, रात्री की, नीले-काले रंग की, बुध की गौण राशि, राहु के लिए अशुभ है। इस में राहु अन्ध कहा गया है।

तुला—यह पुरुष राशि, उष्ण, आर्द्र, आरक्त, चर, सांकु
तिक, मनुष्य प्रकृति, दिन की, काला या गहरा पीला रंग, श
की प्रधान राशि, राहु के लिए अशुभ है।

वृश्चिक—यह स्त्री राशि, शीत, जलतत्त्व की, रात्रि
कफ प्रकृति की, स्थिर, गहरे पीले रंग की, मंगल की गौण रा
है। वृश्चिक विषदर्शक है तथा राहु विषकारक है अतः यह रा
राहु की प्रिय है।

धनु—यह पुरुष राशि, अग्नि तत्त्व की, उष्ण, रुक्ष, ताम
दिन की, वन्ध्या, पीले या आरक्त हरे रंग की, गुरु की प्रध
राशि राहु के लिए अति अशुभ है।

मकर—यह स्त्री राशि, रात्रि की, शीत, रुक्ष, उदास
पृथ्वी तत्त्व की, चर, चतुष्पाद, काले या गहरे पीले रंग की, श
की गौण राशि राहु को शुभ है।

कुम्भ—यह पुरुष राशि, उष्ण, आर्द्र, दिन की, रक्ताधि
सूचक, स्थिर, आस्मानी रंग की शनि की प्रधान राशि राहु
अशुभ है।

मीन—यह स्त्री राशि, फलदायी, कफप्रकृति, जलतत्त्व
द्विस्वभाव, चमकीले सफेद रंग की, रात्रि की, गुरुकी गौण रा
राहु को शुभ है। विलियम लिली ने इसे आलसी, निष्क्रि
निस्तेज स्वभाव की कहा हैं किन्तु यह हमें उचित प्रती
नही होता।

राहु का उच्चनीचत्व

राहोस्तु कन्यका गेहं मिथुनं स्वोच्चभं स्मृतम्। उच्च
मिथुने सिंहिकासुतः। राहुर्युग्मे तु चापे च तमोवत्केतुजं फलम्

कुछ आचार्यों के मत से राहु का स्वगृह कन्या तथा उच्च राशि मिथुन है--नीच राशि धनु है। राहोस्तु वृषभं केतोर्वृश्चिकं तुंगसंज्ञितम। मूलत्रिकोणं कुंभं च प्रियं मित्रभमुच्यते।। अन्य आचार्यों के मत से राहु की उच्च राशि वृषभ, केतु की उच्च वृश्चिक, मूलत्रिकोणं कुम्भ एवं कर्क प्रिय राशि है। नारायणभट्ट ने राहु का स्वगृह कन्या, उच्च मिथुन, नीच धनु, वर्ण आदि शनि जैसा, मूलत्रिकोण कर्क माना है---कन्या राहुगृहं प्रोक्तं राहूच्चं मिथुनं स्मृतम्। राहुनीचं धनुर्णादिकं शनिविदस्यच।। मूलत्रिकोणं कर्कंच।।

राहु का शत्रु मित्रत्व व स्वभाव

राहु के लिए मंगल शत्रु, शनि सम एवं शेष ग्रह मित्र हैं। पश्चिमी ज्योतिषी राहु को पुरुष ग्रह मानते हैं। मन्त्रेश्वर ने इसे स्त्रीग्रह माना है---शशितमःशुक्राःस्त्रियः। राहु १।३।५।७।९।११ इन स्थानों में पुरुष राशि में हो तो तामसी होता है। इन स्थानों में स्त्री राशि में तथा अन्य स्थानों में वह सत्वगुणी होता है।

राहुप्रधान व्यक्ति का वर्णन

यह व्यक्ति स्नेहशील होता है। काम करने के पहले बोलना पसन्द नही करता। विचारपूर्वक, परख कर कोई काम करता है। प्रपंच में आसक्त होता है, स्वार्थ पूरा कर फिर परोपकार करता है। अभिमानी, मान का इच्छुक होता है। तीव्र बुद्धि का, महत्त्वाकांक्षी तथा श्रेष्ठ इच्छाओं के पूर्ति के लिए बहुत प्रयत्न करता है। बहुत बोलना नही चाहता किन्तु लेखन में सरस, तेजस्वी तथा काव्यपूर्ण होता है। स्वभाव से सरल, स्वतन्त्र, एकमार्गी, व्यवस्थित, स्पष्ट होता है। यह दूसरे के काम में दखल नही देता तथा दूसरों द्वारा अपने काम में दखल देना पसन्द नही करता। यह न्याय को समझ कर अन्याय के विरुद्ध झगडता है।

कल्पनाशक्ति स्वैर होती है किन्तु उस का दुरुपयोग नही करता। सामाजिक व राजनीतिक सुधार की कोशिश करता है। इसी से बरताव तथा बोलचाल में स्थिरता रहती है। अपने उद्योग में मग्न, वादविवाद में कुशल, दूसरों पर प्रभाव डाल कर काम कराने में निपुण, दूसरों के प्रभाव में न आनेवाला, जीवन में सफल प्रखर नैतिक आचरण से युक्त, भाग्यवान, प्राचिन संस्कृति का अभिमानी, किन्तु पर धर्मों के बारे में सहिष्णु, परोपकारमें तत्पर, कुटुम्ब के बडों से नम्रता का व्यवहार करनेवाला, धैर्यवान, बुद्धिमान, पैसे के देनलेन में दक्ष व सरल होता है।

कुण्डली में राहु अशुभ योग में हो तो वह व्यक्ति बुद्धिहीन, दुष्ट, लोकसंग्रह से पराङ्मुख, बहुत स्वार्थी, दुरभिमानी, मत्सरी, अविश्वसनीय, झूठे आचरण से पूर्ण, विक्षिप्त, अव्यवहारी उद्दण्ड, निर्लज्ज, उद्देशरहित, छिद्रान्वेषी, अपने ही मत को श्रेष्ठ मानकर दूसरों को ताने देनेवाला, दूसरों का अहित करने की इच्छा करनेवाला, अति अभिमानी होता है।

राहु के अन्य ग्रहों से होनेवाले युति के शुभ-अशुभ फल के बारे में श्री. प्रधान द्वारा संपादित ज्योतिर्माला मासिक में थाना के स्व. स. ग. मुजुमदार ने इस प्रकार विवरण दिया था--राहु की गति राशिचक्र में उलटी-मीन-कुम्भ-मकर आदि तथा कुण्डली में भी उलटी-लग्न-व्यय-लाभ-दशम इस प्रकार होती है। अन्य ग्रह पश्चिम से पूर्व की ओर जाते हैं तो राशिचक्र व राहु पूर्व से पश्चिम की ओर घूमते हैं--मानों अन्य ग्रह राहु के मुख में प्रवेश करते हैं। कल्पना कीजिए कि चन्द्र सिंह के १० वें अंश में है और राहु १५ वें अंश में हैं--इस स्थिति में चन्द्र राहु के मुख में प्रवेश करता है। यह योग शुभ है। राहु १५ वें अंश में

और चन्द्र २० वें अंश में हो तो चन्द्र राहु के पृष्ठभाग पर है——यह मध्यम शुभ योग है। राहु १५ वें अंश में और चन्द्र २७ वें अंश में हो तो चन्द्र राहु के पुच्छभाग पर है——यह अशुभ योग है।

राहु की दृष्टि

पराशर—सुतमदननवान्ते पूर्णदृष्टिं तमस्य युगलदशमगेहे चार्धदृष्टिं वदन्ति। सहजरिपुविपक्षान् पाददृष्टिं मुनीन्द्रा निजभुवनमुपेतो लोचनान्धः प्रदिष्टः॥ राहु की दृष्टि ५-७-९-१२ इन स्थानों पर पूर्ण होती है, २-१० पर आधी होती है तथा ३-६ पर पाव दृष्टि होती है। यह स्वगृह में हो तो दृष्टि नही होती——अन्ध होती है। यह दृष्टि अन्य ग्रहों के समान देखना चाहिए या राहु की गति के अनुसार उलटे स्थानक्रम से देखना चाहिए इस का स्पष्टीकरण नही मिलता। हमारे विचार से राहु की दृष्टि सिर्फ सप्तम स्थान पर मानना चाहिए।

केतु के फल

कुण्डली में केतु हमेशा राहु से सप्तम स्थान में होता है। इन के अलग अलग फल देखें तो परस्पर विरुद्ध फल आते हैं। अतः हमारे विचार से केतु के स्वतन्त्र फल नही होते। केतु के फल राहु के ही फलानुसार समझना चाहिए।

प्रकरण ६

राहु के द्वादश भाव फल

लग्नस्थान में राहु के फल

वैद्यनाथ——क्रूरो दयाधर्मविहीनशीलो राहौ विलग्नोपगते तु रोगी। यह क्रूर, निर्दय, अधार्मिक, शीलहीन व रोगी होता है। रविक्षेत्रोदये राहौ राजभोगाय संपदि। स्थिरार्थं पुत्रवान्

कुरुते मंदक्षेत्रोदये शिखी ।। लग्न में सिंह राशि में राहु हो तं
राजवैभव मिलता है। मकर या कुंभ में लग्न में केतु हो तं
स्थिर संपत्ति तथा पुत्रसुख मिलता है।

नारायण—अजवृषकर्किणि लग्ने रक्षति राहुः समस्तपीडाभ्य
पृथ्वीपतिः प्रसन्नः शतापराधं यथा पुरुषम् ।। राजा की कृपा हं
तो सैंकडो अपराध करनेवाले पुरुष की भी रक्षा होती है उस
प्रकार लग्न में मेष, वृषभ या कर्क में राहु समस्त पीडा दू
करता है।

गर्ग—सर्वांगरोगी विकलः कुमूर्तिः कुवेषधारी कुनखं
कुकर्मा । अधार्मिकः साहसकर्मदक्षो रक्तेक्षणश्चंद्ररिपौ तनुस्थे।
यह रोगी, विकल, कुरूप, दुराचारी, साहसी, लाल आंखोंवाल
तथा अधार्मिक होता है। इस के नख तथा वेष अच्छे नही होते
राहौ लग्नगते जातः संचयं कस्य कुत्रचित् । सिंहकर्किणि मेषस
स्वर्णलाभाय मंगलः ।। लग्नस्थ राहु किसी तरह कहीं धनला
कराता है। सिंह, कर्क या मेष में हो तो धनलाभ के लिए य
शुभ होता है। यस्य लग्नोपगः केतुस्तस्य भार्या विनश्यति
बाहुरोगस्तथा व्याधिर्मिथ्यावादी च जायते ।। लग्न में केतु हो तं
पत्नी की मृत्यु होती है। बाहु का रोग होता है तथा यह व्यक्ति
झूठ बोलनेवाला होता है।

यस्य लग्ने स्थितस्तस्यान्दोलिता प्रकृतिर्भवेत् ।। य
चंचल स्वभाव का होता है। राहुः यत्रस्थो तत्र कृष्णलांछनम्
राहु जिस स्थान में हो वहां काला चिन्ह होता है (लग्न में हं
तो चेहरे पर होगा)।

मन्त्रेश्वर— लग्नेऽहावचिरायुरर्थबलवानूर्ध्वांगरोगान्वितः

लग्न में राहु आयु, संपत्ति, तथा बल को चंचल करता है। इसे मुख के रोग होते है। लग्ने कृतघ्नमसुखं पिशुनं विवर्णं स्थानच्युतं विकलदेहमसत्समाजम् ।। लग्न में केतु हो तो वह कृतघ्न, दुखी, दुष्ट, निस्तेज, पदच्युत, शरीर में विकल तथा बुरी संगति से युक्त होता है।

बृहद्यवनजातक—लग्ने तमो दुष्टमतिस्वभावं नरं च कुर्यात् स्वजनानुवंचकम् । शीर्षव्यथां कामरप्सेन युक्तं करोति वादैर्विजयं सरोगम् ।। इस की बुद्धि दुष्ट होती है, अपने ही लोगों की वंचना करता है। सिर में रोग होता है। कामभाव तीव्र होता है। वाद में जय मिलता है। केतुर्यदा लग्नगः क्लेशकर्ता सरोगाद् विभागाद् भयं व्यग्रता च। कलत्रादिचिन्ता महोद्वेगता च शरीरेपि बाधा व्यथा मातुलस्य ।। लग्न में केतु हो तो क्लेश, रोग, व्यग्रता, उद्वेग, स्त्री की चिन्ता, भोग से भी भय, तथा मामा को कष्ट देता है। यही वर्णन ढुंढिराज ने दिया है।

आर्यग्रन्थ—रोगी सदा देवरिपौ तनुस्थे कुले च धारी बहुजल्पशीलः। रक्तेक्षणः पापरतः कुकर्मा रतः सदा साहसकर्मदक्षः।। यह रोगी, कुल का अभिमानी, बहुत बोलनेवाला, दुराचारी, लाल आंखोंवाला, साहसी, पापी होता है। तनुस्थः शिखी बान्धवक्लेशकर्ता तथा दुर्जनेभ्यो भयं व्याकुलत्वम् । कलत्रादिचिन्ता सदोद्वेगता च शरीरे व्यथा नैकदा मारुती स्यात् ।। लग्न में केतु हो तो बान्धवों को कष्ट होता है। दुर्जनों से भय, व्याकुलता, स्त्री आदि की चिन्ता, उद्वेग, रोग तथा कई बार वात से पीडा होती है।

नारायणभट्ट—स्ववाक्ये समर्थः परेषां प्रतापात् प्रभावात्

समाच्छादयेत् स्वान् परार्थान्। तमो यस्य लग्ने स भग्नारिवीर्यः॥ यह दूसरों की सहायता से कार्य सम्पन्न करता है, अपना कथन पूर्ण करता है, शत्रुओं का नाश करता है, अपने और दूसरे लोगों को प्रभावित करता है।

हरिवंश—उच्चसंस्थेपि कोणे तनौ मानवं भूपतुल्यं सद्रव्यं प्रकुर्यादहिः। शेषसंस्थो रुजाक्षीणदेहं शठं दुःखभाजं भयेनान्वितं संभवेत्॥ लग्न में उच्चस्थ राहु राजवैभव देता है। अन्य राशि में हो तो रोगी, दुष्ट, दुःखी, भयभीत होता है।

घोलप—यह राहु मेष, वृषभ व कर्क में हो तो सब दुःख दूर करता है। अन्य राशि में हो तो राजा से द्वेष, रोग, चिन्ता होती है। लग्न में केतु हो तो दुर्वर्तनी, सर्वत्र असफल, रोगी, वाहनों से कष्ट पानेवाला होता है।

गोपाल रत्नाकर—यह राहु मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह कन्या तथा मकर में हो तो राजयोग होता है। सुखी व दयालु होता है। अन्य राशि में हो तो यह पुत्रहीन होता है अथवा मृत पुत्र होते हैं।

वसिष्ठ—यह राहु दुःखदायी है।

नबाबलखनऊ—अव्वलखाने यदा राहुः खिश्मनाकश्च काहिलः। मनुजः स्वार्थकर्ता स्याद्भवेद्धेरो तु जाहिलः॥ यह सदा दुःखी, कुरूप, आलसी, स्वार्थी व मूर्ख होता है।

पाश्चात्य मत—लग्नस्थ राहु बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। यह व्यक्ति अति हीन दशा से अति उच्च दशा तक पहुंचता है। लोगों की नजरों में श्रेष्ठता मिलती है। यह शक्तिमान, पराक्रमी

अभिमानी, जलदी कीर्ति प्राप्त करनेवाला, लोगों कीं परवाह न करनेवाला होता है, शिक्षा की ओर इस का विशेष ध्यान नही होता। यह प्राचीन संस्कृति का अभिमानी होता है। नई बातों को जलदी ग्रहण नही करता। इस का बदन छरहरा तथा कद ऊंचा होता है। लग्नस्थ केतु से चेहरा हास्यास्पद होता है, कद नाटा तथा ऊवडखाबड शरीर होता है। यह भाग्यहीन होता है।

अज्ञात—मृतप्रसूतिः। मेषवृषभ, कर्कराशिस्थे दयावान् बहुभागी। अशुभेऽशुभदृष्टे मुखे लांछनम्। तनुस्थले यदा राहुः स्ववाक्यपरिपालकः। बहुदाररतः पुंसः कामाधिक्यं सुवेषवान्॥ इस की सन्तति मृत होती है। मेष, वृषभ, कर्क में यह राहु हो तो यह दयालु तथा बहुत भोगों से संपन्न होता है। यह अशुभ हो अथवा अशुभ ग्रह से दृष्ट हो तो मुख पर दाग रहता है। यह अपने वचन का पालन करनेवाला, अनेक स्त्रियों में आसक्त, अति कामी तथा सुन्दर वेष धारण करनेवाला होता है। धूने केतुः कलत्रादि न किंचित् सुखमाप्नूयात्। मार्गे चिन्ता जले भीतिः स्वगृहे लाभदायकः॥ देहे मरुल्लतीपीडा कलही वैभवी क्षयम्। पुत्रमित्रादिकं कष्टं राहौ जन्मनि लग्नगे॥ लग्न में राहु व सप्तम में केतु से स्त्री तथा पुत्र का सुख नही मिलता, मित्र नही होते, मार्ग में कष्ट, जल से भय रहता है। वातरोग से पीडा होती है। यह झगडालू, धनका क्षय करनेंवाला होता है। राहु स्वगृह में हो तो लाभ देता है।

श्री. चित्रे—लग्न में राहु अल्पायुषी करता है। मेष, वृषभ, कर्क, मिथुन तथा वृश्चिक में हो तो दीर्घ आयु मिलती है। यह व्यक्ति आलसी, अपने ही लोगों की वंचना करनेवाला, कामातुर तथा वादप्रिय होता है। यह अपनी पत्नी से असन्तुष्ट होता है।

यह सन्ततिहीन, अन्यायी होता है। यह राहु सिंह में हो तो सम्पत्ति देता है। मेष, कर्क, मिथुन, कन्या या मकर में हो तो नौकरी सफल रहती है। यह दयालु, बुद्धिमान तथा सुस्वभावी पत्नी से युक्त होता है। कन्या, मिथुन व कुम्भ लग्न में राहु अच्छा वैभव देता है।

हमारे विचार—साधारणतः आचार्यों ने इस स्थान में राहु के फल अशुभ बताये हैं। ये फल सिंह से भिन्न पुरुषराशियों के हैं। (राहु के फलवर्णन में जहां पुरुष राशि कहा है वहां सिंह को छोडकर अन्य राशि समझना चाहिए तथा स्त्रीराशि कहा है वहां वृश्चिक का अपवाद करना चाहिए) लग्नमें राहु का साधारण फल—इस व्यक्ति की शिक्षा द्वितीय श्रेणी में चलती है। मजाक में यह अपमान भी सह लेता है किन्तु वह बात मन में रख कर समय पर बदला लेनेकी पूरी कोशिश करता है। इस के बोलने, और बरताव में मेल नही होता। खुद के दोष न देख कर दूसरों के दोष देखते रहता है। हमेशा दूसरों की निन्दा करते हैं। अपनी गलतियों के लिये भी दूसरों को दोष देते हैं। आग्रही, हठी अस्थिर, कुछ व्यभिचारी होते हैं। राहु शुभ सम्बन्ध में हो तो— लोगों के कल्याण के लिये कोशिश करते हैं। शान्त, सरल, व्यवस्थित, सदाचारी, बोलने-बरताव में शान्त, मान अपमान की फिक्र न करनेवाला, हंसमुख, उच्च व्यक्तियों की मित्रता प्राप्त करनेवाला होता है। यह राहु पुरुष राशि में हो तो द्विभार्या योग होता है। स्त्री राशि में हो तो एक विवाह होता है, स्त्रीसुख कम मिलता है। मेष, सिंह, धनु में—उद्दण्ड पौरुष की वृत्ति होती है। यह दत्तकयोग होता है। यह मित्रों का कहना नही मानता—अपनी इच्छा से ही बरताव करता है।

अभिमानी होता है, मिलनसार नही होता । दैववादी, किसी बात के पीछे पडनेवाला होता है । शिक्षा अधूरी होती है । मेष में खुले दिल का, उदार होता है । सिंह में दयालु, व्यवस्थित होता है । धनु में दूसरों के व्यवहार से अलग, लोगों पर प्रभाव रखते हैं । वृषभ, कर्क, कन्या, मकर, मीन में––लोगों के कामों में दखल देते हैं । ध्येयरहित, कुल के अभिमानी होते हैं । मिथुन, तुला, कुम्भ में–छिद्रान्वेषी, लोगों का बुरा चाहनेवाले, विपत्ति में शत्रु पर प्रतिशोध लेनेवाले, गद्दार स्वभाव के, गप्पें लडानेवाले, सदा आनन्दी, बहुत बोलनेवाले, काम अधूरा छोड कर उसे भूल जानेवाले होते हैं। स्त्री राशियों में बरताव अव्यवस्थित, हावभाव के साथ बोलना, साधारण बोलने में बहुत अंगविक्षेप करना, दुष्ट स्वभाव होता है । वृश्चिक में–– मन के साफ, निष्कपटी होते हैं । इन का क्रोध क्षणिक होता है। वातरोग होते हैं । यह द्विभार्यायोग होता है । पहली पुत्रसन्तति की मृत्यु होती है ।

आयु के विषय में विचार––लग्न या दशम में राहु से १६ वें वर्ष मृत्यु होती है ऐसा एक मत है––लग्ने च दशमे राहुः जन्मकाले यदा भवेत् । षोडशाब्दे भवेन्मृत्युर्यदि शक्रोऽपि रक्षति ।। दशमो यस्य वै राहुर्जन्मलग्ने यदा भवेत् । वर्षे तु षोडशे ज्ञेयो बुधैर्मृत्युर्नरस्य च । किन्तु हमारे मत से राहु मृत्युकारक ग्रह नही है अतः इन फलों का अनुभव मिलना कठिन है । श्री. चित्रे ने सारावली के एक श्लोक का आधा भाग देखकर लग्नस्थ राहु से पांचवें वर्ष में मृत्यु होती है ऐसा कहा है । किन्तु यह पूरा श्लोक इस प्रकार है––दर्शनभागे सौम्याः क्रूराः त्वादृश्यके प्रसवकाले। राहुर्लग्नोपगतो यमक्षयं नयति पंचभिर्वर्षैः ।। अर्थात् सौम्य ग्रह

कुण्डली के दृश्य भागमें और क्रूर ग्रह अदृश्य भाग में हो त
लग्न में राहु हो तो पांचवें वर्ष मृत्यु होती है। इस विषय
,एक और मत इस प्रकार है— घटसिंहवृश्चिकोदयकृतस्थि
र्जीवितं हरति राहुः। पापैर्निरीक्ष्यमाणः सप्तमितैर्निश्चितं वर्षै
कुम्भ, सिंह या वृश्चिक लग्न में राहु पर पापग्रह की दृष्टि
तो सातवें वर्ष में मृत्यु होता है। हमारे विचार से राहु मृ
कारक नही है—इस से शारीरिक कष्ट का फल मिलता है

धन स्थान में राहु के फल

वैद्यनाथ—विरोधवान् वित्तगते विधुन्तुदे जनापराभ
शिखिनि द्वितीयगे। राहु द्वितीय स्थान में हो तो उस व्यक्ति
का बहुत विरोध होता है। केतु हो तो यह लोगों के अपरा
करता है।

गर्ग—मत्स्यमांसधनो नित्यं नखचर्मादिविक्रयी। जीवि
चौरकृत्याच्च राहौ धनगते नरः॥ यह मांसमछली से, नख औ
चमडा बेचकर तथा चोरी के कामों से धन प्राप्त करता है
द्वितीयभवने केतुर्धनहानिं प्रयच्छति। नीचसंगी च दुष्टात्म
सुखसौभाग्यवर्जितः॥ इस स्थान में केतु धनहानि करता है।
बुरी संगति में रहता है, दुष्ट, दुःखी तथा अभागा होता है।

पुंजराज—स्याद् दन्तुरो दन्तरुगर्दितो वा सिंहीसुते चे
धनभावसंस्थे। इस के दांत टेढेमेढे होते हैं अथवा दांत के रो
होते हैं।

बृहद्यवनजातक—धनगते रविचन्द्रविमर्दने मुखरतांकि
भावयुतो भवेत्। धनविनाशकरो हि दरिद्रतां स्वसुहृदां न करो
वचग्रहम्॥ यह बहुत बोलनेवाला, धन का नाश करनेवाल
दरिद्री तथा मित्रों की बात न माननेवाला होता है। धने केतु

धान्यनाशं धनं च कुटुम्बाद् विरोधो नृपाद् द्रव्यचिन्ता। मुखे रोगता सन्ततं स्यात् तथा च यदा स्वे गृहे सौम्यगेहे च सौख्यम् ।। धनस्थान में केतु से धनधान्य का नाश होता है, कुटुम्ब में झगडे होते हैं, राजा से भय होता है, मुख में रोग होते हैं। केतु स्वगृह में अथवा शुभ ग्रह की राशि में हो तो ही सुख देता है। यही वर्णन ढुंढिराज ने दिया है। आर्यग्रन्थ में राहु का फल गर्ग के अनुसार तथा केतु का फल यवनजातक के अनुसार दिया है।

मन्त्रेश्वर——छन्नोक्तिर्मुखरुग् घ्राणी नृपधनविदेषः सुखी। अस्पष्ट बोलनेवाला, मुख में रोग से युक्त, राजा से धन प्राप्त करनेवाला, सुखी होता है। इस की नाक बडी होती है। विद्यार्थहीनमधमोक्तियुतं कुदृष्टिपातः परान्ननिरतं कुरुते धनस्थः। इस स्थान में केतु से विद्या और धन का अभाव होता है। यह नीचों जैसा बोलता है, बुरी नजर से देखता है और दूसरों के अन्न पर अवलम्बित रहता है।

नारायणभट्ट——कुटुम्बे तमो नष्टभूतं कुटुम्बं मृषाभाषिता निर्भयो वित्तपालः। स्ववर्गप्रणाशो भयं शस्त्रतश्चेत् अवश्यं खलेभ्यो लभेत् पारवश्यम् ।। इस का कुटुम्ब नष्ट होता है, झूठ बोलता है, निडर, धन का रक्षण करनेवाला होता है। इस के बान्धवों का नाश होता है। शस्त्र से डरता है तथा दुष्टों के अधीन रहता है। इस लेखकने केतु का फल यवनजातक जैसा दिया है।

जागेश्वर——धने राहुणा वर्तमाने धनी स्यात् कुटुम्बस्य नाशो भवेद् दुष्टखेटैः। स्थितिर्वक्रघातस्तथा गोधनं स्याद् धनं वर्धते माहिषं शत्रुनाशः ।। यह धनवान तथा गायभैंसों का स्वामी

होता है। कुटुम्ब का नाश होता है। शत्रु नष्ट होते हैं। मता रम्-नीचविद्यानुरक्तः। यह हलके शास्त्रों में रुचि रखता है प्रयु

हरिवंश---वित्तवाताधिककान्तिः कान्ताधिको गौरवाधि युक्तो नरःस्यात्। अन्यदेशे महोद्योगः। धनवान्, वातरो कान्तिमान, सन्मानित होता है। यह विदेश में बहुत उ करता है। एक से अधिक स्त्रियां होती हैं।

घोलप---यह गुणवान किन्तु धनहीन होता है। क दूसरों का अहित करनेवाला, कुटुम्ब में झगडे लगानेवाला, प्रव होता है। इस स्थान में केतु से दुःखी, बुद्धिहीन, मन में सन्त कुटुम्ब का विरोध करनेवाला, मुखरोगी, राजा से धन की चि से युक्त होता है।

वसिष्ठ---धनभुवनगतो वित्तनाशं करोति। धन का करता है।

गोपाल रत्नाकर---शरीर पुष्ट होता है। वर्ण सांव मुख टेढामेढा, आंखें रोगयुक्त, विवाह एकसे अधिक तथा सन्तति से युक्त होता ये फल हैं। यह धनहीन होता है।

लखनऊनबाब---कुजी बाहासिदरासे मालखाने च मुषि सम्। करोति मनुजं वान्यदेशे धनसमन्वितम्। यह अपने छोडनेवाला, स्वार्थी, दुःखी, विदेश में धन प्राप्त करनेवा होता है।

पाश्चात्य मत---यह दैववाला, धनवान, व्यवहार में व्य स्थित, लोगों का विश्वासपात्र होता है। इस स्थान में केतु पुत्र की मृत्यु, भाग्य कम होना, नुकसान के कारण धन्धा ब करना, दीवालिया होना, बदनामी ये फल मिलते हैं।

अज्ञात--निर्धनः । देहव्याधिः । पुत्रशोकः । श्यामवर्णः ।
पयुते कलत्रत्रयम् ।। शुभयुते चुबुके लांछनम् । धनव्ययमनारोग्यं
न्ता बस्तादिपीडनम् । वक्त्रलोचनपीडाच धनस्थे सिंहिकासुते ।।
धनहीन, रोगी, सांवले रंग का, पुत्र की मृत्यु से दुखी होता
। राहु के साथ पापग्रह हों तो तीन विवाह होते है । शुभ ग्रह
तो ठोडी पर दाग होता है । इसे आंख के रोग होते हैं ।

श्री. छित्रे–यह राहु सिंह में हो तो निर्जन प्रदेश में निवास
कर धन मिलता है । यह मनुष्यों के जीवितहानि का कारण
नता है । उच्चगो नीचगेहस्थो ग्रहो नैवात्र दोषकृत् ।। धनस्थान
उच्च अथवा नीच ग्रह का कोई बुरा फल नही मिलता । इस
नयम से यह राहु मिथुन, कन्या या कुम्भ में हो तो शुभ फल
ता है । यह स्वकार्य छोडनेवाला, दुःखी, धनहीन, पुष्ट शरीर
ा, कठोर, अविवेकी होता है । विदेश में धन प्राप्त करता है ।
ोरी में आसक्त, हिंसक, मद्यपी, झगडालू, मुखरोगी, बान्धव-
नाशक हो सकता है । इस के दो स्त्रियां होती हैं ।

हमारे विचार–इस स्थान में नारायणभट्ट, जागेश्वर, तथा
पाश्चात्य लेखकोंने धन के विषय में शुभ फल बताये हैं, अन्य
आचार्य अशुभ फल बतलाते हैं । शुभ फल स्त्रीराशियों के तथा
अशुभ फल पुरुषराशियों के हैं । इस स्थान का कुछ फलादेश
जैसे चोरी करना, मांसमछली बेचना आदि–उच्च वर्ग के लोगों
के विषय में संभव प्रतीत नही होता ।

हमारा अनुभव–इस स्थान में राहु के साधारण फल शनि
जैसे होते हैं । पूर्वार्जित सम्पत्ति थोडी मिलती है--उसे बढा कर
सुखपूर्वक उपभोग करते हैं । इन्हें खाने के पदार्थों की विशेष

रुचि होती है। बडे व्यवसाय करने की बहुत इच्छा से कभी स्थावर सम्पत्ति गिरवी रख कर भी पूंजी इकठ्टी करते हैं बार दिवालिया होते हैं। किन्तु फिर मेहनत से बडे व्य में ही सफल हो कर बाजार में साख जमाते है। यह न तो होता है, न खर्चीला--आय के अनुसार व्यवस्थित खर्च है। इन्हें पैसे की फिक्र नही होती--कीर्ति की इच्छा कर ये लोगों के प्रभाव में नही आते। ये देखने में अच्छे, प्रकृति के होते हैं। आवाज स्त्रियों जैसा कोमल होता है। सब वर्णन स्त्रीराशि में शुभ योग में राहु हो तो ठीक सम चाहिए। अन्य राशियों में राहु अशुभ योग में न हो तो- पीने की कमी नही होती। ये लोगों के कामों में दखल नही इन्हें मित्र कम होते हैं--अपने ही घर में मग्न रहते हैं दूसरों को तकलीफ नही देते लेकिन इन्हें कोई कष्ट दे तो भी नही करते। इस स्थान में राहु पुरुष राशि में अशुभ में हो तो--पूर्वार्जित सम्पत्ति नही होती, हुई तो विवाद होती है अथवा अपने ही हाथ से नष्ट होती है। इन की खु कमाई सम्पत्ति भी टिकती नही है। इन्हें अचानक अन्या मिली हुई सम्पत्ति कायम रहती है। उस के दुष्परिणाम उ पुत्र पौत्रों को भोगने पडते हैं। यह दत्तकयोग है। पित मृत्यु के बाद भाग्योदय होता है। मां-बाप का नाम बढाते तेजस्वी, पराक्रमी होते हैं। मां बाप के जीवनकाल में ये सुख नही दे सकते, मां बाप भी इन का मूल्य नही समझ (दत्तक योग में १।३।५।७।१०।११।१२ स्थानों में शनि भी जाता है। इस से शनि के शुभ फल देने की शक्ति का वि हो सकता है।) यह द्विभार्यायोग होता है। हाथ में पैसा

ती है। कमाया हुआ सब खर्च हो जाता है। इन के मामाको
तति कम होती है। धन प्राप्ति के ऐन मौके पर विघ्न आते
। पैसे के बारे में फिक्र नही होती। लोगों के धन के अव्यव-
थत उपयोग से अपवाद फैलते हैं। २५ वें वर्ष में हानि
ती है। २६ वें वर्ष से भाग्योदय शुरू होता है। जीविका शुरू
ने के बाद विवाह होता है। ३० वें वर्ष में लाभ होता है।
न के कुटुम्ब में कोई न कोई बीमार बना रहता है। वृद्ध वय
आंख के रोग होते हैं।

तीसरे स्थान के फल

वैद्यनाथ— राहौ विक्रमगेऽतिवार्यधनिकः केतौ गुणी
वित्तवान्। यह पराक्रमी, धनवान होता है। केतु हो तो गुणवान,
नी होता है।

गर्ग—भ्रातृगो हन्ति वा व्यंगमथवा भ्रातरं तमः। लक्षेश्वरं
कष्टहीनं चिरं च तनुते धनम्। इस के भाई की मृत्यु होती है
अथवा उन के शरीर में व्यंग रहता है। यह लक्षाधीश, सुखी
और चिरकाल तक धन पानेवाला होता है,

मन्त्रेश्वर—मानी भ्रातृविरोधको दृढमतिः शौर्ये चिरायु-
र्धनी। यह अभिमानी, धनवान, दृढ विचार का, दीर्घायु तथा
भाइयों का विरोध करनेवाला होता है। आयुर्बलं धनयशः
प्रमदान्नसौख्यं केतौ तृतीयभवने सहजप्रणाशम्। इस स्थान में
केतु से आयु, बल, धन, कीर्ति, स्त्री तथा खानपान का सुख
मिलता है किन्तु भाइयोंका नाश होता है।

बृहद्यवनजातक—न सिंहो न नागो भुजाविक्रमेण प्रतापीह

सिंहीसुते तत्समत्वम् । तृतीये जगत्सोदरत्वं समेति प्रा
भाग्यं कुतो यत्र केतुः ।। यह हाथी या सिंह से अधिक प
होता है तथा विश्व को ही बन्धु समझता है । शिखी
शत्रुनाशं च वादं धनस्याभिलाभं भयं मित्रतोऽपि । करोतीह
सदा बाहुपीडां भयोद्वेगतां मानवोद्वेगतां च ।। इस स्थान
शत्रु का नाश करता है । इसे धनलाभ होता है किन्तु मि
हानि का डर होता है, विवाद होते हैं, बाहुओं में कष्ट हं
तथा समाज से उद्वेग और भय होता है ।

आर्यग्रन्थ—भ्रातुर्विनाशं प्रददाति राहुस्तृतीयगेहे म
देही । सौख्यं धनं पुत्रकलत्रमित्रं ददाति शृंगी गजवाजिभृत्य
यह राहु भाइयों का नाश करता है । धन, पुत्र, स्त्री, मित्र,
घोडे, नौकर आदि का सुख देता है । शिखी विक्रमे श
विवादं धनं भोगमैश्वर्यतेजोऽधिकं च । सुहृद्वर्गनाशं सदा
पीडां भयोद्वेगचिन्तां कुले तां विधत्ते ।। इस स्थान में केतु
का नाश कर के धन, भोग, ऐश्वर्य, तेज देता है । इसे कु
चिन्ता, उद्वेग, बाहु में पीडा, मित्रों की हानि तथा विवाद से
होता है ।

ढुंढिराज—दुश्चिक्येऽरिभवं भयं परिहरन् लोके य
नरः श्रेयोवादिभवं तदा हि लभते सौख्यं विलासादिकं । भ्रा
निधनं पशोश्च मरणं दारिद्रभावैर्युतं नित्यं सौख्यगणैः
क्रमयुतं कुर्याच्च राहुः सदा । यह शत्रु का भय नष्ट कर
देता है । वाद में जय, विलास के सुख तथा पराक्रम से
होता है । इसके भाइयों की तथा पशुधन की मृत्यु होती
इस लेखक ने केतु के फल आर्यग्रन्थ जैसे दिये हैं ।

नारायणभट्ट---प्रयत्नेऽपि भाग्यं कुतोऽयत्नहेतुः । इसे बिना प्रयास के भाग्योदय होता है । शेष फल यवनजातक के दिये हैं । केतु के फल आर्यग्रन्थ जैसे हैं ।

वसिष्ठ---दुश्चिक्ये भूपपूज्यः । यह राजा से सन्मानित होता है ।

जागेश्वर--तमो विक्रमे विक्रमान्नागयूथैर्भजेत् मल्लविद्यां तु किं मानुषैर्वा । तथा तेजसा तेजसां वि विनाशं करोति स्वयं पुण्यमार्गे वियाति ।। यदा केतुरास्ते कुहस्तोऽत्र रोगी भवेच्छत्रुसीमन्तिनीनां च भोक्ता । भवेन्मानसं दुःखितं बन्धुकष्टं विशिष्टं फलं विक्रमे संविधत्ते ।। यह हाथियों से भी कुश्ती लड सकता है । अपने तेज से शत्रुका तेज नष्ट करता है । शुभ मार्ग पर चलता है । इस स्थान में केतु से हाथ अच्छा नही होता, रोगी, शत्रु की स्त्रियों का उपभोग करनेवाला, मन, में दुःखी तथा भाइयों के कष्ट से युक्त होता है ।

हरिवंश---भ्रातृसौख्येन हीनो भवेत् भ्रातृगेहे शीतभानुशत्रौ । भाइयों के सुख से रहित होता है ।

घोलप---आर्यग्रन्थ जैसे फल दिये हैं ।

गोपाल रत्नाकर--- यह धनवान, लक्षाधीश, पराक्रमी होता है । इसे पुत्र, भाइयों का सुख कम मिलता है । कान में रोग होते हैं ।

लखनऊनबाब---पाकः शाहबलः स्यात् वै नेकनामो गनी सखी । शेयुमखाने यदा रासः प्रभवेन् मनुजो धनी ।। यह पवित्र, राजाश्रय पानेवाला, कीर्तिमान, उदार, सत्ताधारी, धनवान होता है ।

पाश्चात्य मत——त्वरित बुद्धि, चपल होते हैं। इस स
में केतु से जादू टोने में विश्वास होता है तथा उस से कष्ट हो
है। संशयी वृत्ति, मानसिक रोगों से युक्त होता है। इसे व
स्वप्न आते हैं। अन्य ग्रह के योग से यह वृत्तपत्र सम्पादक
सकता है।

श्री. चित्रे—यह पवित्र स्वभाव का, राजा द्वारा सन्मा
अतएव प्रभावी, कीर्तिमान, उदार, धनवान, विलासी, सु
पुत्र-मित्र-स्त्री-वाहन के सुख से सम्पन्न होता है।
साझेदारी के व्यवहार में लाभ होता है। कान के रोग होते
शत्रु का नाश होता है। भाई तथा पशुधन का नाश होता है
ये फल तब पूर्णरूप से मिलते हैं जब राहु उच्च, स्वगृह
अथवा शत्रु की राशि में होता है। सिंह में राहु तेजस्वी हो
है।

अज्ञात—— पराक्रमी। साहसोद्यमी। भाग्यैश्वसर्यंम्पन्नः
परदेशयुतः। राजमानस्तथैश्वर्यमारोग्यं विभवागमम्। शत्रुक्ष
सुहृत्सौख्यं राहौ लग्ने तृतीयगे।। यह पराक्रमी, साहसी, उद्योगी
भाग्यवान, धनवान, राजाद्वारा सन्मानित, स्वस्थ, मित्रों से युक्त
होता है। यह विदेश में जाता है। शत्रुओं का नाश करता है।

हमारे विचार——इस स्थान में अनेक लेखकों नें शुभ फ
बतलाये हैं। ये फल स्त्रीराशिके हैं। अशुभ फल पुरुषराशि
हैं। पश्चिमी ज्योतिषियों ने ३।४।५।६।७।८ इन स्थानों में रा
के फल विशेष नही दिये हैं क्यों कि ये स्थान अनुदित गोला
के हैं। २।१।१२।११।१०।९ ये स्थान उदित गोलार्ध के हैं अ
उन में राहु के फल उन्हों ने शुभ बतलाये हैं।

हमारा अनुभव–इस स्थान में पुरुष राशि में राहु भाइयों के लिए मारक है––भाई नही होते अथवा उन का संसार ठीक नही चलता, निरुद्योगी, निपुत्रिक होते हैं। किसी भाई का अपघात से मृत्यु होता है अथवा वह लापता होता है, भाई से अदालत में झगडे चलते हैं। ये व्यक्ति अतिशय आत्मविश्वासी, घमंडी होते हैं। इन्हें मित्र विशेष नही होते। लोगों की हंसी उडाते हैं। दुष्ट, कम बोलनेवाले, ढोंगी होते हैं। ४२ वें वर्ष तक ये कष्ट में रहते हैं। प्रगति कें लिये हर तरह के बुरे काम करते हैं। निर्दय, दूसरों के बारे में बेफिक्र होते हैं। इन की शिक्षा में रुकावटें आती हैं, शिक्षा अधूरी रह सकती है। यह राहु स्त्री-राशि में हो तो––भाइयों को मारक नही होता, बहनों को मारक होता है। ३० वें वर्ष तक कष्ट सहते हैं फिर अपने ही प्रयत्न से प्रगति करते हैं। ये सीधे मार्ग से चलते हैं। रहनसहन अधिकारी जैसा होता है। बुद्धि शान्त, विचारपूर्ण, तेजस्वी होती है। मिलनसार, परोपकारी, दयालु होते हैं। शिक्षा पूरी होती है। सच बोलनेवाले, काल को देख कर चलनेवाले, कीर्तिमान, सूझबूझ से युक्त, संकट से न डरनेवाले तथा अपने उद्देश में सफल होते हैं। ये बटवारे में अदालत का सहारा नही लेते। इस स्थान में राहु का साधारण फल भाइयों के लिए अच्छा नही है। दो भाई एकसाथ प्रगति नही कर सकते। इन्हें सौतेली मां आ सकती है। २१ वें वर्ष पिता की स्थिति बिगडती है। २१ वें वर्ष जीविका का आरम्भ, २७ वें वर्ष विवाह तथा ४२ वें वर्ष विशेष लाभ होता है। पहले पुत्र को यह राहु मारक है।

चौथे स्थान के फल

वैद्यनाथ—राहौ कलत्रादिजनावरोधी केतौ सुखस्थे परापवादी। स्त्री आदि को कष्ट होता है। इस स्थान में केतु हो तो वह दूसरों की निन्दा करता है।

गर्ग–बन्धुस्थानगतो राहुर्बन्धुपीडाकरो भवेत्। गावे कर्कि मेषे च स च बन्धुप्रदो भवेत् ।। चतुर्थे भवने केतुर्मातापित्रोः कष्टकृत्। अतिचिन्ता महाकष्टं सुहृद्भिः सुखवर्जितम् ।। य राहु मेष, वृषभ, कर्क में हो तो बन्धुओं का सुख देता है। अ राशियों में बन्धुओं को कष्ट देता है। यहां केतु माता-पिता क कष्ट देता है। मित्रों का सुख नहीं मिलता। बहुत चिन्ता औ बहुत कष्ट होता है।

मन्त्रेश्वर—मूर्खो वेश्मनि दुःखकृत् ससुहृदल्पायुः कदाचि सुखी। यह मूर्ख, दुःखी, अल्पायु, मित्रों से युक्त होता है। इ सुख कदाचित ही मिलता है।

नारायणभट्ट– चतुर्थे कथं मातृनैरुज्यदेहो हृदि ज्वाल शीतलं किं वहिः स्यात्। स चेदन्यथा मेषगोकर्कगो वा बुधर्क्षेसु भूपतेर्बन्धुरेव ।। इस की माता रोगी होते है। हृदय में चिन्त रहती है। मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क या कन्या में यह राहु दे जैसा सुख और राजा का स्नेह देता है। चतुर्थे च मातुःसुखं कदाचित् सुहृद्वर्गतः पैतृकं नाशमेति। शिखी बन्धुवर्गात् सु स्वोच्चगेहे चिरं नो वसेत् स्वे गृहे व्यग्रता चेत् ।। इस स्थान केतु माता का सुख नष्ट करता है। मित्र नहीं होते। पैतृक ध नष्ट होता है। अपने घर में अधिक समय नहीं रह सकता। के उच्च में हो तो बन्धुओं का सुख मिलता है।

ढुंढिराज–सुखगते रविचन्द्रविमर्दने सुखविनाशनतां मनुजो लभेत्। स्वजनतां सुतमित्रसुखं नरो न च लभेत सदा भ्रमणं नृणाम् ॥ यह दुखी, पुत्र, मित्र तथा स्वजनों से रहित एवं सदा घूमनेवाला होता है। केतु फल नारायणभट्ट के समान दिया है।

आर्यग्रन्थ––राहौ चतुर्थे धनबन्धुहीनो ग्रामैकदेशे वसति प्रकृष्टः। नीचानुरक्तः पिशुनश्च पापी पुत्रैकभागी कृतयोषिदासाम् ॥ यह निर्धन, बन्धुरहित, नीचों की संगति में आसक्त, दुष्ट, पापी होता है। इसे एकही पुत्र होता है। यह गांव में रहता है। केतु-फल नारायणभट्ट जैसा दिया है।

बृहद्‌यवनजातक–चतुर्थे भवने चैव मित्रभ्रातृविनाशकृत्। पितुर्मातुः क्लेशकारी राहौ सति सुनिश्चितम् ॥ यह माता-पिता को कष्ट देता है। इस के मित्र-भाइयोंका नाश होता है। केतु–फल नारायणभट्ट जैसा है।

वसिष्ठ–सुहृदि न विनयो भ्रातृमित्रादिहानिः। यह उद्धत होता है। भाई या मित्र नही होते।

जागेश्वर––सुखे वाथवा सैंहिकेयोथ केतुस्तदा मातृपक्षे विषाच्छस्त्रघातात्। व्यथा वा जनन्या भवेद् वायुपीडाथवा काष्ठपाषाणघातैर्हता स्यात् ॥ इस की माता को वात रोग होता है अथवा लकडी या पत्थर के आघात से मृत्यु होती है। मामा के घर में विष या शस्त्र से मृत्यु होते हैं। चतुर्थे तु केतौ भवेन्मातृकष्टं तथा मित्रसौख्यं न पित्र्यं नराणाम्। सदा चिन्तया चिन्तितं नैव सभ्यं यदा चोच्चगो नैव वादं विदध्वम् ॥ इस स्थान में केतु से माता को कष्ट होता है। मित्रों का सुख तथा पैतृक धन नही

मिलता। हमेशा चिन्ता रहती है। सभा में अयोग्य सिद्ध होता है। यह उच्च हो तो वाद नही करना चाहिए।

घोलप–घर, धन आदि नष्ट होते हैं। मित्र अच्छे होकर भी उपयोग नही होता। कुल के दोष से शारीरिक कष्ट होता है। यह सुखहीन, प्रवास बहुत करनेवाला होता है। इसे पुत्रसुख कम मिलता है।

गोपाल रत्नाकर—–यह नौकरी करता है। इस के सौतेली मां होती है। द्विभार्यायोग होता है।

हरिवंश–बन्धुगेहे विधोर्मंदके मानवो बन्धुवर्गस्य वैरी कुकामातुरः। आलसी साहसी पूजिते निन्दिते सौख्यहीनो भवेत् सर्वदा॥ यह अपने ही लोगों का शत्रु, अति कामुक, आलसी, साहसी होता है। यह राहु अशुभ योग में हो तो कभी सुख नही मिलता।

लखनऊनबाब—– रासश्चेद् दोस्तखाने स्यात् परेशानो मुसाफिरः। नादानोऽपि च वादी च सौख्यहीनो विपक्षकः॥ यह चिन्तित, प्रवासी, नादान, झगडालू, दुःखी, शत्रुओं से युक्त होता है।

पाश्चात्य मत—–राहु चतुर्थ में और केतु दशम में हो तो उस व्यक्तिको अवैध सम्बन्ध से सन्तति होती है।

अज्ञात—–बहुभूषणसमृद्धः। जायाद्वयम्। सेवकाः। मातृक्लेशः। पापयुते निश्चयेन। शुभयुते दृष्टे वा न दोषः। चिन्तादुःखं प्रवासश्च प्रवादः स्वजनैः सह। चतुष्पदः क्षयं यान्ति राहुस्तुर्यंगतो यदि। इस के पास बहुत अलंकार होते हैं। दो

स्त्रियां होती हैं । नौकरी करता है । माता को कष्ट होता है । शुभग्रह राहु के साथ हो अथवा उनकी दृष्टि हो तो ये दूषित फल नही मिलते हैं । पाप ग्रह साथ हो तो अवश्य मिलते हैं । यह चिन्तित रहता है, बहुत घूमता है, अपने लोगों से झगडता है । इस के यहां के पशु नष्ट होते हैं ।

श्री. चित्रे--यह राहु दो विवाह तथा सौतेली मां का योग करता है । यह मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क व कन्या में हो तो उत्तम राजयोग होता है । प्रवास बहुत होता है, विविध चमत्कार देखने को मिलते हैं । साहसी होता है । यह राहु रवि के योग में हो तो कष्ट देता है । राजयोग में ३६ से ५६ वें वर्ष तक बहुत भाग्योदय होता है ।

हमारे विचार--प्राय: सभी लेखकों ने इस स्थान में अशुभ फल वतलाये हैं । मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क व कन्या में शुभ फल दिये हैं । हमारे अनुभव में मेष व मिथुन में अशुभ फल ही मिले हैं । वृषभ, कर्क व कन्या में साधारण शुभ फल मिलते हैं । द्विभार्या व द्विमाता योग गोपाल रत्नाकर व चित्रे ने वतलाया है । यह पुरुष राशि का योग है । स्त्रीराशि में यह योग क्वचित मिलता है । सावत्र माता की ही स्थिति इस की स्त्रियों की भी होती है । बृहद्यवनजातक में बन्धुनाश का फल कहा है । हमारे अनुभव में बन्धुओं का नाश तो नही मिला किन्तु बन्धुओं को परस्पर कुछ लाभ नही हुआ ऐसा देखा है । दत्तक योग से बन्धुओं से अलग होना संभव है । माता-पिता को कष्ट होना, दारिद्र्य आदि फल साधारणत: ठीक हैं । अवैध सन्तति का जो फल पश्चिमी मत में कहा है उस का अनुभव हमें नही मिला ।

हमारा अनुभव—इस स्थान में घोलप ने कुल के दोष से कष्ट होना यह जो फल कहा है उस का अनुभव हमें अच्छी तरह मिला है। अतः हम ने इस स्थान को शापस्थान माना है। इस में कुल में तीनचार पीढी पहले खून, विषप्रयोग, आत्महत्या, किसी स्त्री को घर छुडा कर तकलीफ देना आदि कुछ पापकृत्य हुआ होता है। उसके शाप स्वरूप कुल की स्थिति बिगडते जाती है। स्त्री को कष्ट देने से सातपीढी तक, अन्य पापों से चार पीढी तक कष्ट होता है। वंशपरम्परा से दारिद्रय, कोढ, रक्तपित्त, पागलपन, किसी व्यक्ति द्वारा गृहत्याग, गूंगापन, क्षयरोग, अकालमृत्यु, सन्यास लेना आदि अशुभ फल मिलते हैं। इन फलों के कारक योग इस प्रकार हैं— राहु के समीप या केन्द्र में शनि व मंगल के युति—प्रतियोग से खून होते हैं। राहु के समीप या युति में मंगल हो कर शनि-चंद्र का अशुभ योग हो तो विषप्रयोग, आत्महत्या का योग होता है। राहु के २।४।६।७।८।१२ इन स्थानों में यह योग होता है। वृषभ, सिंह, कुम्भ लग्न में यह योग संभव है। राहु १।४।६।८।१२ में हो, शनि से चन्द्र, रवि, मंगल दूषित हों तो क्षय, कोढ, रक्तपित्त से कष्ट होता है। लग्न राशि से चतुर्थ राहु रवि-चन्द्र, अथवा मंगल से दूषित हो अथवा चतुर्थेश के साथ राहु हो या केन्द्र में शनि-राहु की युति हो तो दारिद्रय योग होता है। यही योग धनस्थान में भी हो सकता है। ये सब योग पुरुषराशि में विशेष रूप से होते हैं। स्त्री राशि में सन्तति बहुत हो कर दारिद्रय अथवा सम्पत्ति व कीर्ति मिलने पर सन्ततिहीन होने का फल मिलता है। इस स्थान में राहु से चन्द्र या मंगल की युति, चतुर्थेश की युति हो (इसी प्रकार धनस्थान में राहु से धनेश की युति हो व चन्द्र से राहु

चतुर्थ हो) तो घर या खेती खरीदते समय वह घर आदि पिशाचपीडित नही है यह देख लेना चाहिए। एलन लिओ ने चतुर्थ में नेपच्यून के फलस्वरूप पिशाचपीडित घर आदि मिलने का अनुभव कहा है वही हम ने उपर्युक्त योगों में देखा है। चतुर्थ के शनि से भी इस योग की आशंका है। इस स्थान में पुरुष राशि में राहु जन्म समय से पिता को आर्थिक कष्ट, दीवाला निकलना, नौकरी छूटना, सस्पेण्ड होना, माता को व स्वयं को शारीरिक कष्ट, शिक्षा में रुकावटें, छोटे भाई न होना अथवा हो कर मृत होना, विवाह जलदी होना, दो विवाह होना, पत्नी अच्छी मिलना ये फल देता है। यह राहु विशेष उन्नति नही देता–नौकरी में दिन सुखपूर्वक कटते हैं। मिथुन, सिंह, कुम्भ में सम्पत्ति मिलती है किन्तु सन्तति नही होती, उस के लिए दूसरा विवाह करता है। शिक्षा पूरी नही होती किन्तु बुद्धिमत्ता होती है। यह पापकार्यों से धन कमाता है। शुरू में यह बात छिप जाती है किन्तु मृत्युसमय तक लोग जान जाते हैं। माता-पिता में एक का मृत्यु बचपन में होता है। इन में एक का मृत्यु अकस्मात होता है। स्त्री राशि में अत्यन्त सदा-चरण के कारण व्यवसाय में असफल होते हैं। शील के विपरीत बरताव से ही धन मिलता है। इन के व्यावहारिक बुद्धि से दूसरों का फायदा होता है किन्तु खुद का फायदा नही होता। ये अपनी बुद्धि के बारे में घमंडी होते हैं। लोगों को ये मूर्ख किन्तु इन के शिष्य विद्वान प्रतीत होते हैं। असफलता और बेइज्जती के बावजूद ये व्यवसाय से ही धनवान होने की कोशिश नही छोडते। इन्हें हमेशा अस्थिरता रहती है। संकट, दारिद्र्य, मानहानि बनी रहती है, वृद्ध वय में विशेष रूप से कष्ट होता

है। स्त्री पुत्र भी विरोधी होते हैं। साझीदारी या नौकरी में
सफल हो सकते हैं। इन्हें ज्योतिषी शुभ फल बतायें तो उस
अनुभव कभी मिल नही सकता। यह योग दत्तक लिए जाने
हो सकता है। स्त्रीराशि में राहु एक विवाह तथा तीन-चा
तक सन्तति देता है। पत्नी शीलवान, स्नेहपूर्ण, संकट में धीर
देनेवाली, योग्य सलाह देनेवाली होती है। इन लोगों को यह
बात अच्छी होती है। पत्नी की मृत्यु पति के पहले होती है
यह राहु अशुभ है किन्तु शनि या गुरु के शुभ युति में व अन्
ग्रहों के शुभ सम्बन्ध में हो तो ३६ से ५६ वें वर्ष तक अच्छ
भाग्योदय होता है।

पांचवें स्थान के फल

वैद्यनाथ—- भीरूर्दयालुरधनः सुतगे फणीशे। केतौ शठ
सलिलभीरुरतीव रोगी॥ यह डरपोक, दयालु, धनहीन होता है
केतु हो तो दुष्ट, रोगी, पानी से डरनेवाला होता है।

गर्ग–तनयं दीनमलिनं सुतर्क्षे रचयेत् तमः। यदि चन्द्रगृह
तत् स्यात् तदानीं सन्ततिर्भवेत्॥ सिंहे कुलीरसंस्थे राहुः पुत्रेऽ
पुत्रिणं कुरुते। अन्यस्मिन्नपि राशौ पुत्रविहीनो भवेन्मनुजः॥
इस का पुत्र दीन व मलिन होता है। राहु कर्क या सिंह में हो
तो पुत्रसन्तति होती है, अन्य राशियों में नही होती। पुत्रे केतौ
प्रजाहानिर्विद्याज्ञानविवर्जितः। भयत्रासी सदा दुःखी विदेशगमने
रतः॥ इस स्थान में केतु से सन्तति नही होती, विद्या ज्ञान नही
होता। डरपोक, दुखी, विदेश में जाने का इच्छुक होता है।

बृहद्यवनजातक–सुते सद्मनि स्याद् सदा सैंहिकेयः सुतार्तिः
चिरं चित्तसन्तापनीया। भवेत् कुक्षिपीडां मृतिः क्षुत्प्रबोधाद्

यदि स्यादयं स्वीयवर्गेण दृष्टः ।। पुत्र न होने से चिरकाल चिन्ता रहती है । कोख में पीडा होती है। यदि इस राहु पर अपने वर्ग की दृष्टि हो तो भूख से मृत्यु होता है। यदा पंचमे जन्मतो यस्य केतुः स्वक्रीयोदरे वातघातादिकष्टम् । स्वबुद्धिव्यथा सन्ततिः स्वल्पपुत्रः सदा धेनुलाभादियुक्तो भवेच्च ।। इस के पेट में वात-रोग होते हैं । बुद्धि दूषित होती है । थोडे पुत्र होते हैं । गाय आदि पशुओं का लाभ होता है ।

नारायणभट्ट––सुते तत्सुतोत्पत्तिकृत् सिंहिकायाः सुतो भामिनीचिन्तया चित्ततापः सति क्रोडरोगे किमाहारहेतुः प्रपंचेन किं प्रापकांदृष्टवर्ज्यम् ।। इसे पुत्र होते हैं। स्त्री की चिन्ता रहती है। भोजन के कारण पेट के रोग होते हैं। व्यवसाय में लाभ नही होता। भाग्यपर अवलम्बित रहता है। केतु के फल यवन-जातक जैसे हैं। अन्तर इतना है––इसके भाई को वातरोग या शस्त्र से कष्ट होता है, यह पराक्रमी होकर भी नौकरी करता है–तदा सोदरे घातवातादिकष्टम्। स दासो भवेद् वीर्ययुक्तो नरोऽपि।।

मन्त्रेश्वर––नासोद्यद्वचनोऽसुतः कठिनहृद् राहौ सुते कुक्षिरुक् ।। यह नाक से बोलता है । निष्ठुर व पुत्ररहित होता है । कोख में पीडा होती है। पुत्रक्षयं जठररोगपिशाचपीडां दुर्बुद्धिमात्मनि खलत्र प्रकृतिं च पापः ।। इस स्थान में केतु से पुत्र नष्ट होते हैं, पेट में रोग तथा पिशाच से पीडा होती है। यह अपने बारे में भी दुष्ट बुद्धि का प्रयोग करता है ।

ढुंढिराज––सुखगतो न हि मित्रविवर्धनं उदरशूलविलास-विपीडनम् । खलु तदा लभते मनुजो भ्रमं सुतगते रविचन्द्र-विमर्दने ।। यह सुखरहित, मित्ररहित, पेट में रोग से युक्त,

भ्रमयुक्त होता है। इस के विलास में नित्य बाधा होती
केतु का फल नारायणभट्ट जैसा है। सिर्फ बन्धुको प्रिय
इतना अधिक कहा है।

आर्यग्रन्थ--राहुः सुतस्थः शशि नानुगो हि पुत्रस्य
कुपितः सदैव। गेहान्तरे सोपि सुतैकमात्रं दत्ते प्रमाणं म
कुचैलम् ॥ यह राहु चन्द्र के आगे हो तो पुत्र का नाश
है। घर बदलने पर एक पुत्र होता है तथा वह भी गन्दा व
वस्त्र पहननेवाला होता है। केतु का फल नारायणभट्ट
है।

जागेश्वर--सुते सैंहिकेयः सुतोत्पत्तिकृत स्यात् परं
राग्निः स रोगान्न दीप्तः। परं विद्यया वैयारभावं प्रयातः प्रय
नो लभ्यते काकिणी वा ॥ यह पुत्रसहित होता है। रो
कारण भूख मन्द होती है। विद्या से शत्रुता होती है।
प्रयत्न से भी इसे धन नही मिलता।' तथा सैंहिकेयो मृता
कारी परं कन्यकानां जनुः केतुना वा। इस स्थान मे राहु से स
मृत होती है। केतु से कन्याएं होती हैं। यदा पंचमे यस्य पु
भिधानस्तदा पुत्रकष्टं स्वयं क्रोडदुःखी। परं मन्त्रशास्त्राधि
रतश्च स्वयं धर्मकल्पद्रुमे वै कुठारः ॥ इस स्थान में केतु से
का कष्ट रहता है, पेट में दुःख होता है। यह मन्त्रशास्त्र
के बारे में बहुत बोलता है किन्तु स्वयं धर्मविरुद्ध आचरण क
है।

हरिवंश--पुत्रभावगते सिंहिकात्रपुत्रे पुत्रसौख्येन
मलिनो भवेत् नीचसंगी कुरंगी दशामानहा मन्दविमन्द
मनुष्यो भवेत् ॥ इसे पुत्रसुख नही मिलता, नीचों की संग

रहता है। गन्दा रहता है। बुद्धि अति मन्द होती है। शरीर का वर्ण अच्छा नही होता। इस की दशा में मानहानि होती है।

पुंजराज---तीक्ष्णाप्यहौ। बुद्धि तीक्ष्ण होती है। अगुः कृमिणानिलेन दृषदा काष्ठेन नीरेण वा शैलेयेन। राहौ केतौ स्यात् कुपुत्रो नरस्तु ॥ इस के सन्तति की मृत्यु कृमि, वायु, पत्थर, लकडी, पानी या पर्वतीय सम्बन्धकी किसी वस्तु से होती है। इस स्थान में राहु या केतु से अयोग्य पुत्र मिलते हैं।

गणेश दैवज्ञ---पंचस्थे केतुराहौ क्रियवृषभवने कर्कटे नो विलम्बः। पंचम में मेष, वृषभ, या कर्क में राहु या केतु हो तो शीघ्र ही सन्तति होती है।

वसिष्ठ---पुत्रभ्रंशः। पुत्र नष्ट होते हैं।

घोलप---यह धर्म, अर्थ, काम से युक्त, सर्वत्र पूज्य, प्रामाणिक, सुशोभित, पुत्रयुक्त, शत्रुरहित, होता है। इसे मित्र व सुख की प्राप्ति कम होती है। पेट में शूल व बुद्धि में भ्रम होता है। इस स्थान में केतु हो तो दया, बुद्धि, धन या वीरता नही होती। पुत्रहीन, दुर्बुद्धि, पेट में रोग से युक्त, घात पातसे पीडित, स्वकीयों से अलग रहनेवाला, बलवान व कल्याण का इच्छुक होता है।

गोपाल रत्नाकर---पुत्रप्राप्ति में विघ्न होता है। पूर्वजन्म के सर्पशाप से कष्ट होता है। (नागया विष्णु) उपासना से पुत्र प्राप्त हो सकता है। यह गांव का अधिकारी, दुष्ट, राजा के क्रोध से पीडित, वमन रोग से त्रस्त होता है।

लखऊन नबाब--- पिसरखाने स्थितो रासः पुत्रसौख्य-

विवर्जितम् । बेहोशं दर्दशिकमं नादानं कुरुते नरम् ॥ यह पुत्रसु
से रहित, रोगी, नादान, असावधान होता है।

पाश्चात्य मत---कम्पनी के व्यवसाय में सफल होता है
कोख में रोग होता है। यह अनुदित गोलार्ध का स्थान है अ
इस मत में राहु के फल का वर्णन नही किया है।

चित्रे–यह पुत्रहीन, रोगी, बुरे विचारों का, क्रोधी, विच
मन का, राजा से भययुक्त, डरपोक, दयालु, व्यभिचारी होता है
शुभयोग में हो तो राजा से सन्मानित, शत्रुहीन, पुत्रवान, विवेक
विद्वान होता है, अनेक लाभ होते हैं।

अज्ञात---पुत्रसौख्यं सुतप्राप्तिर्दुर्मतिर्वैरिविग्रहः। नि
जठरे पीडां सैंहिकेयस्तु पंचमः। इसे पुत्र होते हैं। पेट में द
रहता है। बुद्धि अशुभ होती है। शत्रु से झगडा करता है।
फल गोपाल रत्नाकर जैसे हैं।

हमारे विचार--- इस स्थान में कुछ लेखकों ने पुत्र न
होते यह फल कहा है। कुछ लेखक पुत्र रोगी होते हैं यह क
हैं। इन में अशुभ फल पुरुष राशि के तथा शुभ फल स्त्रीराशि
हैं। प्रयत्न से भी कुछ धन प्राप्त नही होना यह जागेश्वर
वर्णन अनुभवसिद्ध है।

हमारा अनुभव--- इस स्थान में पुरुष राशि में राहु
अभिमानी, बुद्धिमान, कीर्तिमान होते हैं। आर्थिक या शारीरि
कष्ट से शिक्षा में रुकावटें आती हैं। शिक्षा गलत प्रकार
मिलती है---वकील होने की योग्यता हो तो डाक्टरी पढते
डाक्टर होने की योग्यता हो तो इंजीनियरी पढते हैं। इस

व्यवसाय में सफलता नही मिलती। बुद्धिमत्ता, कल्पनाशक्ति, संशोधक वृत्ति व्यर्थं होती है। यह राहु स्त्रीपुत्रों के सुख को नष्ट करता है। स्त्री को ऋतु सम्बन्धी रोग होते हैं। अथवा स्वयं पुत्रोत्पत्ति में अक्षम होते हैं। सन्तति के लिये दूसरा विवाह होता है। यह सुधारवादी, मन का दयालु, कोमल होता है। राहु अधिक अशुभ योग में हो तो विवाह न होना, अवैध स्त्री सम्बन्ध, विपरीत रति के फल मिलते हैं। बुद्धि, ज्ञान, उद्योग का उपयोग न होनें से निराशावादी होते हैं। ये सरल बरताव करते हैं। चमत्कारिक प्रतीत होते हैं। किन्तु लोगों को स्त्री के बारे में सन्देह होता है। खुद को सर्वज्ञ समझते हैं। सांसारिक बातों में इन्हें योग्य अयोग्य की समझ नही होती तथा दूसरों की सलाह नही मानते अतः नुकसान सहना पडता है। इन्हें स्त्रीपुत्रसुख नही मिलता—लेखन, संशोधन में मग्न होना पडता है, ग्रन्थ ही इनकी सन्तति समझनी चाहिए। इन के उत्तम संशोधन, लेखन अथवा कविता का मूल्य इन की मृत्यु के बाद ही लोग समझ पाते हैं। जीवनकाल में इन का उपहास ही होता है। यह राहु स्त्रीराशि में हो तो स्वभाव शान्त विचारी, समाधानी, विरक्त होता है। शिक्षा पूरी होती है किन्तु जीविका में शिक्षा का उपयोग नही होता। इन के लेखन, कविता, संशोधन की ख्याति फैलती है। इन की यह कीर्ति तात्कालिक होती है—थोडे ही समय में लोग भूल जाते हैं। इन-के दो विवाह होते हैं। पुत्र होते हैं, वे पिता के नाम को कलंकित करते हैं। इन के जीवनकाल में ठीक तरह समय बीतता है। पंचम के राहु या केतु से पहली सन्तति बहुधा कन्या होती है। इन लोगों को सन्तति का कष्ट हो तो बहुधा सर्प सम्बन्धी स्वप्न

आते हैं। यह पूर्वजन्म के सर्पसम्बन्धी शाप का परिणाम हो है।

पंचमस्थ राहु का एक उदाहरण——विख्यात मराठी क गोविन्द–जन्म शक १७५५ माघ व. ७ सोमवार ता. ९-१-१८ सूर्योदय के पहले, स्थानिक समय ८-२६ स्थान नासिक।
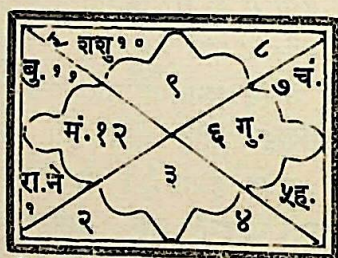
धनु लग्न के व्यक्ति जन्मजात प्रतिभा से सम्पन्न क उपन्यासकार, नाटककार, वकील, ज्योतिषी, योगी आदि हैं हैं। धनस्थान में शुक्र तथा साथ में रवि, शनि हैं अतः वा और लेखन में सफलता, कविता में अर्थवाही शब्दरचना हुई पंचम में मेष का राहु व नेपच्यून तथा इन के सन्मुख लाभ चन्द्र इस योग से कल्पनाविलास श्रेष्ठ हुआ। नेपच्यून पर च की दृष्टि के वारे में एलन लिओ लिखते हैं——चन्द्र की दृष्टि नेपच्यून जैसे सुदूरवर्ती ग्रह के किरण प्रभावी होते हैं, इस भावनाओं व कल्पनाओं को शब्दों मे उतारने की क्षमता, सहा भूति अधिक होना, स्नेहशील कलात्मक स्वभाव तथा प्रतिभायु कवित्व की प्राप्ति होती है। हमारे मत से राहु पर चन्द्र दृष्टि के भी ये ही फल हैं। किन्तु इस पंचमस्थ राहु ने ही क गोविन्द को सांसारिक सुख से वंचित किया। कीर्ति बहुत कि धन शून्य मिला।

छठवें स्थान के फल

वैद्यनाथ——राहौ रिपुस्थानगते जितारिश्चिरायुरत्यन्तसुखी कुलीनः। बन्धुप्रियोदारगुणप्रसिद्धः विद्यायशस्वी रिपुगे च केतौ ॥ यह शत्रु को जीतनेवाला, दीर्घायु, बहुत सुखी, कुलीन होता है। इस स्थान में केतु से वन्धु को प्रिय, उदार, गुणवान, प्रसिद्ध तथा विद्या के कारण यशस्वी होता है।

गर्ग——शूरः सुभगः प्राज्ञो नृपतुल्यो जायते मनुजः। रिपुभवनस्थो राहुर्जन्मनि मान्योऽतिविख्यातः ॥ यह शूर, सुन्दर, बुद्धिमान, राजा जैसा, सन्मानित, विख्यात होता है। राहुः शत्रुगृहे कुर्याच्छत्रुं संग्राममूर्धनि। हान्ति सर्वाण्यरिष्टानि सर्वग्रहनिरीक्षितः ॥ यह राहु युद्ध में शत्रु का घात करता है। यदि अन्य सब ग्रहों की दृष्टि हो तो सब अरिष्ट दूर करता है। वलिष्ठे च तथा राहौ शनौ केतौ तथैव च। महिषाणां धनं तस्य बहुलं जायते गृहे ॥ सैंहिकेयः शनिश्चैव मातुले भवने स्थितौ। प्रजाहीनो मातुलः स्यात् कन्यापत्योऽथवा तदा ॥ तस्य वंशोद्भवः कोपि गतो देशान्तरं मृतः। मातष्वसा मृतापत्या रण्डा देशान्तरं गता ॥ दानवः अधरदन्तरुजाय शिखी रिपौ ॥ इस स्थान में राहु, शनि या केतु वलवान हो तो घर में बहुत भैंसें होती हैं। पष्ठ में राहु व शनि हों तो मामा को सन्तति नही होती अथवा सिर्फ कन्याएं होती हैं। मामा के वंश का कोई व्यक्ति विदेश में मरता है। मौसी की सन्तति की मृत्यु होती है, वह विदेश में जाती है, विधवा होती है। इस स्थान में केतु दांत व होठ के रोग उत्पन्न करता है।

गणेश दैवज्ञ——दन्ते दन्तच्छदे वा कुमुदपतिरिपुः संस्थितः पष्ठभावे केतुर्वा। दांत या होठ के रोग होते हैं।

आर्यग्रन्थ--षष्ठे स्थितः शत्रुविनाशकारी ददाति । धनवित्तभोगान् । स्वर्भानुरुच्चैरखिलाननर्थान् हन्त्यन्ययोषिद्ग करोति ।। यह शत्रु का नाश करता है । पुत्र, धन देता है ।। संकट नष्ट होते हैं । यह परस्त्री से सम्बन्ध रखता है । पृष्ठभागे गते षष्ठभावे भवेन्मातुलान्मानभंगो रिपूणाम् । विना श्चतुष्पात्सुखं तुच्छचित्तं शरीरे सहानामयं व्याधिनाशः ।। स्थान में केतु मामा द्वारा शत्रु का मानभंग करता है । चौ प्राणी अच्छे मिलते हैं । नीरोग होता है । विचार तुच्छ होते

ढुंढिराज--शत्रुक्षयं द्रव्यसमागमं च पशुप्रपीडां कटिपी च । समागमं म्लेच्छजनैर्महाबलं प्राप्नोति जन्तुर्यदि षष्ठगस्तम इस के शत्रु नष्ट होते हैं, धन मिलता है, पशुओं को कष्ट हो है, कमर में रोग होते हैं, विदेशियों से सम्बन्ध आता है । का फल आर्यग्रन्थ जैसा है, सिर्फ धनलाभ यह अधिक फल क है--द्रव्यलाभो नितान्तम् ।।

मन्त्रेश्वर--स्यात्क्रूरग्रहपीडितः स गुदरुक् श्रीमांश्चिरा क्षते ।। यह क्रूर ग्रह से पीडित हो तो गुदरोगी, श्रीमान व दीर्घा होता है । औदार्यमुत्तमगुणं दृढतां प्रसिद्धि षष्ठे प्रभुत्वमरिम नमिष्टसिद्धिम् ।। इस स्थान में केतु से उदारता, उत्तमगु दृढता, कीर्ति, प्रभुता, शत्रु का नाश व इष्ट की सिद्धि प्रा होती है ।

बृहद्यवनजातक--बलाद् बुद्धिहानिर्धनं तद्वशे च स्थि वैरभावेऽपि येषां तनूनाम् । रिपूनामरण्यं दहेदेकराहुः स्थि मातुलं मानसं नो पितृभ्यः ।। यह बलहीन, बुद्धिहीन, शत्रुरहि धनवान होता है । इस के पिता व मामा का चित्त चंचल हो

है। केतु का फल आर्यग्रन्थ जैसा है, सिर्फ आंख में रोग होना व भाइयों का नाश होना ये फल अधिक कहे हैं—लोचने रोगयुक्तः भ्रातृनाशकरः ।

नारायणभट्ट—बलं बुद्धिवीर्यं धनं तद्वशेन स्थितो वैरिभावेपि येषां जनानाम् । रिपूनामरण्यं दहेदेव राहुः स्थिरं मानसं तत्तुला नो पृथिव्याम् ।। यह बल, बुद्धि, वीरता, धन से सम्पन्न, शत्रु का नाश करनेवाला, स्थिरचित्त और अनुपम होता है ।

पुंजराज—स्वर्भानौ वा सूर्यजे शत्रुसंस्थे तत्कटयां स्याच्छ्यामलं लांछनं च । शनिस्तमो वाऽरिगृहस्थितश्चेत् स्यादप्रजत्वं खलु मातुलस्य। काष्ठाश्मघातेन चतुष्पदा वा तरुप्रपातेन जलेनमृत्युः ।। षष्ठ में शनि अथवा राहु हो तो कमर में काला दाग होता है। मामा को सन्तति नही होती । लकडी, पत्थर के आघात से, चौपाये पशु द्वारा, पेड पर से गिरने से अथवा पानी में डूबकर मृत्यु होती है ।

वसिष्ठ—रिपुभवनगतो शत्रुसन्तापहानिम् । शत्रु का कष्ट दूर करता है ।

जागेश्वर—यदा सैंहिकेयोऽरिगेहे नराणाम् तदा मातुलानां तथा पितृभ्रातुः । सुखं किं धनं माहिषं तस्य गेहे तथा वीर्यवान् वीर्यशाली नरःस्यात् ।। यदा केतवः शत्रुगेहे नराणां तदा शत्रवः संप्रयान्ति विदूरम् । परं मातुलास्तूलवद्भोगताः स्युः पशूनां सुखं संवदेत् साधुभावैः ।। इसे मामा, चाचा का सुख नाही मिलता । यह भैंस आदि से समृद्ध तथा पराक्रमी होता है । इस स्थान में केतु हो तो शत्रु दूर जाते हैं, मामा को सुख कम मिलता है, पशुधन विपुल होता है ।

हरिवंश--नृप्रसूतौ तनोत्युग्रतामन्वये वाहनं भूषणं भा मर्थाधिकं। सौख्यमारोगतां शत्रुहानिं तथा शत्रुगेहं, गतो मि शत्रुग्रहः ।। यह उग्र कुल में उत्पन्न, वाहन, अलंकार, भाग्य त धन से समृद्ध, सुखी, नीरोग, शत्रुरहित होता है।

घोलप--यह बेफिक्र व कलाओं का ज्ञाता होता है। इ स्थान में केतु से राजा द्वारा सन्मानित, सत्संगति में रहनेवाल क्वचित राजपद का अधिकारी, अच्छे कामों में खर्च करनेवाल धनवान होता है। अन्य वर्णन अब तक के वर्णनों जैसा है।

गोपाल रत्नाकर--यह शत्रु का नाश करनेवाला, बहु धनवान, अतिशय सुखी होता है। इस की स्त्री नष्ट होती है।

लखनऊनबाब--म्लेच्छावनीशाद् द्रव्याप्तिर्दिलं च साह नरम्। वदखाने स्थितो रासः करोति रिपुसंक्षयम् ।। यह विदे राजा से धन प्राप्त करता है। उदार, अधिकारी तथा शत्रु नाश करनेवाला होता है।

पाश्चात्य मत--यह नीचों के व्यवसाय करते हैं। सेना जहाजों की नौकरी में खतरा रहता है।

अज्ञात--धारिष्टवान्। अतिसुखी। इन्दुयुते राजस्त्रीभोगी निर्धनः। चोरः। शुभयुते धनसौख्यम्। नृपप्रसादमारोग्यं धनला रिपुक्षयः। कलत्रपुत्रजं सौख्यं लग्ने षष्ठे विधुन्तुदे ।। यह धैर्यवा बहुतसुखी होता है। इस राहु के साथ चन्द्र हो तो राजस्त्री सम्बन्ध होता है। शुभग्रह साथ हो तो धन मिलता है। राज की कृपा, नीरोगता, धन, स्त्रीपुत्रों का सुख तथा शत्रुओं का ना ये इस राहु के फल हैं।

चित्रे–राहुरुदरभागे व्रणम् । पेट में व्रण होता है । यह धनवान, स्थिरचित्त, बुद्धिमान, होता है । म्लेच्छों के साथ रहता है । शत्रु नष्ट होते हैं । इस की कमर में कष्ट होता है । यह मातापिता का विरोधी होता है । पुत्र नष्ट होते हैं । पशुओं को कष्ट होता है। यह राहु उच्च या स्वगृह में हो तो धन नष्ट होता है । यह उदारहृदय होता है । व्यभिचारी, दीर्घायु, सुखी होता है । इस स्त्री नष्ट होती है ।

हमारे अनुभव–इस स्थान में राहु के जो शुभ फल शास्त्रकारों ने बताये हैं वे स्त्रीराशिके एवं अशुभ फल पुरुषराशिके हैं । पुरुषराशि में यह राहु हो तो क्रिकेट, पोलो, हाकी, कबड्डी, कुश्ती आदि खेलों में अपघात से कष्ट होता है । बचपन में नजर लगना, पिशाचपीडा, नख का विष फैलना, तालु सूखना, मस्तिष्क के रोग आदि से कष्ट होता है । क्वचित मिरगी, कोढ, रक्तपित्त का उपद्रव होता है । लग्नस्थ राहु मंगल से दूषित होने पर भी यही फल मिलते हैं । पेट में रोग अथवा हाथ-पांव के सन्धिवात से असमय में पेन्शन लेना पडता है। स्त्री राशि में यह राहु हो तो खेलो में विजय मिलता है । अच्छा पहलवान बन सकता है । शरीर नीरोग व चपल होता है । स्त्री अच्छी मिलती है किन्तु पिशाचपीडित हो कर उसकी मृत्यु होती हैं । नौकरी में प्रगति मुश्किल से होती है किन्तु पेन्शन में आराम रहता है। यह राहु घर में पिशाचबाधा निर्माण करता है। शुभ योग में हो तो २३ वें वर्ष से जीविका शुरू होती है। ७ वें व १० वें वर्ष बडे संकट आते हैं। ३० वें वर्ष से भाग्योदय होता है ।

सातवें स्थान के फल

वैद्यनाथ--गर्वी जारशिखामणिः फणिपतौ कामस्थि
रोगवान् । अनंगभावोपगते तु केतौ कुदारको वा विकलत्रभोगः
निद्री विशीलः परिदीनवाक्यः सदाटनो मूर्खजनाग्रगण्यः ।। य
गर्विष्ठ, बहुत व्यभिचारी, रोगी होता है। इस स्थान में के
हो तो स्त्रीसुख नही मिलता अथवा स्त्री बुरी मिलती है। य
शीलहीन, बहुत नींद लेनेवाला, दीन बोलनेवाला, हमेशा प्रवा
तथा बहुत मूर्ख होता है।

आर्यग्रंथ--जायास्थराहुर्धनहानिजायां ददाति नार्यो वि
धांश्च भोगान् । पापानुरक्तां कुटिलां कुशीलां ददाति शेषैर्यु
भिर्युतश्च ।। यह धनहीन होता है। स्त्री तथा विविध भोग मिल
हैं। यह पापग्रह के साथ हो तो स्त्री पाप में आसक्त, कुटि
शीलहीन होती है। शिखी सप्तमे भूयसी मार्गचिन्ता निवृ
स्वनाशोऽथवा वारिभीतः। भवेत् कीटगः सर्वदा लाभका
कलत्रादिपीडा व्ययो व्यग्रताच ।। इसस्थान में केतु से प्रवास
चिन्ता, धन का नाश, पानी से डर, स्त्री को कष्ट, अति ख
तथा मन में व्यग्रता ये फल मिलते हैं। सिर्फ वृश्चिक राशि
यह राहु सर्वदा लाभ करता है।

गर्ग--आर्यग्रन्थ के समान वर्णन है। सिर्फ स्त्री कामेच्छा
रहित होना यह अधिक कहा है--क्लीबा राहौ ।

ढुंढिराज--जायाविरोधं खलु वा प्रणाशं प्रचण्डरूपाम
कोपयुक्ताम् । विवादशीलामथ रोगयुक्ताम् प्राप्नोति जन्तुर्मद
तमे च ।। इस की स्त्री नष्ट होती है। अथवा स्त्री विरोधी

गुस्सैल, उग्र स्वभाव की, झगडालू, रोगी होती है। केतु का फल आर्यग्रन्थ के समान बताया है।

बृहद्यवनजातक--विनाशं चरेत् सप्तमे सैंहिकेयः कलत्रादिनाशं करोत्येव नित्यम्। कटाहो यथा लोहजो वन्हितप्तस्तथा सोऽतिवादान्न शान्ति प्रयाति ॥ यह राहु स्त्री आदि नष्ट करता है। तपी हुई लोहे की कडाही जैसा उग्र स्वभाव होता है अतः वादविवाद में यह कभी शान्त नही रह सकता। शिखी सप्तमे चाध्वनि क्लेशकारी कलत्रादिवर्गे सदा व्यग्रता च। निवृत्तिश्च सौख्यस्य वै चौरभीतिर्यदा कीटगः सर्वदा लाभकारी ॥ इस स्थान में केतु हो तो प्रवास में कष्ट, स्त्री आदि की चिन्ता, सुख न होना, चोरीका डर ये फल होते हैं। वृश्चिक राशि में यह लाभदायी होता है।

नारायण--काम्ये कलत्रे रिपुलग्नछिद्रे केन्द्रत्रिकोणे व्ययगे च राहुः। मन्त्री च शूरो बलवान् प्रतापी गजाश्वनाथो बहुपुत्रयुक्तः ॥ १।६।७।८।११ इन स्थानों में केन्द्र में व त्रिकोण में राहु हो तो वह पुरुष शूर, बलवान, प्रतापी, अधिकारी, हाथी घोडे आदि सम्पत्ति का स्वामी व बहुत पुत्रों से युक्त होता है। (इस श्लोक में काम्य शब्द का अर्थ श्री. नवाथे ने नही दिया है। काम्य का अर्थ हम लाभस्थान समझते हैं क्यों कि जिस उद्देश से यज्ञ दान, तप आदि प्रयास किये जाते हैं वही काम्य है--यत् किंचित् फलमुद्दिश्य यज्ञदानतपःक्रियाः। क्रियन्ते बहुसायासं तत्काम्यं परिकीर्तितम् ॥)

नारायणभट्ट--विनाशं लभेयुर्घुने तद्युवत्यो रुजा धातुपाकादिना चन्द्रमर्दी। कटाहम् यथा लोठयेत् जातवेदा वियोगा-

पवादाः शमं न प्रयान्ति ।। इस की स्त्री का मृत्यु होता धातुरोग होते हैं, प्रिय व्यक्तियों का वियोग होता है तथा लो निन्दा करते हैं। केतु का फल ढुंढिराज जैसा कहा है ।

मन्त्रेश्वर––स्त्रीसंगादधनो भदेऽथ विधुरोऽवीर्यः स्वतन्त्रो ल्पधीः । द्यूनेऽवमानमसतीरतिमान्त्ररोगं पापः स्वदारवियु मदधातुहानिम् ।। यह स्त्रीसंग के कारण निर्धन होता है । वि होता है । वीर्य निर्बल होता है । स्वतन्त्र, अल्पबुद्धि होता है इस स्थान में केतु हो तो अपमान, व्यभिचारिणी स्त्री से सम्बन्ध अंतडियों में रोग, पत्नी का मृत्यु तथा धातुहानि होना ये फ होते हैं ।

चित्रे–यह राहु स्त्री का नाश करता है, अनेक विवाह हों हैं । स्त्री को प्रदर होता है । इसे मधुमेह होता है । विधवा सम्बन्ध रखता है । वन्धुओं से विरोध करता है । क्रोधी, दूस का नुकसान करनेवाला, व्यभिचारिणी से सम्बन्ध रखनेवाल गर्विष्ठ, असन्तुष्ट होता है । यह राहु उच्च या स्वगृह में अथ शुक्र की राशि में हो तो प्रवास अच्छे हो कर लाभ होता है यह राहु पापकार्यों से भाग्योदय कराता है। जुआ, सट्टा, लाटरी रेस में प्रवीण होता है । स्त्रीसुख नही मिलता । अनेक विवा होते हैं ।

जागेश्वर––सुखं नो वधूनां भवेद् देहपीडा परं शत्रव वृद्धिमन्तो भवेयुः । क्रये विक्रये वा न वार्तापि किं वा यदा सप्त स्याद् गृहे राहुखेटः ।। स्त्री सुख नही मिलता, शरीर में कष्ट रहता है, शत्रु बढते हैं । खरीद–बिक्री में लाभ नही होता भवेन्मार्गकष्टं वधूनां विशेषात् तथा देह कष्टं यदा कर्कटे नो

परं मस्तके मध्यभागे स मन्दो यदायं शिखी मत्स्यकेतौ गतः स्यात् ।। इस स्थान में केतु हो तो प्रवास में कष्ट, स्त्री को पीडा होती है। कर्क में केतु हो तो यह दोष नही होता। मस्तक व मध्यभाग में यह मन्द होता है।

हरिवंश—मानवानां प्रकुर्याद् भयं सर्वतो धर्महानिं दयाहीनतां तीक्ष्णताम्। कायकां कामिनीसौख्यहानिर्भवेत् भामिनीभावगो यामिनीशन्तुदः ।। सब ओर से भय, धर्महीन, निर्दय होना, तीक्ष्णता तथा स्त्रीसुख नष्ट होना ये फल हैं।

घोलप—दुष्टों के सहवास से यह सज्जनों को कष्ट देता है। स्त्री, पुत्र, धन, मित्र का सुख नही मिलता। स्त्री की मृत्यु होती है। इस की स्त्री अति क्रोधी, रोगी अथवा वादविवाद करनेवाली होती है।

गोपाल रत्नाकर—इस के दो विवाह होते हैं। पहली स्त्री को ऋतुसम्बन्धी रोग होते हैं तथा दूसरी को गुल्मरोग (गांठ होना) होते हैं। बुरी स्त्रीयों के संपर्क से यह रोगी होता है।

लखनऊनबाब—हिर्जंगर्दश्च वेतालो गुस्वरो बदजनो भवेत्। हप्तमखाने यदा रासः कलही मनुजस्तदा ।। पागल जैसा भटकनेवाला, क्रोधी, झगडालू, बदचलन होता है।

वसिष्ठ—जायास्थे स्त्रीविनाशः। स्त्री का नाश होता है।

पाश्चात्य मत— इस का कद बहुत नाटा होता है।

अज्ञात— दारद्वयं तन्मध्ये प्रथमस्त्रीनाशः द्वितीयकलत्रे गुल्मव्याधिः। पापयुते गण्डोत्पत्तिः। शुभयुते गण्डनिवृत्तिः नियमेन दारद्वयम्। शुभयुते एकमेव। प्रवासात् पीडनं चैव स्त्रीकष्टं पवनोत्थरुक्। कटिबस्तिश्च जानुभ्यां सैंहिकेये च सप्तमे ।।

इस के दो विवाह होते हैं, पहली स्त्री की मृत्यु होती है, दूसरी को गुल्मरोग होता है। यह राहु पापग्रह के साथ हो तो गण्डरोग होता है। शुभग्रह के साथ हो तो विवाह एक ही होता है। प्रवास में कष्ट, स्त्री को कष्ट, कमर, वस्ति, घुटनों में वातरोग ये इस राहु के फल हैं।

हमारा अनुभव—इस स्थान में राहु के फल सभी लेखकों ने अशुभ बतलाये हैं। ये मुख्यतः पुरुष राशियों के हैं। पुरुष राशि में यह राहु पूर्वजन्म के शाप के समान होता है। यह स्त्री को बहुत कष्ट देता है। घर में सतत असन्तोष बना रहता है। व्यवसाय, नौकरी में हानि हो कर धन की कमी रहती है। स्थिति हमेशा अस्थिर रहती है। पहली पत्नी का अपघात में मृत्यु होता है। दूसरी पत्नी से भी ठीक सम्बन्ध नही रहते। मिथुन, कन्या, तुला, धनु में विवाह ही न होने का अनुभव है। अन्य राशियों में विवाह तो होते हैं किन्तु मनःपूर्वक प्रेम कभी नही होता, अकारण विभक्त होते हैं। केवल शारीरिक सम्बन्ध ही इन के विवाह का उद्देश होता हैं। दूसरी कुलीन स्त्रियों को व्यभिचारमार्ग पर ले जाते हैं। विधवा स्त्रियों से सम्न्बध रख कर अवसर पर गर्भपात, बालहत्या करवाते हैं। इन्हें अपनी स्त्री से सुख नही मिलता अतः अन्य स्त्रियों पर पैसा खर्च करते हैं। व्यवसाय ठीक नही होता, नौकरी में आक्षेप आते हैं। सस्पेण्ड होना, डिग्रेड होना आदि प्रकारों से कष्ट होता है। ये दूसरों के घर रहते हैं। इन की स्त्री सुस्वभावी, शीलवान होती है। सन्तति अति अल्प होती है। यह राहु स्त्रीराशि में हो तो विवाह जल्दी होता है, स्त्री सुस्वभावी होती है व दोनों में अच्छा प्रेम रहता है। नौकरी अच्छी चलती है किन्तु ये स्वतन्त्र व्यवसाय

के लिए बहुत कोशिश करते हैं। यदि अन्य ग्रहों से शुभ सम्बन्ध हो तो व्यवसायमें यशस्वी होते हैं। दो विवाह होते हैं। यह राहु कुम्भ में हो तो विवाह एक ही होता है। सन्तति अधिक होती है। सन्मानित होते हैं। स्त्रीधन मिलता है। स्वभाव साधारणतः अच्छा होता है। इन्हें बीमा कंपनी, नगरपालिका, जिलापरिषद, रेलवे आदि की नौकरी में सफलता मिलती है क्यों कि ये विषय राहु के कारकत्व के हैं। इस स्थान में राहु के फलस्वरूप विवाह में अनियमितता प्रायः पाई जाती है। विवाह बहुत देर से होना, आन्तरजातीय विवाह होना, विधवा से विवाह, उम्र में बडी स्त्री से विवाह, अवैध स्त्रीसम्बन्ध, विवाह न होना आदि फल देखे जाते हैं। पूर्वजन्म में किसी स्त्री को कष्ट देने से ये बातें शापस्वरूप भोगनी पडती हैं। विवाह होने पर प्रेम न होना, विवाहविच्छेद होना, अधिक विवाह करने पर भी स्त्री अच्छी न मिलना ये इसी के फल हैं।

राहु से मृत्युविषयक फलों का वर्णन कुछ आचार्यों ने किया है। उदाहरणार्थ—सप्तमे नवमे राहुः शत्रुक्षेत्रो यदा भवेत् प्राप्ते च षोडशे वर्षे तस्य मृत्युर्न संशयः॥ नवमे दशमे राहुर्जन्मकाले यदा स्थितः। षोडशाद्बे भवेन्मृत्युर्यदि शक्रोऽपि रक्षति॥ सप्तम या नवम में शत्रुग्रह की राशि में राहु हो तो १६ वें वर्ष में मृत्यु होता है। नवम या दशम में राहु हो तो १६ वें वर्ष मृत्यु होता है—उसे इन्द्र भी टाल नही सकता। किन्तु सप्तम, नवम, दशम ये तीनों स्थान मृत्युकारक नही हैं तथा राहु ग्रह भी मृत्युकारक नही है अतः यह योगफल ठीक प्रतीत नही होता। अन्य स्थानों में भी राहु स्वयं उस व्यक्ति के लिए मारक नही होता—उस स्थान से सम्बन्धित व्यक्ति के लिये मारक होता है। लग्न में—माता,

पिता को, धनस्थान में घर के किसी बडे व्यक्ति को, तृतीय में भाई-बहिनों को, चतुर्थ में माता-पिता को, पंचम में पुत्र को, अष्टम में बहिन को, नवम में भाईबहिनों को, दशममें माता-पिता को, लाभ में बडे भाई या पुत्र को तथा व्यय में पत्नी या चाचा को यह राहु मारक हो सकता है।

आठवें स्थान के फल

वैद्यनाथ--राहौ क्लेशापवादी परिभवगृहगे दीर्घसूत्री च रोगी। केतौ यदा रन्ध्रगृहोपयाते जातः परद्रव्यवधूरतेच्छुः। रोगी दुराचाररतोऽतिलुब्धः सौम्येक्षितेऽतीव धनी चिरायुः॥ यह क्लेशयुक्त, निन्दित, दीर्घसूत्री, रोगी होता है। केतु हो तो दूसरे के धन तथा परस्त्री में आसक्त, रोगी, दुराचारी, अतिलोभी होता है। सौम्य ग्रह की दृष्टि हो तो दीर्घायु व धनी होता है।

गर्ग---दुष्टचौर्यापवादेन निधनं कुरुते तमः। बहुकिल्मिष-माधत्ते धत्ते कष्टात् स यातनाम्॥ दुष्ट, चोरी के अपवाद से मृत्यु होता है। बहुत पाप और कष्ट, यातना होती है।

बृहद्यवनजातक--नृपैः पण्डितैर्वन्दितोऽनिन्दितश्च सकृद्-भाग्यलाभः सकृद्भ्रंश एव। धनं जातकं तज्जनाश्च त्यजन्ति श्रमग्रन्थिरुग् रन्ध्रगश्चेद् हि राहुः॥ गुदं पीडचते वा जनैर्द्रव्यरोधो यदा कीटके कन्यके युग्मके वा। भवेच्चाष्टमे राहुछायात्मजेऽपि वृषं चाभियाते सुतार्थस्य लाभः॥ यह राजा व पण्डितों द्वारा प्रशंसित होता है। कभी भाग्योदय तो कभी हानि होती है। पूर्वार्जित धन नष्ट होता है। पहले के सम्बन्धी भी इसे छोड देते हैं। श्रम से या ग्रन्थिरोग से पीडा होती है। इस स्थान में केतु

हो तो गुदरोग होता है। यह वृश्चिक, कन्या या मिथुन में हो तो धनलाभ रुकता है, वृषभ मे हो तो पुत्र व धन प्राप्त होते हैं।

ढुंढिराज—अनिष्टनाशं खलु गुह्यपीडां प्रमेहरोगं वृषणस्य वृद्धिम्। प्राप्नोति जन्तुर्विकलारिलाभं सिंहीसुते वा खलु मृत्युगेहे॥ गुदे पीडनं वाहनैर्द्रव्यलाभो यदा कीटगे कन्यके युग्मगे वा। भवेत् छिद्रगे राहुछाया यदा स्यादजे गोऽलिगे जायते चातिलाभः॥ अनिष्ट दूर होते हैं। इसे गुह्य रोग, प्रमेह, अण्डवृद्धि से कष्ट होता है। शरीर दुर्बल होता है। इस स्थान में केतु हो तो गुद-रोग होता है। कर्क, कन्या या मिथुन में यह केतु हो तो वाहनों से धन मिलता है। मेष, वृषभ या वृश्चिक में हो तो अति लाभ होता है।

आर्यग्रन्थ—राहुः सदा चाष्टममन्दिरस्थो रोगान्वितं पापरतं प्रगल्भं। चौरं कृशं कापुरुषं धनाढयं मायामतीतं पुरुष करोति। गुदं पीडयतेंशादि रोगैरवश्यं भयं वाहनादेः स्वद्रव्यस्य रोधः। भवेदष्ट मे राहुपुच्छेऽर्थलाभः सदा कीटकन्या, जगोयुग्मकेतुः॥ यह सदा रोगी, पापी, ढीठ, चोर, दुबला, डरपोक, धनी, मायारहित होता है। इस स्थान में केतु हो तो बवासीर आदि से गुद में कष्ट होता है, वाहन से भय होता है अपने ही, धन की प्राप्ति में बाधा आती है मिथुन, मेष, वृश्चिक, वृषभ, कन्या, में हो तो धन लाभ होता है।

नारायणभट्ट—इस ने राहु का फल बृहद्यवनजातक जैसा व केतु का फल आर्यग्रन्थ जैसा दिया है।

मन्त्रेश्वर—रन्ध्रेल्पायुरशुद्धिकृच्च विकलो वातामयोऽल्पात्मजः। यह अल्पायु, अपवित्र काम करनेवाला, वातरोगी,

विकल होता है। इसे पुत्र कम होते है। स्वल्पायुरिष्टविरहं कलहं च रन्ध्रे शस्त्रक्षतं सकलकार्यविरोधमेव ।। यह अल्पायु होता है। इष्ट लोगों से वियोग, झगडे, शस्त्र से जखम होना और सब कामों में विरोध ये इस स्थान में केतु के फल हैं।

जागेश्वर–यदा श्रेष्ठकर्मामयैर्दूरत्यक्तो भवेद्गोधनं वार्धके वै सुभाग्यम्। कदाचित् गुदे क्रूररोगा भवेयुः स्थितो राहुनामा नराणां विनाशे ।। यह श्रेष्ठ काम करनेवाला, नीरोग, गाय आदि पशुओं से समृद्ध, वृद्ध वय में सुखी होता है। कदाचित इसे गुप्त रोग होते हैं। यदा गुह्यदेशे कुतन्तुः कुधातुस्तथा वक्ररोगी तथा दन्तघाती। परं स प्रतापी यतेत् सर्वकालं यदा केतुनामा गृहे मृत्युसंज्ञे ।। केतु इस स्थान में हो तो गुह्यरोग, वीर्य के दोष, मुखरोग व दन्तरोग होते हैं। किन्तु यह पराक्रमी व सतत उद्योगी होता है।

हरिवंश–नैधने सिंहिकाजे नरो निर्धनो भीरुरालस्यधीरोऽतिधूर्तो भवेत्। दुर्बलो देहदानश्च दुःखान्वितो निर्दयो दद्रुयुक्तो दरिद्रोदयः ।। यह धनहीन, डरपोक, आलसी, उतावला, बहुत धूर्त, दुबला, दुखी, निर्दय, भाग्यहीन, खुजली से पीडित होता है।

वसिष्ठ—निधनगते स्वेच्छया भूपपूज्यः। राजा द्वारा सन्मानित होता है।

घोलप—स्त्री-पुत्र सुख नही मिलता। मानहीन, विद्याहीन, गुदरोग, प्रमेह, अन्तर्गल व शत्रु से पीडित होता है। यह राहु मिथुन में हो तो विशेष फल देता है—वह महापराक्रमी व कीर्तिमान होता है।

गोपाल रत्नाकर—यह झगडालू होता है। ३२ वें वर्ष में संकट आता है। शुभग्रह के साथ हो तो ५० वें वर्ष में संकट आता है।

लखनऊनबाब—हस्तमखाने यदा रासः शरीरी स्यान्मुसाफिरः। बेदीनः खिश्मनाकः स्यादवकारश्च मुफ्लिसः ॥ यह पुष्ट शरीर का, प्रवासी, धर्महीन, क्रोधी, दुराचारी व दरिद्री होता है।

पाश्चात्य मत—इस राहु से स्त्रीधन, किसी सम्बन्धी के वसीयत का धन प्राप्त होता है। किन्तु इस धन की प्राप्ति में कुछ उलझनें भी होती हैं। फायदा तात्कालिक होता है। यह स्थान वैसे गौण और दुर्बल है। किन्तु यहां उच्चमें राहु हो तो विशेष फल दे सकता है।

अज्ञात—अतिरोगी। द्वात्रिंशद्वर्षायुष्मान्। शुभयुते पंचचत्वारिंशद्वर्षाणि। भावाधिपे बलयुते स्वोच्चे षष्ठिवर्षाणि जीवितम् ॥ धनव्ययस्त्वनारोग्यं विवादो वन्धुभिः सह। स्त्रीकष्टं च प्रवासश्च राहुरष्टमगो यदि ॥ यह बहुत रोगी हो कर ३२ वें वर्ष में मरता है। शुभग्रह साथ हो तो ४५ वें वर्ष तक जीवन होता है। अष्टमेश बलवान हो या उच्च में हो तो ६० वर्ष तक जीवन होता है। यह खर्चीला, रोगी, भाइयों से झगडनेवाला, प्रवासी, स्त्रीसुख से रहित होता है।

चित्रे—यह ३२ वें वर्ष में शारीरिक कष्ट से पीडित होता है। धनवांन, विद्वान, राजा द्वारा पूजित होता है। यह राहु उच्च

या स्वगृह में हो तो पराक्रमी, कीर्तिमान होता है। यह रोगी, अभिमानी होता है।

हमारा अनुभव—यह स्थान दुर्बल है अतः सब लेखकोंने प्रायः अशुभ फल दिये हैं। किन्तु हमारे विचार से शुभ फलों का भी अनुभव मिलता है। यह राहु पुरुष राशि में हो तो स्त्री झगडालू होती है, घर की बातें बाहर बतलाती है, अभागी होती है। इस से ४२ वें वर्ष तक स्थिरता नही मिल सकती। अकस्मात धन प्राप्त करने की इच्छा से रेस, सट्टा, लाटरी, जुआ आदि में मग्न होते हैं। इसे धनप्राप्ति ठीक नही होती, रिश्वत ले तो पकडा जाता है। पत्नी के पहले मृत्यु होता है। मृत्यु के समय भ्रम, फिट, मज्जाविकार हो कर बेहोशी में मृत्यु होता है। मिथुन में यह राहु हो तो स्त्री झगडालू होती है। विवाह से भाग्योदय बन्द होता है। स्वतन्त्र व्यवसाय छोडकर नौकरी करनी पडती है। स्त्री निर्धन घर की होती है। शीलवान होती है। स्त्रीराशि में यह राहु स्त्री अच्छी देता है। स्वभावसे शान्त, संकट में धीरज रखनेवाली, धनसंचय करनेवाली, कम बोलने-वाली, घर की बातें बाहर न बतलानेवाली होती है। पति के पहले पत्नी की मृत्यु होती है। मृत्यु के समय सावधान स्थिति रहती है। कुछ समय पहले मृत्यु का आभास मिल जाता है। ये अधिकारी हो कर रिश्वत लें तो पकडे नही जाते। २६ से ३६ वें वर्ष तक भाग्योदय होता है। साधारणतः आयु के पूर्वार्ध में यह राहु कष्ट देता है। दूषित हो तो वृद्ध अवस्था में भी कष्ट होता है। ८ वें वर्ष में संकट, ३० वें वर्ष में वन्धनयोग, ३२ वें वर्ष में स्त्री को कष्ट अथवा मृत्यु एवं ४२ वें वर्ष में लाभ का योग होता है।

नौवें स्थान के फल

वैद्यनाथ—भाग्यस्थे दितिजे तु धर्मजनकद्वेषी यशोवित्तवान् ।। केतौ गुरुस्थानगते तु कोपी वाग्मीं विधर्मा परनिन्दकः स्यात् । शूरः पितृद्वेषकरोऽतिदम्भाचारी निरुत्साहरतोऽभिमानी ।। यह अपने धर्म व पिता का द्वेष करनेवाला, कीर्तिमान व धनी होता है । इस स्थान में केतु हो तो क्रोधी, वक्ता, धर्मपरिवर्तन करनेवाला, दूसरों की निन्दा करनेवाला, शूर, पिता का द्वेष करनेवाला, बहुत ढोंगी, निरुत्साही, अभिमानी होता है :

गर्ग—–नीचधर्मानुरक्तः स्यात् सत्यशौचविवर्जितः । भाग्यहीनश्च मन्दश्च धर्मगेसिंहिकासुते ।। नवमस्थानगः केतुर्बाल्त्वे पितृकष्टकृत् । भाग्यहीनो विधर्मश्च म्लेच्छाद् भाग्योदयो भवेत् ।। यह नीचों के धर्म में आसक्त, सत्यहीन, अपवित्र, अभागा व मन्द होता है । यहां केतु हो तो बचपन में पिता को कष्ट, भाग्योदय न होना, धर्मान्तर करना, विदेशियों से लाभ होना ये फल मिलते हैं ।

वसिष्ठ—–धर्मस्थेधर्मनाशम् ।। धर्म नष्ट होता है ।

बृहद्यवनजातक—–तमोऽङ्गीकृतं न त्यजेद् वा व्रतानि त्यजेत् सोदरान् नैव चातिप्रियत्वात् । रतिःकौतुके यस्य तस्यास्ति भोग्यं शयानं सुखं बन्दिनो बोधयन्ति ।। यह लिये हुए काम को अधूरा नही छोडता । बन्धुओं पर स्नेह होने से उन्हें अलग नही करता । कामक्रीडा में उत्साही, सेवकों से सम्पन्न होता है (सुबह नौकर सुखपूर्वक उसे जगाते हैं ।)

यदा धर्मगः केतवो धर्मनाशं सुतीर्थेऽमतिं म्लेच्छतो लाभवृद्धिम् । शरीरे व्यथां बाहुरोगं विधत्ते तपोदानतो ऱ्हासवृद्धि

करोति ।। इस स्थान में केतु हो तो धर्म नष्ट होता है, तीर्थयात्रा की इच्छा नही होती, विधर्मी से लाभ होता है । शरीर में रोग, बाहु में रोग होते हैं । तप, दान से हानि, वृद्धि होती है ।

ढुंढिराज——धर्मार्थनाशः किल धमगे तमे सुखाल्पता वै भ्रमणं नरस्य । दरिद्रता बन्धुसुखाल्पता च भवेच्च लोके किल देहपीडा ।। धर्म व धन का नाश होता है । सुख कम मिलता है, बन्धु कम होते हैं, शरीर में पीडा होती है, दरिद्रता होती है। केतु के फल यवनजातक जैसे दिये हैं ।

आर्यग्रन्थ——धर्मस्थिते चन्द्ररिपौ मनुष्यश्चण्डालकर्मा पिशुनः कुचैलः । ज्ञातिप्रमोदेऽनिरतश्च दीनः शत्रोः कुलाद् भीति-मुपैति नित्यम् ।। यह चण्डाल जैसे काम करनेवाला, दुष्ट, गन्दे वस्त्र पहननेवाला, दीन, शत्रु से डरा हुआ, जाति के आनन्द में उत्साह न रखनेवाला होता है। शिखी धर्मभावे यदा क्लेशनाशः सुतार्थी भवेन् म्लेच्छतो भाग्यवृद्धिः । सहोत्थव्यथां बाहुरोगं विधत्ते तपोदानतो हास्यवृद्धिः तदानीम् ।। इस स्थान में केतु हो तो क्लेश दूर होते हैं । पुत्र की इच्छा रहती है, विदेशियों से लाभ होता है, भाई को कष्ट होता है । वाहु में रोग होता है। यह तप या दान करे तो लोगों में हंसी होती है ।

नारायणभट्ट—मनीषी कृतं न त्यजेद् बन्धुवर्गं तदा पालयेत् पूजितः स्यात् गुणैः स्वैः । सभाद्योतको यस्य चेत् त्रित्रिकोणे तमः कौतुकी देवतीर्थे दयालुः ।। यह अपने काम को तथा अपने लोगों को नही छोड़ता । गुणों के कारण सन्मानित होता है । सभा में विजयी, देव व तीर्थ के विषय में उत्साही तथा दयालु होता है।

जागेश्वर––यदा धर्मभा भवेद् राहुनामा भवेद् धर्महीनस्तथा पापकारी। स्वयं दुष्टसंगं करोत्येव नूनं परं विक्रमात् पाद देशे सघातः ।। भवेद् विक्रमी शस्त्रपाणिश्च मित्रधनैर्धर्मशीलैः सदा वर्जितः स्यात्। तथा भ्रातृपुत्रादिचिन्तायुतः स्यात् यदा पातछाया गता पुण्यभावे ।। यह धर्महीन, पापी, दुष्टों की संगति में रहनेवाला होता है। युद्ध में इस का पैर जखमी होता है। इस स्थान में केतु हो तो पराक्रमी, सदा शस्त्र धारण करनेवाला होता है। मित्र, धन, धर्म व शील से रहित और बन्धु तथा पुत्र के विषय में चिन्तित होता है।

चित्रे––सेवक बहुत होते हैं। धनी, सुखी, दैववान होता है। धर्म पर श्रद्धा कम होती है। शरीर कष्टी रहता है। सभा में विजयी होता है। स्त्री की इच्छा का पालन करता है। बन्धुओं से स्नेह करता है। यह सन्ततिहीन, जाति का अभिमानी, झूठ बोलनेवाला, धर्म की निन्दा करनेवाला, कर्तव्यरहित होता है। यह राहु वृषभ, मिथुन, कर्क, कन्या व मेष में हो तो उत्तम यश देता है। राहु दूषित हो तो अनिष्ट फल देता है। यह बहुत प्रवास करता है :

मन्त्रेश्वर–धर्मस्थे प्रतिकूलवाग् गणपुरग्रामाधिपोऽपुण्यवान्।। पापप्रवृत्तिमशुभं पितृभाग्यहीनं दारिद्र्यमार्यजनदूषणमाह धर्मे ।। यह प्रतिकूल बोलनेवाला, लोगों का, गांव या नगर का प्रमुख व पापी होता है। केतु हो तो पापी, पिता के सुख से रहित, दरिद्री व अच्छे लोगों द्वारा निन्दित होता है।

हरिवंश––धर्महीनः कर्महीनो निर्धनोऽतिधूर्तो धूर्तप्रियः सर्वं सौख्येन हीनो भवेत् संभवे हीनभाग्यो नरो भाग्यगे भास्वरौ ।।

यह धर्महीन, कर्महीन, निर्धन, बहुत धूर्त, धूर्तों को प्रिय, सभी सुखों से रहित, अभागी होता है ।

घोलप---यह धर्महीन, प्रवासी, दरिद्री, कम सुख से युक्त, शरीरकष्ट से पीडित होता है। बन्धु का सुख कम होता है। यह राहु २।३।४।१।६ इन राशियों में सदा अच्छा फल देता है।

गोपाल रत्नाकर---यह स्त्री के वश होता है। धर्महीन, नौकरी करनेवाला, शूद्र सम्प्रदाय का, पुत्रहीन होता है।

पाश्चात्य मत---यह धन की इच्छा से विदेश से व्यापार करे तो नुकसान होता है। विदेशी बैंकों में धन डूबता है। स्वदेशी उद्योग में लाभ होता है। इस स्थान में केतु हो तो लोकमत के प्रतिकूल बोलते हैं। प्राचीन मत का प्रतिपादन करें तो ये जलदी प्रगति कर सकते हैं। ९।१०।११ स्थानों में केतु लोगों में अप्रीति निर्माण करता है। सुधारवादी विचार, उन्नत आत्मशक्ति, जगत के कल्याण के प्रयत्न ये इस केतु के लक्षण हैं। किन्तु इस सब के फलस्वरूप इन्हें लोकनिन्दा व कष्ट ही प्राप्त होता है। कारण यह है कि इस स्थिति में राहु अनुदित भाग में होता है।

लखनऊनबाब---वख्तखाने यदा रासः प्रभवेन् मनुजस्तदा। जवाहिर्जर्कशीयुक्तः साहबः सौख्यवान् सरः ।। यह अधिकारी, अच्छे वस्त्रभूषणों से सम्पन्न, श्रीमान, सुखी होता है।

हमारा अनुभव---यहां राहु के अशुभ फल पुरुष राशि के व शुभ फल स्त्री राशि के हैं। पुरुष राशि में---यह पिता का इकलौता पुत्र होता है अथवा सब से बडा या छोटा होता है। इस से बडी या छोटी बहिनें होती हैं। बहिनें न हों तो भाई को मारक होता है। भाई का संसार ठीक नही होता---बहिनों की

हालत ठीक रहती है। नास्तिक वृत्ति होती है। स्त्रीसम्बन्ध में जाति या वर्गका ख्याल नही रखते। विजातीय विवाह करते हैं। उम्र में बडी स्त्री अथवा विधवा से विवाह होता है। इनका प्रेम अस्थिर होता है। ये फल मिथुन, तुला, कुम्भ के हैं। मेष, सिंह, धनु में स्थिरता रहती है, स्त्री के साथ आदरपूर्वक रहते हैं। मिथुन, तुला, कुम्भ में स्त्री पर स्वामित्वकी भावना, पौरुष के अधिकार की वृत्ति होती है। पुत्रसन्तति नही होती या हो कर मृत होती है। सन्तति के लिए दूसरा विवाह करते हैं। क्वचित विदेश में प्रवास तथा विदेशी स्त्री से विवाह का योग होता है। ३३ वें वर्ष से भाग्योदय होता है। ५ वें वर्ष में भाई की मृत्यु होती है। स्त्रीराशि में हो तो सन्तति हो कर कुछ की मृत्यु होती है। पहले कन्याएं व वृद्ध वय में पुत्र होता है। बन्धु रहते हैं। यह भी पिता का इकलौता या सब से बडा, या छोटा पुत्र होता है। यह बहिनों के लिए मारक होता है। भाइयों के निर्वाह की जिम्मेदारी उठानी पडती है। ये लोग शिक्षक, समाज के उपयुक्त ज्ञान देनेवाले, विद्वान, संशोधक, शीलवान होते हैं। इन्हें विचित्र स्वप्न विशेषतः पक्षी के समान उडने के स्वप्न आते हैं। स्त्रीराशि में राहु हनूमान की उपासना करता है। यह राहु भाइयों की एकत्र प्रगति में बाधक है। बंटवारा होने पर दोनों की प्रगति होती है। १६ वें वर्ष से भाग्योदय, ९ वें वर्ष में बन्धु को कष्ट, बहिन का मृत्यु, २२ वें वर्ष में बडे भाई का मृत्यु ये योग होते हैं।

दसवें स्थान के फल

वैद्यनाथ--चौरक्रियानिपुणबुद्धिरतो विशीलो मानं गते फणिपतौ तु रणोत्सुकः स्यात् ।। सुधी बली शिल्पविदात्मबोधी

जनानुरागी च विरोधवृत्तिः। कफात्मकः शूरजनाग्रणीः स्यात् सदाटनः कर्मगते च केतौ ।। यह चोरी में निपुण, शीलरहित, झगडालू होता है। केतु हो तो बुद्धिमान, बलवान, शिल्पकार, आत्मज्ञानी, मिलनसार, विरोधी वृत्तिका, कफ प्रकृति, शूरों में मुख्य, प्रवासी होता है।

गर्ग---भवेद् वृन्दपुरग्रामपतिर्वा दण्डनायकः। कर्मस्थिते तमे प्राज्ञः शूरो मन्त्री धनान्वितः।। गुदामयः श्लेष्मवृत्तिः म्लेच्छकर्मा च मानवः। परदारतो नित्यं केतौ दशमगे गृहे।। यह लोकसमूह, गांव या नगर का अधिकारी, मन्त्री या सेनापति, शूर व बुद्धिमान होता है। केतु हो तो गुदरोगी, कफप्रकृति, विदेशीय काम करनेवाला, परस्त्री में आसक्त होता है।

बृहद्यवनजातक---धनाद् न्यूनता न्यूनता च प्रतापे जनैर्व्याकुलोऽसौ सुखं नातिशेते। सुहृद्दुःखदग्धो जलाच्छीतलत्वं पुनः खे तमो यस्य स क्रूरकर्मा ।। पितुर्नो सुखं कर्मगो यस्य केतुः स्वयं दुर्भगो मातृनाशं करोति। तथा वाहनैः पीडितोरुर्भवेत् स यदा वैणिकः कन्यकास्थोऽसितेष्टः ।। यह धन व पराक्रम से हीन, लोगों द्वारा पीडित, सुख की नींद से रहित, मित्रों के दुख से कष्टी, क्रूर काम करनेवाला होता है। केतु हो तो पिता-माता का सुख नही मिलता, कुरूप होता है। कन्या में हो तो वाहन से जांघ में पीडा होती है, वीणावादन करता है। काले पदार्थ की रुचि होती है।

वसिष्ठ---दशमभवनगे पापबुद्धि ददाति। पापी विचार होते हैं।

नारायणभट्ट——सदा म्लेच्छसंसर्गतोऽतीवगर्वः लभेन् मानिनीकासिनीभोगमुच्चैः। जनैर्व्याकुलोऽसौ सुखं नाधिशेते मदार्थव्ययी क्रूरकर्मा खगेऽह्नौ ।। विदेशियों के सम्बन्ध से गर्विष्ठ होता है। अभिमानी स्त्रियों का भोग करता है। लोगों से कष्ट होता है। सुख से बैठ नही सकता। नशाबाजी में धन खर्च करता है। क्रूर काम करता है। केतु का फल यवनजातक जैसा है, सिर्फ वृषभ, मेष, वृश्चिक, कन्या, में हो तो शत्रु का नाश होता है इतना अधिक कहा है——वृषाजालिकन्यासु चेत् शत्रुनाशम् ।।

आर्यग्रन्थ——कामातुरः कर्मगते च राहौ पदार्थलोभी मुखरश्च दीनः। म्लानो विरक्तः सुखवर्जितश्च विहारशीलश्चपलोऽतिदुष्टः ।। यह कामुक, दूसरे का धन चाहनेवाला, वाचाल, दीन, निरुत्साही, विरक्त, सुखरहित, प्रवासी, चपल, अति दुष्ट होता है। केतु का फल नारायणभट्ट जैसा बतलाया है।

ढुंढिराज——पितुर्नो सुखं कर्मगो यस्य राहुः स्वयं दुर्भगः शत्रुनाशं करोति। रुजो वाहने वातपीडां च सन्तोर्यदा सौख्यगो मीनगः कष्टभाजम् ।। पिता का सुख नही मिलता, शत्रु नष्ट होते हैं। वाहनों से कष्ट, वातरोग होते हैं। दुर्भागी होता है। यह राहु वृषभ में सुखदायक व मीन में कष्टदायक होता है। केतु का फल नारायणभट्ट जैसा है।

मन्त्रेश्वर——ख्यातः खेऽल्पसुतोऽन्यकार्यनिरतः सत्कर्महीनोऽभयः ।। सत्कर्मविघ्नमशुचित्वमवद्यकृत्यं तेजस्विनो नभसि शौर्यमतिप्रसिद्धम् ।। यह दूसरों का काम करनेवाला, अच्छे काम न करनेवाला, निडर, कम पुत्रों से युक्त होता है। केतु हो तो

अच्छे काम में विघ्न करता है, पापकृत्य करता है, अपवित्र होता है। तेजस्वी, प्रसिद्ध शूर होता है।

जागेश्वर—भवेद् गर्वभंगो गरिष्ठो विशेषात् तथा मातृकष्टं कुले घातपातः। पितुर्वाथिवा भ्रातृदुःखकरः स्याद् यदा पातनामा भवेत् कर्मगोऽयम्।। कथं वै सुखं पैतृकं वै जनानां तथा कर्मलाभः कथं हृत्सुखं स्यात्। परं पाददेशे भवेत् चोरपीडा यदा केतुनामा गतः कर्मभावे।। इस का गर्व दूर होता है। माता को कष्ट तथा कुल में अपघात से मृत्यु होता है। पिता या भ्राता को दुःख होता है। यह बडा व्यक्ति होता है। यहां केतु हो तो पिता का सुख नही मिलता। काम से कुछ लाभ नही होता, मन में सुख नही होता। पांव में रोग तथा चोरों से कष्ट होता है।

हरिवंश—युग्मसंस्थोऽथवा कन्यकासंस्थितः कर्मभावे यदा सैंहिकेयो भवेत्। राजमान्यों प्रकुर्यात् स तापाधिकं शेषसंस्थो नरं वैपरीत्यं सदा।। यह मिथुन या कन्या में हो तो राजमान्य होता है, अधिक कष्ट देता है। अन्य राशियों में सदा विरुद्ध फल मिलते हैं।

घोलप—राजा का द्वेष करने से दरिद्री होता है। पापी, झगडालू, दुर्भागी, पिता के सुख से रहित, शत्रु का नाश करनेवाला, वातरोगी, घरवार से रहित होता है। यह शूर हुआ तो बहुत लडाइयां लडता है, इच्छाएं पूरीं नही होतीं। यहां राहु मीन में हो तो घर आदि का सुख प्राप्त होता है।

गोपाल रत्नाकर—यह काव्य, नाटक, साहित्यशास्त्र की रुचि रखनेवाला, श्रीमान, विद्वान, प्रवासी, वातरोगी होता है।

विधवा स्त्री से सम्बन्ध रखता है। अच्छे कामों में विघ्न करता है।

लखनऊनबाब--रासो बादशाहखाने भवेज्जोरावरो गनी। विपक्षपक्षरहितो मुईशः पूर्वरुद्दतः॥ यह बलवान, मित्रों से युक्त, शत्रुरहित, श्रेष्ठ व्यक्ति होता है। इसे चिन्ता बहुत रहती है।

चित्रे--यह बलवान लोगों का साहाय्य प्राप्त करता है। पिता का सुख नही मिलता, बातरोग होते हैं। चतुर किन्तु चिन्तित होता है। यह राहु मीन में हो तो प्राप्त स्थावर सम्पत्ति का उपभोग कर सकता है। अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध रखता है। खर्चीला, राजवैभव से युक्त, शत्रु का नाश करनेवाला, अस्थिर-चित्त का होता है। इसे कविता, नाटक, आदि में रुचि रहती है। युद्ध प्रिय होता है। यह प्रवासी, व्यापार में निपुण होता है। यह राहु उच्च हो तो राजा का पद प्राप्त होता है

वेंकटेशशर्मा--राहौ च माने भागीरथीस्नानमुशन्ति तज्ज्ञाः विवर्जितः स्यात् शिखिराहुपापैर्यज्ञस्य कर्ता स भवेत् तदानीम्॥ यहां राहु हो तो गंगास्नान का लाभ मिलता है। यदि यहां राहु या केतु पापग्रह के साथ न हो तो वह यज्ञ करता है।

पाश्चात्यमत--यह राहु बहुत उत्तम फल देता है। पूरे जीवन में सफलता, सन्मान, कीर्ति व अमर्याद श्रेष्ठता मिलती है। उदाहरण के रूप में महात्मा गांधी की कुण्डली दी है।

अज्ञात--वितन्तुसंगमः दुर्ग्रामवासः शुभयुते न दोषः। काव्यव्यसनः। दासीसम्प्रदायी॥ भूमिनाशो भयान्नित्यं देहपीडा धनक्षयः। इष्टस्वजनविद्वेषं राहौ वै दशमे स्थिते॥ यह विधवा

से सम्बन्ध रखता है। बुरे गांव में रहता है। राहु के साथ शुभ ग्रह हो तो ये दोष नही होते। काव्य की रुचि रहती है। दासियां रखता है। भूमि का नाश, डर, शरीर को कष्ट, धन की हानि, अपने लोगों से द्वेष ये इस राहु के फल होते हैं।

हमारे विचार——इस स्थान में गर्ग, हरिवंश तथा पाश्चात्य मत में शुभ फल बताये हैं। अन्य लेखक अशुभ बतलाते हैं। शुभ फल स्त्री राशि के व अशुभ फल पुरुष राशि के हैं। दशमस्थान का पुत्र से सम्बन्ध नही किन्तु इस स्थान में दूषित रवि, मंगल, गुरु, शनि, या राहु हो तो माता, पिता, भाई व पुत्र के सम्बन्ध में शोक होता है। यह स्थान पिता का कारक है, मातृस्थान (चतुर्थ) से सप्तम एवं बन्धुस्थान (तृतीय) से अष्टम स्थान होता है। अतः इस स्थान में अशुभ योग से माता, पिता व बन्धु के सुख की हानि की उपपत्ति मिलती है। पुत्र के सुख की हानि का कारण शायद यह है कि यह स्थान लाभस्थान से बारहवां (वंश व व्यय) एवं भाग्यस्थान से दूसरा (धन व मारक) स्थान होता है। अतः अपने वंश के सातत्य को मारक योग दशम स्थान से हो सकते हैं—— पुत्र न होना, हो कर मरना, कन्यात्रं ही होना ऐसी प्रवृत्ति मिलती है। अज्ञात व गोपाल रत्नाकर ने विधवा का सम्बन्ध होना यह फल कहा है। यह पुरुष राशि का है। स्त्रीराशि में इस का अनुभव नही मिलता

हमारा अनुभव——यह राहु पुरुष राशि में हो तो वह विक्षिप्त, दुरभिमानी, वाचाल, लोगों से अलग रहनेवाला होता है। पुलिस, रेलवे, बीमा कम्पनी, बैंन्क, आदि में नौकरी करते हैं। आर्थिक स्थिति अस्थिर होती है, लोगों का विश्वास नही

रहता। इन के जन्म से माता-पिता को शायीरिक व आर्थिक कष्ट रहता है। पिता को पंगु हो कर पेन्शन लेनी पडती है। माता या पिता का बचपन में मृत्यु होता है। ये लोग अधिकार हो तो ही काम करते हैं, व्यर्थ काम नही करते। सुखासक्त होते हैं। स्त्रीराशि में यह राहु हो तो पूर्वार्जित इस्टेट नही मिलती, मिली तो अपने हाथ से नष्ट होती है। पूर्व वय में वहुत कष्ट सहकर प्रगति करता है। प्रौढ अवस्था में सन्तति, धन, कीर्ति, सन्मान आदि सभी प्राप्त होते हैं। पुत्र बहुत होते हैं। अदालत के कामों में हमेशा जय मिलता है। लेखन, वृत्तपत्र या मासिक पत्रों का सम्पादन, कानून का ज्ञान आदि में कुशल होते हैं। मिलनसार, निश्चयी, तपस्वी, स्नेहशील, नियमित, परोपकारी स्वभाव होता है। स्वतन्त्र व्यवसाय, बिना पूंजी के व्यवसाय में लाभ होता है। सच बोलनेवाला, प्रामाणिक, प्रभावशाली, निडर, अपने काम में अडंगे को बरदाश्त न करनेवाला, संस्थाओं का स्थापक होता है। आयु के ३ रे वर्ष माता को, ७ वें वर्ष पिता को, ८ वें वर्ष पैतृक सम्पत्ति को, गंभीर खतरा होता है। २१ वें वर्ष भाग्योदय को आरम्भ, ३६ वें वर्ष पूर्ण उन्नति, ४२ वें वर्ष सार्वजनिक सन्मान का योग होता है।

ग्यारहवें स्थान के फल

वैद्यनाथ—राहौ श्रोत्रविनाशको रणतलश्लाघी धनी पण्डितः। उपान्त्ययाते शिखिनि प्रतापी परप्रियश्चान्यजनाभिवन्द्यः। सन्तुष्टचित्तः प्रभुरल्पभोगी शुभक्रियाचाररतः प्रजातः॥ यह युद्ध में प्रशंसित, धनी, विद्वान, बहरा होता है। केतु हो तो पराक्रमी, लोकप्रिय, दूसरों द्वारा प्रशंसित, सन्तुष्ट, अधिकारी, अल्प भोग करनेवाला, अच्छे कामों में लगा हुआ होता है।

गर्ग--यस्य लाभगतो राहुर्लाभो भवति निश्चयात्। म्लेच्छादिपतितैर्नूनं गजवाजिरथादिकम् ।। यह राहु लाभदायी होता है। विदेशियों और बुरे लोगों से हाथी, घोडे, रथ आदि की प्राप्ति होती है।

वसिष्ठ---लाभस्थाने विलासो भवति सुकविता वा सुलक्ष्म्यादिभोगम् । यह विलासी, कविताप्रिय, धनवान होता है।

बृहद्यवनजातक---लभेद्वाक्यतोऽर्थं चरेत् किंकरेण व्रजेत् किं च देशं लभेत प्रतिष्ठाम्। द्वयोः पक्षयोर्विश्रुतः सत्प्रजावान्नताः शत्रवः स्युस्तमो लाभगश्चेत् ।। यह वक्ता हो कर धन प्राप्त करता है, सेवकों के साथ विदेश में घूमता है। कीर्तिमान, दोनों पक्षों को मान्य, अच्छे पुत्रों से युक्त होता हैं। इस के शत्रु भी नम्र हो जाते हैं। सुभाषी सुविद्याधिको दर्शनीयः सुभोगः सुतेजाः सुवस्त्रोऽपि यस्य। भवेदौदरार्तिः सुता दुर्भगाश्च शिखी लाभगः सर्वलाभं करोति ।। इस का बोलना, शिक्षा, रूप, भोग, तेज, वस्त्र ये सब अच्छे होते हैं। पेट में रोग होता है, पुत्र भाग्यहीन होते हैं। सदा लाभ होता है।

नारायणभट्ट---सदा म्लेच्छतोऽर्थं लभेत् साभिमानश्चरेत् किंकरेण व्रजेत् किं विदेशम्। परार्थाननर्थी हरेत् धूर्तबन्धुः सुतोत्पत्तिसौख्यं तमो लाभगश्चेत् ।। यह विदेशियों से धन प्राप्त करता है ।। सेवकों के साथ अभिमानपूर्वक विदेश में घूमता है। धूर्तों से मित्रता कर दूसरों का धन हरण करता है। पुत्रसन्तति होती है। केतु का फल यवनजातक जैसा है।

आर्यग्रन्थ---आयस्थिते सोमरिपौ मनुष्यो दान्तो भवेन्नीलवपुः सुमूर्तिः। वाचाल्पयुक्तः परदेशवासी शास्त्रज्ञवेत्ता चपलो

विलज्जः ।। यह संयमी, सांवले रंग का, सुन्दर, कम बोलनेवाला विदेश में रहनेवाला, शास्त्रों का ज्ञाता, चंचल और निर्लज्ज होता है । केतुका फल यवनजातक जैसा दिया है ।

ढुंढिराज——लाभे गते यदि तमे सकलार्थलाभं सौख्याधिकं नृपगणाद् विविधं च मानम् । वस्त्रादिकांचनचतुष्पदसौख्यभावं प्राप्नोति सौख्यविजयौ च मनोरथं च ।। यह सब प्रकार का लाभ, अधिक सुख, राजा द्वारा विविध सन्मान, वस्त्र भूषण व पशु आदि की समृद्धि, सुख तथा विजय प्राप्त करता है । मन की इच्छाएं पूरी होती हैं। केतु का फल यवनजातक जैसा है,सिर्फ 'गुदे पीडचते', गुदरोग होना यह अधिक कहा है ।

मन्त्रेश्वर—श्रीमान्नातिसुतश्चिरायुरसुरे लाभे सकर्णामयः ।। लाभेऽर्थसंचयमनेक गुणं सुभोगं सद्रव्यसोपकरणम् सकलार्थसिद्धिम्।। यह धनी, कम पुत्रों से युक्त, दीर्घायु, कान के रोग से युक्त होता है। केतु हो तो धन का संचय, अनेक गुण, अच्छे भोग, सब अर्थों की सिद्धि व द्रव्य तथा उपकरणों की प्राप्ति होती है ।

जागेश्वर——भवेन्मानवो मानयुक्तः सदैव प्रतापानलैस्ता-पयेच्छत्रुवर्गम् । सुतैः कष्टभाग् गोत्रचिन्तासुयुक्तः सदा सैंहिकेयो नराणां च लाभे ।। भवेत् पुत्रचिन्ता धनं तस्य गेहे कथं स्यात् सुतानां च चिन्ता विशेषात् । भवेज्जाठरे तस्यं वातप्रकोपो यदा केतवो लाभगाः स्युर्नराणाम् ।। यह सन्मानित, प्रभाव से शत्रु को सन्तप्त करनेवाला होता है । इसे पुत्र तथा कुटुम्ब की चिन्ता से कष्ट होता है । केतु हो तो पुत्र तथा धन की चिन्ता रहती है । पेट में वातरोग होते हैं ।

हरिवंश---आयभावस्थितः कायहीनग्रहः सर्वदायं तनोत्यंग-पुष्टि नृणाम्। भूपतो गौरवं शत्रुहानिं बलम् वाहनं भूषणं भाग्य-मर्थागमम् ।। इस का शरीर पुष्ट होता है, राजा से सन्मान प्राप्त होता है, शत्रु नष्ट होते हैं। बल, वाहन, आभूषण, धन तथा भाग्योदय प्राप्त होता है।

घोलप---यह कीर्तिमान, निरोगी, राजमान्य, धनी, उत्तम गुणों से युक्त, सुवर्णाभूषणों से सम्पन्न होता है। पशुओं से समृद्ध होता है। इच्छाएं पूरी होती हैं। राहु ३।६।११ इन स्थानों में अरिष्ट दूर करता है। केतु हो तो पूज्य, कार्यकर्ता, घोडे और वाहन आदि से समृद्ध, मीठा बोलनेवाला, विद्वान, उत्तम भोगों से सम्पन्न, गुदरोग से पीडित होता है।

गोपाल रत्नाकर---यह धनधान्य से समृद्ध, पुत्रयुक्त, विदेशियों द्वारा सन्मानित होता है।

पाश्चात्य मत---यह व्यक्ति श्रेष्ठ होता है। जिस का व्यवसाय किती दूसरे पर अवलम्बित हो उसे यह लाभदायक है। रेस, सट्टा, जुआ, लाटरी में इसे लाभ नही होता। अन्य बातों में भाग्यशाली होता है। इस स्थान में केतु हो तो मित्र अच्छे नही होते, मित्रों से नुकसान होता है। राजनीतिक नेताओं के लिए यह केतु हानिकारक है क्यों कि जब दशम से केतु जाता है तब इन्हें मित्रों से विश्वासघात, संकट का सामना करना पडता है। अतः वे हमेशा दूसरे दर्जे के पद पर ही रहते हैं।

अज्ञात---शरीरारोग्यमैश्वर्यं स्त्रीसुखं विभवागमः। संकीर्ण-वर्णतो लाभो राहुर्लाभगतो यदि।। इसे आरोग्य, ऐश्वर्य, स्त्रीसुख, धनलाभ, व नीच जाति के लोगों से लाभ की प्राप्ति होती है।

चित्रे—इस का व्यवसाय ठीक नही चलता, कर्ज रहता है। यह राहु उच्च या स्वगृह् का हो तो राजाद्वारा सन्मानित, सुखी, धनी होता है। विदेशियों से धन व कीर्ति मिलती है। यह विद्वान, विनोदी, लज्जाशील, शास्त्रज्ञ, युद्ध में विजयी, बहरा होता है। सन्तति कम होती है।

हमारा अनुभव—इस स्थान में प्रायः शुभ फल बतलाये हैं वे स्त्रीराशि के हैं। अशुभ फल पुरुष राशि के हैं। यह राहु पुरुष राशि में हो तो पूर्वजन्म के शाप के कारण पुत्रसन्तति में बाधा रहती है। पुत्र मरना, गर्भपात होना, स्त्री को सन्तति-प्रतिबन्धक रोग होना आदि प्रकार होते हैं। इन्हें एकदम श्रीमान होने की इच्छा रहती है। इसलिए रेस, लाटरी, सट्टा, जुआ आदि में धन खर्च करते हैं। अधिकार मिले तो अन्धाधुन्ध रिश्वत लेते हैं किन्तु पकडे भी जाते हैं। लोभी, परद्रव्य के इच्छुक, बरताव में अनियमित होते हैं। इन्हें इष्टमित्र कम होते हैं, मित्रों से नुकसान होता है, किसी से मदद नही मिलती। भाग्योदय में हमेशा रुकावट आती है। ये कल्पक, संशोधक, प्राचीनवस्तुवेत्ता होते हैं। नौकरी में ही इन की योग्यता का उपयोग होता है। यह राहु स्त्रीराशि में हो तो पहले कन्या होती है, फिर बहुत काल बाद पुत्र होता है। सन्तति बहुत होती है। कन्याएं अधिक होती हैं। मित्र अच्छे होते हैं, उन की मदद से जीवन को अच्छी दिशा मिलती है। व्यसन नही होता, सरल मार्ग से जीविका प्राप्त करने की इच्छा रहती है। इन के मित्र ज्योतिष, मंत्रशास्त्र के जानकार होते हैं। इच्छा-आकांक्षएं अच्छी होती हैं। सन्तति होती है। अधिकारी होने पर रिश्वत लेने में पकडे नही जाते। व्यवसाय या नौकरी स्थिर रहती है। बडे

भाई की मृत्यु होती है, अथवा वह बेकार या पुत्रहीन होता है, उस के कुटुम्ब का भार वहन करना पडता है। ४२ वें वर्ष एकदम धनलाभ होता है, कीर्ति नही मिलती। विधानसभा के सदस्य हो सकते हैं। इन्हें स्वतन्त्र व्यवसाय अधिक अनुकूल होता है। ६ वें वर्ष शरीरकष्ट, ९ वें वर्ष शिक्षा का आरम्भ, १२ वें वर्ष बडे भाई को गम्भीर शारीरिक कष्ट, २७ वें वर्ष विवाह, २८ वें वर्ष जीविका के आरम्भ का योग होता है।

बारहवें स्थान के फल

वैद्यनाथ–विधुन्तुदे रिःफगते विशीलः सम्पत्तिशाली विकलश्च साधुः। पुराणवित्तस्थितिनाशकः स्यात् चलो विशीलः शिखिनि व्ययस्थे॥ यह शीलरहित, धनवान, व्यंग से युक्त, परोपकारी होता है। केतु हो तो पुरानी सम्पत्ति को नष्ट करनेवाला, चंचल, शीलरहित होता है।

गर्ग—व्ययस्थानगते राहौ नीचकर्मरतः सदा। असद्व्ययी पापबुद्धिः कपटी कुलदूषकः॥ यह नीच काम करनेवाला, बुरे कामों में धन खर्च करनेवाला, पापी विचारो का, कपटी, कुल को दूषण जैसा होता है।

बृहद्यवनजातक—तमे द्वादशे विग्रहे संग्रहेपि प्रपातात् प्रयातोऽथ संजायते हि। नरो भ्राम्यतीतस्ततो नार्थसिद्धिर्विरामे मनोवांछितस्य प्रवृद्धिः॥ यह घर में झगडे करता है, गिर पडता है, इधर उधर भटकता है, धन नही मिलता, एक जगह स्थिर होने पर इच्छाएं पूरी होती हैं। शिखी रिःफगश्चारुनेत्रः सुशिक्षः स्वयं राजतुल्यो व्ययं सत्करोति। रिपोर्नाशनं मातुलान्नैव शर्म रुजा पीडयते बस्तिगुह्यं सदैव॥ यहां केतु हो तो आंखें सुन्दर

होती हैं, शिक्षा अच्छी होती है। यह अच्छे कामों में राजा जैसा खर्च करता है, शत्रु का नाश करता है। इस को मामा का सुख नही मिलता, गुद व गुह्य भाग में रोग होते हैं।

आर्यग्रन्थ—व्ययस्थिते सोमरिपौ नराणां धर्मार्थहीनो बहुदु:खतप्तः। कान्तावियुक्तश्च विदेशवासी सुखैश्च हीनः कुनखी कुवेषः॥ यह धर्महीन, निर्धन, बहुत दु:खी, पत्नी से दूर रहनेवाला, विदेश में जानेवाला, सुखरहित होता है। इस के नख और वेष अच्छे नही होते। केतु का फल यवनजातक जैसा है।

ढुंढिराज—नेत्रे च रोगं किल पादघातं प्रपंचभावं किल वत्सलत्वम्। दुष्टे रतिं मध्यमसेवनं च करोति जातं व्ययगे तमे वा॥ आंख में रोग व पांव पर आघात होते हैं। प्रपंच में आसक्त, स्नेहशील होता है। दुष्टों की संगति में व मध्यम लोगों की सेवा में रहता है। केतु का फल यवनजातक जैसा है।

नारायणभट्ट—तमो द्वादशे दीनतां पार्श्वशूलं प्रयत्ने कृतेऽनर्थतामातनोति। खलैर्मित्रतां साधुलोके रिपुत्वं विरामे मनोवांछितार्थस्य सिद्धिम्॥ यह दीन, दुष्टों का मित्र, सज्जनों का शत्रु होता है। इस के व्यवसाय में नुकसान होता है। पीठ में रोग होता है। अन्त समय में इच्छाएं पूरी होती हैं। केतु का फल यवनजातक जैसा है।

मन्त्रेश्वर—प्रच्छन्नाघरतो बहुव्ययकरो रि:फेऽम्बुरुक्-पीडितः॥ प्रच्छन्नपापमधमं व्ययमर्थनाशं रि:फे विरुद्धगति-मक्षिरुजं च पातः॥ यह गुप्त रूप से पाप करता है, बहुत खर्च करता है, जलोदर से पीडित होता है। केतु हो तो—गुप्त पाप

करनेवाला, अधम, खर्चीला, निर्धन, उलटे मार्ग से चलनेवाला, आंख के रोग से पीडित होता है।

जागेश्वर—तथा राहुणा बुद्बुदं नेत्रयुग्मम् । यदा सैंहिकेयस्तथा पातनामा व्यये चेन्नराणां तदा म्लेच्छभिल्लैः । धनं भुज्यते मातुले वै कुठारः स्वयं तप्यते क्रोधयुक्तो जनेषु ॥ यदा राहुणा केतुना वापि युक्तं व्ययं वै नराणां तदा मानसे किम् । भवेत् सौख्यकं किंकरोऽयं विघाती सुघाती भवेन्मातुले मानवृद्धः॥ आंख में दोष होता है। इस का धन विदेशी या भील लूटते हैं। मामा की मृत्यु होती है। लोगों पर क्रोध कर स्वयं त्रस्त होता है। मन में सुख नही होता। नौकर घात करते हैं। मामा के विषय में इन्हें वहुत सम्मान होता है। ये फल राहु-केतु दोनों के हैं।

हरिवंश—बुद्धिमन्दः कृशांगाभिभूतस्तथा बन्धुवैरी विरोधी शठो दुर्बलः। कुव्ययेनान्वितो मानवः सम्भवेत् भानुभावस्थितो भानुशत्रुर्भवेत् ॥ यह मन्द बुद्धि का, दुबला, अपने लोगों का वैरी, विरोधी, दुष्ट, दुर्बल, बुरे काम में खर्च करनेवाला होता है।

घोलप—सज्जनों के आश्रय से शत्रु का नाश करता है। उत्तम प्रदेश में जीवनयापन करता है। आंख व पांव में पीडा होती है। हाथ वडा होता है। यह स्नेहशील होता है। इस स्थान में केतु हो तो जगत में पूज्य, कीर्तिमान, ऐश्वर्यवान, कपडे के व्यापार में सम्पन्न होनेवाला, न्यायी, राजा के समान खर्च करनेवाला, शत्रुहीन, सुखरहित होता है। आंख, पांव, बस्ति, गुद में रोग से पीडा होती है।

इस स्थान में मिथुन, धन या मीन में राहु मुक्तिदायक होता है ऐसा कुछ आचार्यों का मत है।

गोपाल रत्नाकर—– कंजूस, कम पुत्रों से युक्त, नेत्ररोगी होता है। खर्च बहुत होता हैं।

लखनऊनबाब—–रासः स्थितो यदा चैव खर्चखाने भवेत् तदा। कलहप्रियो बेकारः कर्जमन्दश्च मुफिलसः ।। यह झगडालू, बेकार, ऋणग्रस्त व दुःखी होता है।

पाश्चात्य मत—–सार्वजनिक संस्थाओं से लाभ होता है। अध्यात्मज्ञान के लिए यह शुभ है। यह राहु अवैध सम्बन्ध से जन्म सूचित करता है। ऐसे तीन बालकों की कुण्डली में व्यय में राहु था। उन का बाद में कैसे पालनपोषण हुआ इस का पता नही चला। एक माताने-जिसके व्यय में राहु था—–अपना बच्चा अनाथालय को सौंपा था, वह लडका बहुत अच्छा था और उस के चतुर्थ में राहु था। इस माता ने अपने दो और बच्चे इसी तरह अनाथालय को सौंपे थे। यदि केतु यहां हो तो अध्यात्म की रुचि से हानि होती है।

वसिष्ठ—– रूपत्वं द्वादशस्थः सुखमतिनितरां चक्षुरोगं प्रसूतौ। यह सुन्दर, बहुत सुखी, नेत्ररोगी होता है।

अज्ञात—–अल्पपुत्रः। नेत्ररोगी। पापगतिः। धनव्ययं च कष्टं च राजपीडां रिपुक्षयम्। जायापीडा भवेन्नित्यं स्वर्भानु-र्द्वादशे यदि ।। इसे पुत्र कम होते हैं, आंख में रोग होता है। पापी आचरण होता है। धन का खर्च, कष्ट, राजा से तकलीफ, शत्रु का नाश, स्त्री को कष्ट ये इस राहु के फल हैं।

चित्रे---यह झगडालू, नेत्ररोगी, दुर्जनों की संगति में रहनेवाला, मध्यम लोगों की सेवा करनेवाला, स्त्री से वियुक्त, विदेशवासी, दरिद्री, बुरा वेष पहननेवाला, धर्मभ्रष्ट होता है। पांव में रोग होता है। क्वचित् शरीर में व्यंग से युक्त, धनवान, परोपकारी होता है। यह राहु उच्च या स्वगृह में हो तो शुभ फल देता है।

हमारे विचार---इस स्थान में वसिष्ठ व घोलप को छोड कर बाकी सब ने अशुभ फल बताये हैं। वैद्यनाथ ने धनप्राप्ति तो बाकी सब नें दारिद्रय फल कहा है। नेत्ररोग का उल्लेख सब ने किया है। धन व व्यय ये नेत्रकारक स्थान हैं तथा राहु पापग्रह है अतः यह फल कहा है। पुत्र कम होना यह फल अनुभव से ठीक प्रतीत होता है यद्यपि इस स्थान से पुत्रों का सम्बन्ध नही है। पाश्चात्य मत से अवैध सम्बन्ध से जन्म का जो फल कहा है वह हमें ठीक नही प्रतीत होता।

हमारा अनुभव---यह राहु पुरुष राशि में हो तो नेत्ररोग हो सकते हैं। वडप्पन दिखाने के लिए बहुत खर्च करते हैं। पुत्रसन्तति कम होती है---एक या दो ही सन्तति होती है। दो विवाह होते हैं। यह विवाहित स्त्री से असन्तुष्ट रहता है अतः व्यभिचारी प्रवृत्ति होती है। स्त्री हमेशा बीमार रहती है अथवा ज्यादा दिन मायके रहती है। पूर्व वय में स्थिरता नही मिलती। स्त्री राशि में यह राहु स्त्रीसुख साधारणतः अच्छा देता है किन्तु दो विवाह होते हैं। खर्च व्यवस्थित रूप से करते हैं। इन्हें नेत्ररोग बिलकुल नही होते---आखिर तक दृष्टि अच्छी रहती है। सन्तति अधिक होती है। स्वभाव शान्त व अत्यन्त विरक्त होता

है। पूर्ववय में स्थिरता नही होती। जीविका के लिए कुटुम्ब छोड कर उत्तर की ओर जाना पडता है। ईशान्य प्रदेश में भाग्योदय होता है। यह राहु जन्मभूमि में लाभ नही देता। विदेश में रहने और पढने पर भी अपनी संस्कृति को ही श्रेष्ठ समझता है। प्रसिद्ध, पराक्रमी होता है। कीर्ति मिलने के साथ साथ इन के प्रपंचसुख में कमी होती है। ये उपभोग में रुचि रखते हैं, बहुत कमाते हैं और खर्च भी करते हैं। दयालु, आप्त-मित्रों को मदद करनेवाले, शत्रुरहित, महत्त्वाकांक्षी, उच्च ध्येय से प्रेरित, उदार, वाङ्मयप्रेमी, मिलनसार होते हैं। वेदान्त की ओर प्रवृत्ति हो तो साधु-सत्पुरुष हो सकते हैं। इस राहु से १२ वे वर्ष में माता या पिता का मृत्यु, २१ या २३ वें वर्ष में जीविका का आरम्भ, १६ वें वर्ष पैतृक धन का लाभ, ३५ वें वर्ष भाग्योदय का योग होता है। वचपन में विवाह हो तो २१ वें वर्ष दूसरा विवाह होता है। अथवा ३२ से ३६ वें वर्ष तक दूसरे विवाह की सम्भावना होती है।

प्रकरण ७ केतु के द्वादश फल

पहले स्थान के फल

अज्ञात--यदा केतनो लग्नगो भग्नता च तदा रोगवृद्धिर्भवेद् घातपातः। शरीर का अवयव टूटना, रोग बढना, अपघात ये फल हैं।

ढुंढिराज--यदा लग्नगे चेत् शिखी सूत्रकर्ता सरोगादिभोगं भयं व्यग्रता च। कलत्रादिचिन्ता महोद्वेगता च शरीरे प्रबाधा व्यथा मारुतस्य॥ रोगी, डरपोक, चिन्तातुर, स्त्री आदि की चिन्ता से युक्त, शरीर में कष्ट से पीडित, वातरोगी, उद्विग्न होता है।

चित्रे---इस के हाथ को बहुत पसीना आता है। कृश, दुबला, उदास, भ्रमिष्ट, लोभी, कंजूस, अपने लोगों से झगडने-वाला अशुद्ध चित्त का होता है। कमर में कष्ट व विषबाधा से पीडा होती है। मित्र अच्छे नही होते, विवाह करता है व बहुत दीन होता है---विभानुः कुमित्रे विवादेऽतिहीनः ॥

सारावली---केतुर्यस्मिन् ऋक्षेऽस्त्युदितः तस्मिन् प्रसूयते सो हि। मासद्वयेन मरणं विनिर्दिशेत् तस्य जातस्य ॥ जन्मलग्न के साथ केतु का उदय हो तो दो मास में वह बालक मरता है।

धनस्थानके फल

अज्ञात---धनस्थोऽत्र केतुर्मतिभ्रंशहेतुः स्त्रियः सौख्यहारी तथा विघ्नकारी। मनस्तापकारी नृपाद् भीतिकष्टं सदा दुःख-भागी द्विषत्सन्निभाषी ॥ यह बुद्धिभ्रम से युक्त, स्त्री सुख से रहित, विघ्नयुक्त होता है। मन को ताप होता है, राजा से भय व कष्ट होता है, सदा दुःख होता है। यह शत्रु जैसा बोलता है।

ढुंढिराज---धने केतुना व्यग्रता किं नरेशात् धने धान्यनाशो मुखे रोगकृच्च। कुटुम्बाद् विरोधी वचः सत्कृतं वा। राजा का का भय रहता है, धनधान्य नष्ट होता है, मुखरोग होता है, कुटुम्ब का विरोध करता है, असत्य बोलता है।

चित्रे---यह धर्म नाश करता है। बोलना बहुत तीखा होता है। यह केतु स्वगृह या शुभग्रह की राशि में हो तो बहुत सुख देता है। मित्र ग्रह की राशि में हो तो शुभ फल देता है। मेष, मिथुन या कन्या में हो तो वह रूपवान व सुखी होता है।

तृतीय स्थान के फल

अज्ञात---तृतीयस्थितो यस्य मर्त्यस्य केतुः सदा धीरतां शत्रुनाशं करोति। धनस्यागमं वीर्यवृद्धिं सदैव तथा दानशीलादिमध्ये विलासो।। यह धैर्यवान, शत्रु का नाश करनेवाला, धनवान, बलवान तथा उदार पुरुषों के साथ रहनेवाला होता है।

ढुंढिराज---सुहृद्वर्गनाशं सदा बाहुपीडा भयोद्वेगचिन्ताकुलत्वं विधत्ते। यह मित्रों का नाश करता है। भय, उद्वेग व चिन्ता से व्याकुल करता है। बाहु में पीडा रहती है।

चित्रे---यह लोकप्रिय, बलवान, बान्धवों से युक्त, शत्रु का नाश करनेवाला, पराक्रमी होता है। यह छोटे भाई को कष्ट देता है। कन्धे व कान में रोग होते हैं। वृत्ति गम्भीर होती है। साझीदारी में हमेशा लाभ होता है। प्रवास, भाग्यवृद्धि व स्त्रीसुख पर इस केतु का प्रभाव पडता है---यह केतु शुभ राशि में, स्वगृह में या उच्च हो तो ये सुख मिलते हैं---नीच राशि में हो तो ये सुख नही मिलते। यह बहुत प्रवास और बहुत खर्च करता है। सिंह या धनु में हो तो हृदययोग, बहरापन, कंधे पर आघात से कष्ट होता है। यह वाचन व शास्त्राध्ययन में रुचि रखता है। मीन में हो तो अध्यात्मविद्या में कुशल होता है।

चतुर्थस्थान के फल

अज्ञात---मातृदुःखी नरः शूरः सत्यवादी प्रियंवदः। धनधान्यसमृद्धिश्च यस्य केतुश्चतुर्थगः।। माता का मृत्यु होता है। यह शूर, सच और मीठा बोलनेवाला, तथा धनधान्य से समृद्ध होता है।

ढुंढिराज––चतुर्थे च मातुः सुखं नो कदाचित् सुहृद्वर्गतः पित्ततो नाशमेति। शिखी बन्धुहीनः सुखं स्वोच्चगेहे चिरं नैति सर्वैः सदा व्यग्रता च।। माता तथा मित्रों का सुख नही मिलता। पित्त से कष्ट होता है, बन्धु नही होते। हमेशा चिन्ता रहती है। यह स्वगृह या उच्च में हो तो सदा सुख देता है।

चित्रे––यह केतु वृश्चिक या सिंह में हो तो मातापिता व मित्रों का सुख अच्छा मिलता है। नीच राशि में हो तो धनहानि, देशान्तर का योग होता है। माता रोगी रहती है, सौतेली मां से कष्ट होता है। उच्च राशि में हो तो वाहन सुख मिलता है, यह राजयोग होता है। स्वभाव अस्थिर होता है। धनु या मीन में हो तो अकस्मात उत्तम सुख मिलता है। स्थावर सम्पत्ति के बारे में उदासीनता होती है। दूसरों की आलोचना बहुत करता है अतः लोग इसे कुत्सित वृत्ति का समझते हैं। विषबाधा का भय रहता है। दुर्बल, पित्तप्रकृति, वितण्डवादी होता है।

पांचवें स्थान के फल

अज्ञात––केतौ शठः सलिलभीरुरतीव रोगी यह दुष्ट, बहुत रोगी, पानीसे डरनेवाला होता है।

ढुंढिराज––सुतस्य नाशो यदि पंचमस्थः शिखी सदा भूपभयं करोति। मानक्षयं धर्मकर्मप्रणाशं सदा शत्रुभिर्वादनिन्दा नराणाम्।। पुत्र का नाश होता है। हमेशा राजा से डर रहता है। सन्मान, धर्म, कर्म का नाश होता है। शत्रुओं से वाद और निन्दा होती है।

चित्रे––यह कपटी, मत्सरी, दुर्बल, डरपोक, धैर्यहीन होता है। इसे पुत्र कम व कन्याएं अधिक होती हैं। बन्धु सुखी होते

हैं। पेट में रोग होते हैं। कपट से लाभ होता है। मन्त्रतन्त्र से यह भाइयों का घात करता है। सिंह, धनु, मीन या वृश्चिक में यह केतु अच्छा सुख व ऐश्वर्य देता है। उच्च, स्वगृह में स्वतन्त्र, बलवान हो तो राजयोग, मठाधीश होने का योग होता है। उपदेश प्रभावी होता है। तीर्थयात्रा, विदेश में रहने की प्रवृत्ति होती है।

छठवें स्थान के फल

अज्ञात---पुरेशाधिकारी गृहे रम्यवासी गले पुष्पमाला कुले श्रीर्विशाला। मतिर्मर्दने विद्विषां तस्य मानं भवेद् यस्य षष्ठे गृहे केतुनामा।। यह नगर का प्रमुख अधिकारी, अच्छे घर में विलास के साथ रहनेवाला, शत्रु का नाश करनेवाला, सन्मानित, सम्पन्न कुल में उत्पन्न होता है।

ढुंढिराज---शिखी यस्य षष्ठे स्थितो वैरिनाशो भवेन्मातुलानां च नो मानभंगः। चतुष्पात्सुखं द्रव्यलाभो नितान्तं न रोगोऽस्य देहे सदा व्याधिनाशः।। शत्रु नष्ट होते हैं, मामा का अपमान होता है। चौपाये प्राणी बहुत होते हैं, धन मिलता है, रोग नही होते। तमःपृष्ठभावे भवेन्मातुलान्मानभंगो रिपूणाम्। विनाशश्चतुष्पात्सुखं तुच्छवित्तं शरीरे सदाऽनामयं व्याधिनाशः। मामा का मानभंग, शत्रु का नाश होता है। चौपाये ाणी मिलते हैं। धन कम होता है। शरीर नीरोग रहता है।

चित्रे---यह शत्रु का नाश कर विजयी होता है। मामा से मानभंग व वैर होता है। चौपाये प्राणियों से लाभ व धनप्राप्ति होती है। स्त्री से सुख कम मिलता है, कष्ट रहता है। लोगों को तुच्छ समझ कर बेपरवाह रहता है। अपने आप को सर्वज्ञ समझता

है। यह उच्च या स्वगृह में तो सब प्रकार का सुख देता है। विद्वान, कीर्तिमान होता है। नीच राशि में हो तो अनिष्ट फल मिलता है। खर्च अच्छे कामों में करता है। सत्संग में रहता है। राजा द्वारा सन्मानित होता है। प्रपंच में कष्ट हुआ तो विरक्त हो कर प्रवास करता है। भक्तों में समाविष्ट, चमत्कारिक योग प्रयोग करता है। यह चर्चा में उग्र हो जाता है। भूख तेज रहती है। उच्च में हो तो रूपवान, आनन्ददायक व सन्तुष्टचित्त होता है।

सातवें स्थान के फल

अज्ञात--द्यूने च केतौ सुखं नो रमण्या न मानलाभो वातार्तिरोगः। न मानं प्रभूणां कृपा विकृता च भयं वैरिवर्गाद् भवेत् मानवानाम् ॥ स्त्रीसुख नही मिलता। वातरोग, अपमान, राजा की अवकृपा तथा शत्रुओं से भय होता है।

चित्रे--यह स्त्रीरहित होता है। व्यभिचारी, अस्थिर, प्रवासी, निवासस्थान बारबार बदलनेवाला, व्यसनी, राजा से भयभीत होता है। विधवा, नीच जाति की स्त्री से अवैध सम्बन्ध रखता है। अतिकामुक, अनैतिक कामों में आसक्त होता है।

आठवें स्थान के फल

✓ पं०

अज्ञात--सहोदारकर्मा सहोदारशर्मा सदा भाति केतुर्यदा मृत्युभावे। सहोदारलीलः सहोदारशीलः सहोदारभूषामणिर्मानवानाम् ॥ इस के काम, सुख, खेल, शील, आभूषण के समान श्रेष्ठ होते हैं ॥

चित्रे--इस के पापकृत्य तत्काल प्रकट होते हैं। यह

परस्त्री में आसक्त, नेत्ररोगी, दुराचारी, दीर्घायु होता है। यह मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, कन्या वा धनु में हो तो उत्तम लाभ होते हैं।

नवम स्थान के फल

अज्ञात--गृहे केतुनाम्नि स्थिते धर्मभागे श्रियो राजराजाधिपो देवमन्त्री। नरः कान्तिकीर्त्यादिबुद्ध्यादिदानैः कृपावान् नरो धर्मकर्मप्रवृद्धः ॥। यह राजा अथवा राजा का मन्त्री होता है। कान्ति, कीर्ति, बुद्धि, उदारता से सम्पन्न, दयालु, धार्मिक होता है ॥

चित्रे–यह धर्म बिरोधी, दुराचारी, झूठ बोलनेवाला, विचित्र मत का अनुयायी, क्रोधी, वक्ता, दूसरों की निदा करनेवाला, भाई से झगडनेवाला, शूर, बलवान, अभिमानी होता है।

दसवें स्थान के फल

अज्ञात--नभस्थो भवेद् यस्य मर्त्यस्य केतुर्न तत्सोपमेयः प्रभावो भुवि स्यात्। गडुं डिंडिमाडंबरे शत्रवोऽपि रणप्रांगणे तस्य गायन्ति कीर्तिम् ॥ इस का प्रभाव अतुलनीय होता है। युद्ध में शत्रु भी इस की कीर्ति गाते हैं।

ढुंढिराज--पितुर्नो सुखं कर्मगो यस्य केतुः स्वयं दुर्भगः शत्रुनाशं करोति। रुजो वाहनैः वातपीडा च जन्तोर्यदा कन्यकास्थः सुखी कष्टभाक् च ॥ पिता का सुख नही मिलता। यह दुर्भागी, वाहनों से पीडित तथा वातरोगी होता है। शत्रु का नाश करता है। यदि केतु कन्या में हो तो उसे सुख और कष्ट दोनों मिलते हैं।

चित्रे---यह मीन या धनु में हो उत्तम यश व वैभव मिलता है। मिथुन में वैभव-पद से हटना पडता है। बुद्धिमान, शास्त्रज्ञ, प्रवासी, विजयी होता है। यह जलाश्रय राशि (कुम्भ, कन्या, मिथुन, वृषभ) में हो तो कुछ सौम्य होता है और साधारण फल देता है। व्यापार के लिए यह शुभ नही है। चर राशि में हो तो प्रवास से भाग्योदय होता है।

लाभ स्थान के फल

अज्ञात---यदैकादशे केतुरतिप्रतिष्ठां नरं सुन्दरं मन्दिरं भूरिभोगान्। सदोदारशृंगारशास्त्रप्रवीणः सुधुर्यो धनुर्धारिणां मानकीर्त्या॥ यह प्रतिष्ठित, सुन्दर, घरबार तथा उपभोग से समृद्ध, उदार, शृंगार में निपुण, धनुर्धरों में सम्मानित व कीर्तिमान होता है।

चित्रे---यह मीठा बोलता है। विनोदी, विद्वान, ऐश्वर्यसम्पन्न, तेजस्वी, वस्त्राभूषणों से युक्त, लाभयुक्त होता है। गुदरोग होते हैं। मन में सदा चिन्ता रहती है। परोपकारी, दयालु, लोकप्रिय, शास्त्रों का रसिक, सन्तोषी, राजाद्वारा सत्कृत होता है। यह मेष, वृषभ, कन्या धनु या मीन में हो अथवा गुरु या शुक्र की दृष्टि हो तो शुभफल विशेष मिलते हैं। बुध का योग हो तो व्यापार में अच्छा यश मिलता है। कवि, लेखक, राजमान्य, पशुओं से समृद्ध, मन की इच्छा पूरी करनेवाला होता है। धन अच्छें काम में खर्च करता है। उस से लाभ भी शीघ्र होता है। आलस कम होता है। हाथ में लिया हुआ काम अधूरा नही छोडंता।

व्ययस्थान के फल

अज्ञात——यदा याति केतुर्व्यये मानवोऽसत्प्रयोगात् विधत्ते व्ययं द्रव्यराशेः। नृपाणां वरं संगरे कातरः स्यात् शुभाचारहीनोऽतिदीनो न दाता ॥ यह बुरे काम में खर्च करता है। लडाई में डरपोक, शुभ काम से रहित, दीन, कंजूस होता है।

चित्रे—यह बहुत प्रवास करता है। चंचल, उदार, खर्चीला, ऋणग्रस्त होता है। बुध से युक्त हो तो व्यापार में सफल होता है। कवि, शास्त्रज्ञ, राजा जैसा सम्पन्न होता है। उच्च या स्वगृह में हो अथवा गुरु के साथ हो तो अतिशय योग्य, साधु जितेन्द्रिय वृत्ति का होता है। शुक्र के साथ बलवान हो तो शक्ति-मार्ग का साधक होता है। शुक्र व चन्द्र साथ हों तो व्यभिचारी व पापी होता है।

केतु के इन फलों से स्पष्ट होता है कि ये फल प्रायः राहु के फलों से मिलते जुलते हैं। इसीलिए हमने पहले केतु के फलों का स्वतन्त्र विचार नही किया है ।।

प्रकरण ८ राहु के अन्य ग्रहों से योग

ग्रहणविचार में रवि, चन्द्र व राहु के युति योग के फल दिये हैं। ग्रहण के समय फल तीव्र मिलते हैं। किन्तु प्रतिमास एक बार चन्द्र-राहु की व प्रतिवर्ष एक बार रवि-राहु की युति होती है। इन के फल साधारण मिलते हैं। कोई भी ग्रह चन्द्र-कक्षा के पात में हो तो उस के शुभफल अधिक अच्छे मिलते हैं।

राहु व रवि

ये दोनों शुभ राशि में अन्य ग्रहों से शुभ योग में हों तो तथा १।३।५।१०।१२ इन स्थानों में हों तो---हमेशा मानसन्मान मिलता है। बडा अधिकारपद मिलता है, सत्ताधीश होता है। स्वास्थ्य अच्छा होता है। एक विवाह होता है---स्त्री के साथ प्रेमपूर्वक रहते हैं। सन्तति कम होती है। धन मिलता है किन्तु पूर्वार्जित सम्पत्ति नही रहती, अपने कष्ट से धनार्जन होता है। बुद्धिमान, सावधान, नियमित, व्यवस्थित, शान्त, समाधानी वृत्ति का होता है। हाथ में लिये कार्य को पूरा करता है। यथाशक्ति राजनीतिक वा सामाजिक कार्य कर के प्रसिद्ध होता है। न्याय-अन्याय समझकर सत्य के लिये झगडता है। ईश्वर के सिवाय अन्य किसी से हार नही मानता। बरताव दयालु, प्रेमपूर्ण, महत्त्वाकांक्षा से परिपूर्ण होता है। लोगों पर प्रभाव होता है किन्तु प्रेमपूर्वक, मन अनुकूल कर के कार्य करता है। यह युति २।४।६।७।८।९।११ इन स्थानों में हो तो फल साधारण मिलते हैं। २।४।७ इन स्थानों में---पूर्वार्जित धन नष्ट होता है। दो विवाह होते हैं। उद्योग में अस्थिरता रहती है। कुटुम्ब बहुत बडा होता है। यह युति अशुभ राशि में अशुभ ग्रहके योग में हो तो---वह दुरभिमानी, कुल का झूठा अभिमान करनेवाला, हठी, तामसी, दुराग्रही, आलसी, निरुद्योगी, स्वार्थी, नीच, झगडे, लगानेवाला, मुफ्त खानेवाला, स्वैराचारी, अपवित्र, दुष्ट बुद्धि का, लापरवाह, धूर्त, कनिष्ठों को कष्ट देनेवाला, सच झूठ में फरक न करनेवाला, अच्छे काम बिगाडने में मजा लेनेवाला, अकारण विरोध व शत्रुता करनेवाला होता है। दूसरों की प्रगति इसे

सहन नही होती। बोलना बहुत कठोर व तीखा होता हैं। क्रोधी, चंचल, व्यसनी, पापपुण्य से उदासीन, परस्त्री में आसक्त, कामुक होता है।

राहु व चन्द्र

। ये ग्रह शुभ राशि में अन्य ग्रहों से शुभ योग में हों तो विचार उच्च, परिपक्व होते हैं। संकट बहुत आते हैं, उन का धैर्यपूर्वक मुकाबला करता है। प्रपंच का ध्यान छोड कर यह समाजहित के कार्य करता है अतः लोकप्रिय होता है।। इन्हें स्वतन्त्र व्यवसाय में सफलता नही मिलती। व्यवसाय के विपरीत मनोवृत्ति होती है अतः संकट में कोई उपाय नही कर पाते। नौकरी करने की सलाह इन्हें अच्छी नही लगती। नीतिमान होते हैं। शान्त, समाधानी, एकतापूर्ण वातावरण चाहते हैं। इस में विघ्न हो तो बहुत यत्न कर के दूर करते हैं। बहुत निग्रही, निश्चयी, नियमित होते हैं। अन्याय के प्रतिकार के लिए राजनीतिक, समाजिक या आध्यात्मिक दृष्टि से झगडा चालू रखते हैं। स्त्री अनुकूल होती है। पुत्र एक दो होते हैं, वे अच्छे और पिता के लिए गौरवास्पद होते हैं। यह युति १।३।९ इस स्थानों में अशुभ होती है। हमेशा असफलता, दारिद्रय, ऋणग्रस्त होने से कष्ट होता है। मृत्यु आकस्मिक रीति से होता है।

राहु व मंगल

। इन की युति शुभ राशि में अन्य ग्रहों के शुभ योग में हो तो–१।३।६।१० इन स्थानों में––यह बहुत पराक्रमी, कर्तृत्ववान, अदालती व्यवहार में सफल, साहसी, निन्दा की परवाह न करने-

वाला, सुधारवादी, कार्य पूर्ण करनेवाला, संसार में व्यवहारकुशल होता है। यह दत्तक जाने का योग है।। बडे भाई नही होते। भाईबहिनों का पोषण करना पडता है। बहुविवाहयोग होता है। यह युति अशुभ सम्बन्ध में हो तो विवाहित स्त्री से असन्तुष्ट, व्यभिचारी होते हैं। अदालती व्यवहार में असफल होते हैं। पूर्वार्जित सम्पत्ति नष्ट होती है।। धनस्थान में यह युति शुभ-सम्बन्ध में हो तो सूद के रूप में धनलाभ होता है। उदार स्वभाव के कारण खर्च भी वहुत होता है। स्थावर सम्पत्ति खरीदने के लिए अनुकूलता रहती है—ये जिसे लेना चाहें वह घर-जमीन आदि दूसरे नही खरीद पाते। इन के धन से दुसरे का कल्याण नही होता।। चतुर्थ में यह युति हो तो पूर्वार्जित व स्वकष्टार्जित सम्पत्ति भी नष्ट होती है। चतुर्थ में राहु व दशम में मंगल हो तो निवासस्थान दोषपूर्ण होता है। उस घर में पिशाचबाधा अथवा निरन्तर द्रव्यहानि अथवा सन्तति का घात, स्त्री का घात आदि से कष्ट होता है।। पंचम स्थान में इस युति से सन्तति सम्बन्धी दोष—स्त्री को ऋतुसम्बन्धी रोग होते हैं अथवा सन्तति नष्ट होती है। ऐहिक सौख्य कम मिलता है। सप्तम में—विवाह बहुत देर से होता है। पहली स्त्री से सम्बन्ध ठीक न रहने से दूसरा विवाह होता है। व्यवसाय-नौकरी में स्थिरता नही रहती। अष्टम में—स्वास्थ्य ठीक नही रहता, जादू-रसायन के पीछे सम्पत्ति को नष्ट करते हैं, आयु मध्यम होती है। नवम में—भाईबहन नही होते—एकाध बडा भाई या बहन होती है, छोटे नही होते। व्ययस्थान में—स्त्रीसुख नही मिलता, रक्तपित्त, कोढ, विषबाधा की सम्भावना होती है। राहु सर्प के समान व मंगल न्योले के समान है अतः मंगल के प्रभाव से विष घातक

नही हो पाता । डाक्टर की मदद से या वमन हो कर विष से छुटकारा मिलता है ।

राहु व बुध

इन की युति शुभ राशि में शुभ सम्बन्ध में हो व १।३।५। ९।१०।११ स्थानों में हो तो बुद्धिमत्ता अच्छी होती है। किसी भी विषय को सूक्ष्मता से समझना, संशोधन, गहन विचार, विस्तृत ग्रहणशक्ति, दूरदृष्टि से सम्पन्न होते है। इन्हें शिक्षा की अवधि में पहली श्रेणी नही मिलती। यह युति अशुभ सम्बन्ध में हो तो शिक्षा अधूरी रहती है। बुद्धि चंचल, बरताव विक्षिप्त व अस्थिर, स्वभाव घमंडी होता है। खुद को होशियार व दूसरों को मूर्ख समझते हैं। इस का क्रोध क्षणिक होता है। अन्य स्थानों में यह योग हो तो बुद्धि शान्त, समाधानी होती है। शिक्षा नही होती, व्यवसाय में स्थिरता नही होती। दो विवाह होते हैं। ये क्रोध में बहकते नही, मित्र काफी होते हैं। इन स्थानों में अशुभ सम्बन्ध में यह योग हो तो मस्तिष्क के विकार होते हैं-- फिट आना, भ्रम, पागलपन, निद्रानाश, बालग्रह, सूखा, स्मरणशक्ति नष्ट होना, हिस्टेरिया आदि की सम्भावना होती है।

राहु व गुरु

इन की युति शुभ सम्बन्ध में हो तो सन्मान बहुत मिलता है। अधिकार की इच्छा न होते हुए भी अधिकार मिलता है। लोकप्रिय हो कर विधानसभा आदि का सदस्य चुना जाता है। बुद्धिमान, व्यासंगी, होशियार होता है। यह युति १।५।९।१० स्थानों में बहुत अच्छा फल देती है। २।४।७।११ में कुछ कम फल मिलता है। सम्पत्ति अच्छी मिलती है, शिक्षा कम होती

है। ३।६।८।१२ इन स्थानों में सम्पत्ति कम, शिक्षा अधिक होती है। पराशर के मतानुसार राहु व गुरु धनु या मीन में हों और गुरु षष्ठ या अष्टम का स्वामी हो तो अल्पायु का योग होता है। इस के टीककार ने यह अर्थ किया है कि राहु व गुरु लग्न में धनु या मीन में हों तो अरिष्ट योग होता है--द्वयं राहुयुक्त-गुरुरिति यस्य जन्मलग्न धनुर्मीनराहुरस्ति तत्र राशिगते गुरौ रिष्टसम्भवो वाच्यः। तत्त्रिकोणे वा अथवा यत्रकुत्र राशौ राहु-युक्तो गुरुरस्ति तत्र राशिगते शनौ अरिष्टसम्भवो वाच्यः॥ त्रिकोण में अथवा अन्यत्र राहु के साथ गुरु हो व शनि भी हो तो अरिष्ट का योग होता है। अष्टमस्थान में धनु या मीन में राहुगुरुयुति हो तो अल्पायु होना सम्भव है। साधारणतः गुरु ब्राह्मण वर्ण का और राहु चाण्डाल जाति का माना जाता है अतः इन की युति गुरुचाण्डाल योग के रूप में अशुभ मानी जाती है। किन्तु अनुभव में यह शुभ फल देने-वाली सिद्ध हुई है। इन ग्रहों के युति या प्रतियोग के फल-स्वरूप कोई व्यक्ति बहुत धनी या कीर्तिमान हो तो उस के वंशजों की स्थिति प्रायः बिगडते जाती है। इस पुरुष को कीर्ति मिली हो व द्रव्य न मिला हो तो अगली पीढी के लोग शिक्षा पूरी कर अच्छा धनार्जन करते हैं यद्यपि उन्हें कीर्ति नही मिलती।

राहु व शुक्र

इन की युति शुभ सम्बन्ध में हो तो विवाह आकस्मिक होता है। स्त्री निर्धन तथा सम्बन्धीरहित घर की होती है। स्त्रीसुख अच्छा मिलता है। पति के पहले पत्नी का मृत्यु होता

है । यह परस्त्री से पराङ्मुख होता है । यह युति ३।६।७।८।१२ इन स्थानों में अशुभ होती है । एक स्त्री से चिरकाल सुख नहीं मिलता । व्यवसाय में कठिनाइयां आती हैं । विवाह के बाद आर्थिक कष्ट होता है ।

राहु व शनि

इन की युति शुभ सम्बन्ध में हो तो बुद्धि गहरी, परिपक्व, गूढ, अगाध होती है । बरताव लोकविलक्षण होता है । व्यवसाय में चतुराई से बहुत धन मिलता है । बैन्क, कारखाने, कम्पनियां, शेयर-बाजार, सट्टा, विदेश-व्यापार आदि से कीर्ति व धन मिलता है । दयालु, शान्त, जन्मजात श्रेष्ठता से विभूषित होता है । खास शिक्षा के बिना ही विद्वान के रूप में प्रसिद्ध होता है । व्यवहारकुशल, न्याय को समझनेवाला, लोगों की सुनकर अपने मन की करनेवाला होता है । थोडा किन्तु मार्मिक बोलता है, काम अधिक करता है । परोपकारी, आत्मविश्वासी कर्तृत्ववादी, दैववाद का विरोधक, महत्त्वाकांक्षी, प्रभावशाली होता है । हजारों लोगों के रोजगार का प्रबन्ध करता है । सामाजिक व शिक्षाविषयक क्षेत्र में दान द्वारा कीर्ति मिलती है । क्रान्ति के इच्छुक, अध्यात्मप्रेमी, संस्थाओं के स्थापक होते हैं । यह युति मध्यम रूप में हो तो वे लोग अपने काम में मग्न, लोगों से अलग रहते हैं । शान्त रीति से नौकरी या साधारण व्यवसाय करते हैं । स्त्री-पुत्रों का सुख अच्छा मिलता है । सूद, रेस में एजन्ट (बुकी), इंजिनियरिंग, वॉटरवर्क्स, प्लम्बिंग द्वारा धनार्जन होता है । यह युति अशुभ हो तो व्यवसाय में या नौकरी में हमेशा, हानि, दीनता, सदा कर्ज रहना, एक के पीछे

एक आपत्ति, दूसरों की हानि करनेकी इच्छा ये फल होते है। यें लोग अपने ही घर का नुकसान करते हैं। अमिष्ट, पैशाचिक वृत्ति के धर्म छोडनेवाले, भाषण में क्रूर व अश्लील होते हैं। दूसरों को ताने देकर कष्ट देते हैं। खुद को होशियार, दूसरों को मूर्ख समझते हैं। दूसरों पर आश्रित रहते हैं, समाज के अच्छे काम में विघ्न लाते हैं। निन्दा में निपुण, लोभी, परद्रव्य के इच्छुक, मत्सरी, क्रोधी, अकारण अपकार करनेवाले, व्यभिचारी, अविचारी होते हैं। इन के घर में किसी को भूत प्रेत की बाधा होती है। (राहुकेतुसमायुक्ते बाधा पैशाचिकी स्मृता-सर्वार्थ-चिन्तामणि)।

यह युति लग्न में मेष, सिंह धनु, कर्क, वृश्चिक या मीन में हो तो दीर्घायु होता है।। बचपन में माता या पिता का मृत्यु होता है। बचपन दुःखमय होता है। उपजीविका में विघ्न होते हैं। दूसरे विवाह के बाद भाग्योदय शुरू होता है। पुत्रसन्तति में विघ्न होते है। प्रगति करते है। अन्य राशियों में अशुभ फल होते हैं। धनस्थान में शुभ राशि में अन्य ग्रहों से शुभ सम्बन्ध में हो तो एक विवाह, सन्तति बहुत, पूर्वाजित धन की वृद्धि होती है। यह व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी अधिक करता है। अन्य ग्रहों से अशुभ योग हो तो पूर्वाजित सम्पत्ति नही मिलती। बचपन मामा या मौसी के घर बीतता है। बहुभार्यायोग होता है। वरिष्ट अधिकारी की कृपा से नौकरी में तरक्की होती है। सन्तति बहुत होती है। दुसरे विवाह के बाद भाग्योदय हो कर पेन्शन के वाद सुखपूर्वक रहते हैं। घर, स्थावर सम्पत्ति अर्जित करते हैं। तृतीय स्थान में शुभ सम्बन्ध में हो तो २६ वें वर्ष तक बहुत कष्ट रहता है। बचपन में माता की व थोडे ही बाद

पिता की मृत्यु होती है। भाई के साथ बटवारा होता है। बटवारा नही हुआ तो एककी प्रगति रुकती है। धीरेधीरे भाग्योदय हो कर अन्त तक कायम रहता है। स्वभाव शान्त होता है। विवाह एक, नौकरी या व्यवसाय में स्थिरता ये फल मिलते हैं। चतुर्थ स्थान में शुभ सम्बन्ध में हो तो धन या पुत्र-सन्तति में एक की प्राप्ति होती है। पिता अल्पायु, माता दीर्घायु होती है। वडे व्यवसाय में लाभ, दान से कीर्ति प्राप्त होती है। धन व कीर्ति के साथ पुत्रलाभ नही होता अतः दूसरा विवाह करते हैं। दत्तक लेने का सम्भव होता है । बडी संस्थाओं को विपुल दान देते है। उदार होते हैं किन्तु आलसी लोगों या अविश्वसनीय संस्थाओं को विलकुल मदद नही करते। बुद्धिमान, व्यवहार कुशल, प्रसंगावधानी, बहुश्रुत, व्यासंगी होते हैं। खानें, इंजिनीयरिंग, खेती, बिल्डिग, लोहा-चूना, पत्थर मिट्टी, बालू, विदेशी यन्त्र, स्थावर सम्पत्ति के दलाल आदि के व्यवसाय में विपुल धन मिलता है। इन्हें अपनी मृत्यु का पहले आभास मिलता है। पंचम स्थान में यह युति हो तो विवाह में विलम्ब, दो विवाह, बहुत सन्तति होकर दो तीन ही जीवित रहना, अच्छा ऐहिक सुख, कीर्ति, विक्षिप्त स्वभाव, कथनी-करनी में अन्तर, पहले स्वार्थ-फिर परमार्थ, अविश्वासी स्वभाव, जगत को विरोधी समझना, वृद्ध वय में पत्नी-पुत्रों का विरोध ये फल मिलते हैं। षष्ट स्थान में-विरोध बहुत होता है, अन्तमें शत्रु नष्ट होते हैं। विचित्र रोग, सर्दी, सन्धिवात आदि होते हैं। तरुण वय में ही स्त्री की मृत्यु होती है। अधिकार, धन, सन्मान मिलता है। वृद्ध वय में शारिरिक कष्ट बहुत होता है । कोई आनुवंशिक रोग रहता है । सप्तम स्थान में-दो विवाह की प्रवृति

होती है। दूसरे विवाह के बाद व्यवसाय में बहुत लाभ होता है। एक ही विवाह हो कर सन्तति हुई तो धनलाभ नही होता। बड़े व्यवसाय में बहुत लाभ होता है। किन्तु फिर हानि भी होती है। पतिपत्नी में कलह नही होता, वृद्ध वय में पत्नी का प्रभुत्व होता है। पुत्रों का विरोध होता है। पूर्व आयु में सुख व उत्तर आयु में दारिद्रय का योग होता है। यह बात ४-५ पीढी तक चलती है जो कुल के किसी स्त्री के शाप का परिणाम होता है। अष्टम स्थान में–स्त्री दरिद्र कुटुम्ब की होती है। अपने कष्ट से प्रगति करनी पडती है। धन काफी मिलता है व खर्च भी होता है। उत्तर आयु में दारिद्रय होता है। दीर्घायु होते हैं। मृत्यु का आभास पहले मिल जाता है। यहां कर्क व सिंह राशि में शुभ फल मिलते हैं, अन्य राशियों में साधारण फल मिलते हैं। नवमस्थान में–यह पिता का सब से बडा या छोटा पुत्र होता है। शिक्षा पूरी होती है। विवाह से इच्छापूर्ति नही होती, विजातीय या बडी स्त्री से प्रेम करते हैं। मेष, सिंह, धनु, कर्क, वृश्चिक, मीन व मिथुन में–शिक्षा के लिए विदेश प्रवास होता है। भाग्योदय ३२ वें वर्ष से शुरू हो कर ४८ वें वर्ष बहुत उन्नति होती है। दशमस्थान में–पूर्व वय में कष्ट रहता है। बाद में अच्छी प्रगति होती है। ३६ वें वर्ष से भाग्योदय होता है। विवाह अधिक होकर भी सन्तति कम होती है, क्वचित सन्तति नही होती। कीर्ति बहुत मिलती है। लाभ स्थान में–धन अच्छा मिलता है। लोभी होता है। सन्तति में बाधा होती है। लोगों में निन्दा होती है। व्ययस्थान में–जन्म समय की स्थिति से काफी तरक्की करते हैं। अधिकार व सम्पत्ति के लिए बुरे मार्गों का उपयोग करता है, खून, विषप्रयोग से भी नही डरता है। बाद में ये सब-

बातें छुपाने के लिए बहुत दानधर्म करता है। पुत्र कम-एक या दो होते हैं। एक पुत्र की पिता के पहले मृत्यु होती हैं। स्त्री से हमेशा झगडा होता है। बड़े व्यवसाय में कीर्ति मिलती है, विदेश प्रवास होता है।

इस प्रकरण में राहु की अन्य ग्रहों के साथ युति के फल दिये हैं। केन्द्र व प्रतियोग में भी ये फल मिलते हैं। धन, षष्ठ, अष्टम व व्यय में प्रतियोग के तथा तृतीय, पंचम, षष्ठ, अष्टम नवम व व्यय में केन्द्रयोग के फल विशेष तीव्र मिलते हैं।

प्रकरण ९ राहु का द्वादशभावगत भ्रमण

राहु राशिचक्र में उलटी परिक्रमा करता है—लग्न—व्यय—लाभ—दशम इस क्रम से भ्रमण करता है। भ्रमण के फल देखते समय मूल कुण्डली में रवि व चन्द्र के साथ राहु के सम्बन्ध शुभ हैं या अशुभ यह देखना चाहिए। मूल सम्बन्ध शुभ हो तो भ्रमण के फल शुभ मिलते हैं, अशुभ हो तो अशुभ मिलते हैं।

लग्नस्थान—वृषभ, कर्क, सिंह, वृश्चिक, मकर या मीन लग्न में राहु का भ्रमण मन को शान्ति देता है, वृत्ति गम्भीर होती है, बडे व्यवसाय की योजना बनती है, यश मिलता है। अच्छे कामों से लोगों पर प्रभाव रहता है। धनी स्त्री से सम्बन्ध आता है। लोग मदद करते हैं। व्यवसाय ठीक चलता है। लोगों के विवाह, उपनयन आदि में मदद होती है।। मेष, मिथुन, कन्या, तुला, धनु, कुम्भ लग्न में राहु का भ्रमण हो तो स्त्री-पुत्र बीमार होते हैं। व्यवसाय में व छोटे कामों में भी असफल होता है। मन अशान्त, विक्षिप्त होता है। स्मरणशक्ति दुर्बल होती है। अपने नुकसान के काम करता है, लोग गलती बतायें तो

मानता नही । थोडे से संकट से घबराता है। मन दुर्बल, मस्तिष्क भ्रमिष्ट होता है । पेट में दर्द, पित्तविकार होता है ।

व्ययस्थान--वृषभ, कर्क, सिंह, वृश्चिक, मकर व मीन में इस स्थान में राहु का भ्रमण हो तो, कर्ज दूर होता है,। प्रवास बहुत होता है, नये परिचयों से लाभ होता है, स्त्री को साधारण शरीरकष्ट रहता है, अच्छे काम होते हैं । व्यवसाय ठीक चलता है, नौकरी में तरक्की होती है, कीर्ति मिलती है । अन्य राशियों में--व्यवसाय में दिवाला निकलता है । मूल कुण्डली में द्विभार्या योग हो तो इस समय पत्नी की मृत्यु होती है । हमेशा कर्ज लेने से अपमान होता है। लोगों का विश्वास नही रहता । घर में किसी स्त्री को पिशाचबाधा होती है । स्त्री के साथ झगडे होते हैं । अपने लोगों से विरोध बढता है । खर्च बहुत होता है । लोगों का कर्ज चुकाना पडता है किन्तु इन की बाकी वसूल नही होती । घडी, फाउन्टन पेन, पाकिट, जूते, छाते, कपडे आदि चुराये जाते हैं ।

लाभस्थान--वृषभ, कन्या, कर्क, सिंह, वृश्चिक, मकर व मीन में भ्रमण हो तो व्यवसाय अच्छा चल कर लाभ होता है । कन्या होती है । अनपेक्षित मदद मिलती है । चुनाव में जीतते हैं । अपने काम छोड कर परोपकार में समय बिताते हैं । किसी लावारिस का धन मिलता है । काम पूरे हो कर कीर्ति मिलती है ।।अन्य राशियों में भ्रमण से व्यवसाय में भ्रम से नुकसान होता है । लेनदेन में झगडों से हानि होती है । सन्तति को कष्ट, चुनाव में हार, कामों में असफलता, विघ्न आदि से कष्ट होता है ।

दशमस्थान---वृषभ, कर्क, सिंह, कन्या, मकर, वृश्चिक व मीन में भ्रमण हो तो लोगों की सहानुभूति से चुनाव में जीत, उद्योग में सफलता, लाभ में वृद्धि, नौकरी में तरक्की, अकस्मात पद-वृद्धि, बडों की मदद, इस्टेट में वृद्धि, बडे कामों सफलता, कीर्ति, अदालती मामलों में जीत, अधिकारियों की अनुकूलता आदि फल मिलते हैं। अन्य राशियों में भ्रमण हो तो नौकरी में हानि, सरकारी धन का अपव्यय, अधिकारी की प्रतिकूलता, कनिष्ठों का असन्तोष, मानहानि, व्यवसाय में दिवाला, पुत्र का मृत्यु आदि से कष्ट होता है।

नवमस्थान---वृषभ, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन में भ्रमण हो तो प्रवास, विवाह की सम्भावना, विदेशयात्रा, तीर्थयात्रा, पत्नी की अनुकूलता, भाईबहिन का विवाह, अध्ययन से कीर्ति होती है। अन्य राशियों में–भाई या बहिन का मृत्यु बहिन का वैधव्य, भाईबहिन को कष्ट, बेकारी, नीच स्त्री से सम्बन्ध से बेइज्जती, भाइयों में झगडा हो कर बटवारा आदि फल मिलते हैं।

अष्टमस्थान---वृषभ, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर व मीन में भ्रमण हो व मूल कुण्डली में आकस्मिक लाभ का योग हो तो इस समय रेस, सट्टा, जुआ, लाटरी, शेअर आदि में या स्त्री सम्बन्ध से आकस्मिक लाभ होता है। पुत्र होता है। किन्तु अल्पायु होता है। लावारिस का धन मिलता है। अन्य राशियों में–शारीरिक कष्ट, आर्थिक अडचनें, मानसिक अशान्ति, ऐहिक सुख में विघ्न, धनहानि आदि से कष्ट होता है।

सप्तमस्थान---वृषभ, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर व मीन में भ्रमण हो तो व्यवसाय में आकस्मिक वृद्धि, लोगों से मदद मिलना, भाई से सहायता, स्त्रीसुख की प्राप्ति ये फल मिलते हैं। कन्या होती है। अन्य राशियों में--स्त्रीपुत्रों की बीमारी, व्यवसाय बन्द होना, कर्ज होना, लोगों का विश्वास न रहना, कर्ज के लिए अदालत के मामले होना, बंटवारा, नौकरी में नुकसान, स्थानान्तर, स्त्री सम्बन्धी अपवाद आदि से कष्ट हो कर लाभ में विघ्न आते हैं।

षष्ठस्थान---वृषभ, कर्क सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर व मीन में भ्रमण हो तो अदालती मामलों मे यश, शत्रु का नाश, चिन्ता दूर होना' व्यापार में वृद्धि, कर्ज दूर होना, स्त्रीसुख की प्राप्ति, पुराने मित्रों से व स्त्री सम्बन्धों से लाभ, खेलों में सफलता आदि फल मिलते है। अन्य राशियों में--अपने लोगों का विरोध, विश्वासघात, गुप्त शत्रुओं में वृद्धि, व्यवसाय में हानि, कर्ज होना, अचानक नुकसान, स्त्री को शारीरिक कष्ट, स्त्री के मृत्यु की सम्भावना, पुराने साहूकारों का तकाजा, कोढ आदि रोग, अदालती मामलों में हार, खेलों में हार आदि फल मिलते हैं :

पंचमस्थान---वृषभ, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर व मीन में भ्रमण हो तो सन्तति होना, कीर्ति दायक काम होना, शिक्षा पूरी होकर डिग्री मिलना, विवाह की सम्भावना, जीविका का आरम्भ आदि फल मिलते हैं। अन्य राशियों में सन्तति की मृत्यु, गर्भपात, भ्रम, पागलपन, सन्तति व स्त्री को शारीरिक

समय स्त्रीसुख न मिलना, भाग्योदय शुरू होते ही विघ्न, पति-विवाद झगडे, पत्नी के बारे में सन्देह, अपवाद, अपकीर्ति, लाक कष्ट व्यवसाय में अरुचि, मित्रों का विरोध आदि फल मिलते हैं।

चतुर्थस्थान---इस स्थान में सभी राशियों में राहु का भ्रमण अनिष्ट है। आपत्ति, अस्थिरता, विरक्त भाव, घर में झगडे, शारीरिक कष्ट, पेट में दर्द, नौकरी में विघ्न, व्यवसाय बन्द होना, माता को शारीरिक कष्ट, स्थावर सम्पत्ति की हानि, आदि फल मिलते हैं।

तृतीयस्थान---वृषभ, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर व मीन में भ्रमण हो तो चित्त में समाधान, विघ्न दूर होकर काम पूरे होना, आत्मविश्वास, बडे कामों की पूर्ति, इच्छाओं की पूर्ति, समाज व व्यवसाय में मान्यता, सन्मान, योग्यता में वृद्धि ये फल मिलते हैं।|अन्य राशियों में भाइयों में झगडा, बटवारा बहिनों का वैधव्य, अथवा भाईबहिनों को शारीरिक या आर्थिक कष्ट, प्रवास में कष्ट, पड़ोसियों से तकलीफ, बयानों या गवाहियों में झूठेपन का आरोप, आदि अशुभ फल मिलते हैं।

द्वितीयस्थान---वृषभ, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर व मीन में भ्रमण हो तो धनलाभ, बडे व्यवसाय, स्थावर सम्पत्ति गिरवी रखी हो तो मुक्त होना, आदि शुभ फल मिलते हैं। अन्य राशियों में—अदालती मामलों में नुकसान, सबूत मिलने में देरी, व्यवसाय के लिए कर्ज, स्थावर सम्पत्ति गिरवी रखना, अन्त में स्थावर सम्पत्ति बेच देना, घर में स्त्रियों का व गांव के लोगों का विरोध आदि फल मिलते हैं।

भ्रमण में अन्य ग्रहों की युति के फल मकर

जन्मस्थ राहु से गोचर राहु की युति हो तो अ, लोगों संकट, अकारण लोगों का विरोध, व्यवसाय या नौकरी में फल, दांत व पेट के रोग, घर में बीमारी, प्रवास, स्थानान्तर आदि से कष्ट होता है। रवि से राहु का भ्रमण हो तो वरिष्ठ लोगों का रोष, अपमान, मन में उद्विग्नता, शारीरिक कष्ट, व्यवसाय में अडचनें आदि फल मिलते हैं। ये फल २।४।५।८।१२ इन स्थानों में तीव्र होते हैं, तथा आगे पीछे तीन महीनों तक मिलते हैं। चन्द्र से राहु का भ्रमण हो तो मन में विरक्ति, असमाधान व्यवसाय में नुकसान होने से नौकरी की जरूरत होना, बेइज्जती आदि फल मिलते हैं। ३।६।७।८।१०।१२ इन स्थानों में तीव्र फल मिलते है, तथा आगे पीछे पांच महीनों तक मिलते हैं। चन्द्र राहु पर से भ्रमण करता हो वे २। दिन भी असमाधान, आर्थिक कष्ट, साहूकार का तकाजा आदि से तकलीफ होती है। किन्तु चन्द्र अगली राशि में जाने पर अच्छा फल देता है। मंगल से राहु का भ्रमण हो तो खर्च बढना, व्यसनों से इस्टेट की हानि, अदालती मामलों में नुकसान, बुरे कामों में रुचि, गुप्त रोग, कमर, पीठ में रोग ये फल मिलते हैं। २।४।७।८।१२ इन स्थानों में तीव्र फल मिलते हैं। मंगल राहु पर से ४५ दिन में भ्रमण करता है। इन में २० दिन बहुत कष्ट के होते हैं। बुध से राहु का भ्रमण हो तो बुद्धि में विकृति, बयान व गवाही झूठी सिद्ध होना, स्मरणशक्ति नष्ट होना आदि फल मिलते है। २।३।५।६।८।१२ स्थानों में पुरुष राशि में बुध हो तो विशेष कष्ट होता है। स्त्री राशि में अकेला बुध हो तो लेखक, कवि, उपन्यासकार, नाटककार, ज्योतिषी, विद्यार्थी आदि को यह

समय अच्छा रहता है। गुरु से राहु का भ्रमण हो तो आकस्मिक विवाह, स्त्री से अच्छे सम्बन्ध, नौंकरी में तरक्की, व्यवसाय में लाभ, कीर्ति, चुनाव में जीत, विवाह हुआ हो तो पुत्रसन्तति, बड़ों के परिचय से लाभ, परीक्षा में सफलता, लेखन में यश व कीर्ति ये फल मिलते हैं। शुक्र से राहु का भ्रमण हो तो स्त्रीपुत्रों की बीमारी, धनहानि, घर में स्त्रियों को भूतबाधा, शारीरिक कष्ट, गुप्त रोग ये फल होते हैं। २।४।६।८ इन स्थानों में फल तीव्र होते हैं। शनि से राहु का भ्रमण हो व शनि या राहु केन्द्र या त्रिकोण में हो तो व्यवसाय बन्द होना, दिवाला निकलना, कर्ज, बेइज्जती, नौकरी में हानि, वरिष्ठों की अवकृपा, स्त्री पर संकट, पुत्र का मृत्यु आदि फल मिलते है। अन्य स्थानों में अशुभ फल कम होते हैं। केन्द्र या त्रिकोण मे पुरुष राशि में शनि या राहु हो तो तीव्र फल मिलते हैं।

भावाधिपति के राहु से योग

लग्नेश से युति १।५।९।११ स्थानों में हो तो सन्तति जीवित न रहना, गर्भपात, शिक्षा में रुकावट, विक्षिप्त स्वभाव तीव्र बुद्धि, अच्छी स्मरणशक्ति ये फल होते हैं। लग्नेश रवि चन्द्र, मंगल या गुरु हो तो शुभ फल व शनि, बुध या शुक्र हो तो अशुभ फल मिलते हैं।

धनेश से युति हो तो दत्तक योग, स्त्री बीमार रहना, कुटुम्ब में अस्वस्थता, बडों के मृत्युयोग, व्यसन, पैतृक संपत्ति का नाश, व्यवसाय में आकस्मिक संकट, यश के लिए दीर्घ काल कष्ट, मानसिक कष्ट, व्यवसाय में उलझनें, कर्ज ये फल मिलते हैं।

तृतीयेश से युति हो तो प्रयत्न से प्रगति, उस के पहले मातापिता का मृत्यु, भाई दत्तक जाना, भाई या बहिन का अकस्मात मृत्यु, तृतीयेश ग्रह के उदयं वर्ष से भाग्योदय ये फल होते हैं। चतुर्थेश से युति हो तो माता व पुत्रों को कष्ट, एक भाई की मृत्यु, सदा असफलता, साझीदारी में विश्वासघात होना ये फल हैं।

पंचमेश से युति हो तो पुत्र जीवित न रहना, शिक्षा में रुकावट, तीव्र किन्तु विक्षिप्त बुद्धि, अस्थिरता, स्त्रीसुख कम होना, स्त्री सुन्दर किन्तु झगडालू मिलना, दो विवाह, खुद को कष्ट, सन्तति का भाग्योदय ये फल मिलते हैं।

षष्ठेश से युति हो तो हमेशा अदालती मामलों में उलझनें जीवनभर कष्ट, विविध रोग, संसार में कठिनाई ये फल होते है।

सप्तमेश से युति हो तो स्त्री से कष्ट, झगडे, अवैध स्त्री सम्बन्ध से सुख व धनलाभ, जीविका में रुकावटे, व्यसन, अदालती मामलों में उलझना, बहुत प्रवास ये फल हैं।

अष्टमेश से युति हो तो दीर्घकालीन रोग, अकस्मात मृत्यु होता है। अष्टमेश गुरु से २।४।८ स्थानों में युति हो तो स्त्री सुख कम मिलना, पुत्रों का मृत्यु, बडे भाई का मृत्यु, अकस्मात धनलाभ, दत्तक हो कर श्रीमान बनना ये फल होते हैं।

नवमेश से युति हो तो धर्म श्रद्धा नष्ट होना, सुधारवादी विचार, पुनर्विवाह, बहुत प्रवास, शिक्षा थोडी व जीविका में शिक्षा का उपयोग न होना ये फल है।

दशमेश से युति हो तो पुत्र न होना या बहुत देर से होना धीरेधीरे प्रगति, कीर्ति, उद्योग में स्थिरता, प्रयत्नवादी किन्तु प्रसंगवश दैववादी व निरुद्योगी होना, दो विवाह ये फल हैं।

लाभेश से युति हो तो बारबार लाभ, लोगों में गलत-फहमी, लोगों में प्रमुख स्थान, पितापुत्र में अनबन, प्रसंग के विपरीत बुद्धि ये फल हैं।

व्ययेश से युति हो तो अचानक खर्च, जमानत डूबना, विवाहित स्त्री से अच्छे सम्बन्ध, अवैध स्त्री सम्वन्ध से नुकसान, उद्योग के लिए विदेशगमन, भाईबहिन व कुछ पुत्रों का मृत्यु मातापिता का मृत्यु ये फल हैं।

प्रकरण १० वंशानुगत फल विचार

मनुष्य की शुभाशुभ परिस्थिति में उस के वंश की स्थिति का भी बडा परिणाम होता है, इस वंशानुगत फल का विचार राहु की स्थिति से करना चाहिए। विख्यात ब्रिटिश ज्योतिषी ई: एच् बेलीने लन्दन के ब्रिटिश जर्नल आफ एस्ट्रालाजी (मार्च एप्रिल १९३५) में यही विचार व्यक्त किया है। इस पद्धति का एक उदाहरण देते हैं। एक क्ष व्यक्ति—जन्म शक १८४३ श्रावण शु० ६ की सुबह, मंगलवार ता० ९–८–१९२१ स्थान अक्षांश १५–५२ रेखांश ७४–३४ इष्ट घटी ५९–३०।
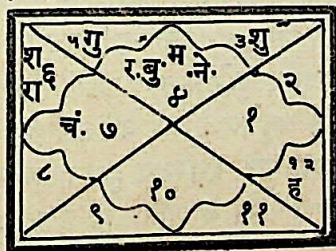
इस व्यक्ति के दादा के १२ वें वर्ष में उनके पिता का मृत्यु हुआ । पिता थे तब तक बहुत वैभव था । उस के तुरन्त बाद एकदम दारिद्रय हुआ और वह तीन पीढी तक कायम रहा । प्रत्येक पीढी में पूर्ववय में थोडा सुख किन्तु मृत्यु के समय भयंकर दारिद्रय रहा । बहुत प्रयत्नों के बावजूद असफल जीवन रहा । जैसे तैसे उदरनिर्वाह चला पर दादा के समय का बडा व्यवसाय नष्ट हो कर नौकरी करनी पडी तथा उस में भी कर्ज होकर भयानक दारिद्रय हुआ । इस के स्पष्टीकरण के लिए हम इस व्यक्ति की कुण्डली में राहु के स्थान को उसके दादा का लग्नस्थान मानकर विचार करते हैं । यह कुण्डली इस प्रकार होगी–
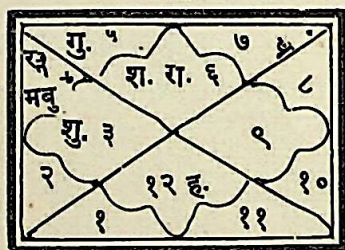
राहु के भ्रमण के अनुसार इस कुण्डली में भी राशियों का क्रम उलटा रखा है । अब इस कुण्डली से इस व्यक्ति के दादा का फलवर्णन कर सकते हैं । लग्न में कन्या है, लग्नेश बुध तृतीय में रवि, मंगल, नेपच्यून से युक्त है– लग्नेशे तृतीये षष्ठे सिंहतुल्यपराक्रमी, सर्व-सम्पद्युतो मानी, द्विभार्यो मतिमान् सुखी ।। पराक्रमी, धनवान, मानी, बुद्धिमान, सुखी होकर दो विवाह होते हैं– इस फल का अनुभव ६० वें वर्ष तक पूर्ण रूप से मिला । किन्तु बाद में मृत्यु तक पूर्ण दारिद्रय हुआ, अन्त्य संस्कार भी दूसरों को करना पडा । लग्न में शनि-राहु हैं अतः वर्ण सांवला,

कद ऊंचा, छरहरा बदन, स्वभाव हठी, प्रभावी, बुद्धि गहन, दुरदृष्टि, बरताव सरल, व्यवस्थित, उदार, परोपकारी हुए। कन्या लग्न व्यापार के अनुकूल रहा। मुसद्दी, न्याय को समझने-वाले, चतुर, अतः कई साल तक ज्यूरर व असेसर रहे। माता का मृत्यु दूसरे वर्ष व पिता का बारहवें वर्ष हुआ। धनेश रवि तृतीय में मंगल, बुध, नेपच्यून के साथ है तथा धनस्थान में गुरू है–धनस्थाने गुरुर्यस्य अतिकष्टात् धनागमः–धनप्राप्ति कष्ट से होना इस का भी अनुभव मिला, जन्म समय अच्छी स्थिति थी वह नष्ट होकर स्वकष्ट से धनार्जन हुआ, और वह धन भी वृद्धवय में कायम नही रहा, बचपन में चाचा ने सब इस्टेट हडप ली (उन्हें भी अन्त में द्रारिद्रच ही मिला), गुरु के कारण सरल मार्ग से धनार्जन किया, बुरे मार्ग से दूर रहे, परोपकार किया किन्तु उस धन का संग्रह नही हो सका। तृतीय में धनेश रवि मंगल से युक्त है–धनेशे तृतीये तुर्ये विक्रमी मतिमान् गुणी। परदाराभिगामी च निश्चलो देवभक्तियुत् ॥ पराक्रमी, बुद्धिमान, गुणवान, परस्त्री में आसक्त, देवताओं में भक्तिमान होना–इस फल का अनुभव पूरा मिला। तृतीयेश चन्द्र व्ययमें है–तृतीयेशे व्यये भाग्ये स्त्रीभिर्भाग्योदयो भवेत्। पिता तस्य महाचौरो सुसेवी दुःखदा सती। स्त्रियों से भाग्यवृद्धि होना, पिता चोर होना, स्त्री को कष्ट होना– ये फल भी ठीक मिले। तृतीय में रवि, मंगल, नेपच्यून, बुध हैं अतः प्रसंगावधान, स्फूर्ति रही, सौतेली मां आई, व्यापार के लिए प्रवास बहुत हुआ, भाई नहो थे, एक बडी व एक सौतेली बहिन थी, बडी बहिन को एक कन्या होने पर वैधव्य हुआ, लंगड़ी हुई अतः भाई को पोषण करना पडा। अपने पराक्रम से प्रगति हुई। चतुर्थेश बुध तृतीय

में है—सुखेशे तृतीये लाभे नित्यरोगी धनी भवेत् । उदारो गुणवान दाता स्वभुजार्जित वित्तवान् ।। यह धनवान, उदार, गुणवान, अपने कष्ट से धनार्जन करनेवाला होता है—यह फल अनुभव से ठीक रहा, सिर्फ रोगी होना इस का अनुभव नही मिला । चतुर्थ में मिथुन में शुक्र है अतः व्यापार में प्रवृत्ति हुई, शुक्र दूषित है अतः पैतृक संपत्ति नही मिली । चन्द्र के चतुर्थ व धन में पापग्रह है, अतः सौतेली मां से कष्ट हुआ । स्थावर सम्पत्ति का अभाव रहा, जन्मभूमि छोडकर उत्तर की ओर जाने पर भाग्योदय हुआ, ३६ वें वर्ष से ५६ वें वर्ष तक भाग्योदय रहा, फिर वृद्ध वय में हानि, दुःख, दारिद्र्य, बेइज्जती आदि अशुभ फल मिले, दूसरी सहायता के बिना स्वकष्ट से प्रगति की । पंचमेश शुक्र चतुर्थ में है अतः —सचिवश्चागुरुस्तथौ—सलाह देने में निपुण ज्यूरर, असेसर रहे । पंचमेश पंचम से बारहवा है अतः पुत्र बुद्धिमान किन्तु भाग्यहीन हुए—पांच पुत्र हुए किन्तु दो जीवित रहे, शिक्षा के बिना ही कई भाषाएं सीखीं, पुत्रों से सुख नही मिला । षष्ठेश मंगल तृतीय में है— भाई नही थे, सत्कार्य के लिए समाज से झगडा किया, अदालत में सफल रहे, दूसरों को अदालती मामलों में नही फसाया, लोगों पर प्रभाव रहा । सप्तमेश गुरु धनस्थान में है— द्यूनेशे नवमे वित्ते नानास्त्रीभिः समागमः । आरम्भी दीर्घसूत्री च स्त्रीषु चित्तं हि केवलम् । कई स्त्रियों से सम्बन्ध, कई कार्य करना, दीर्घ विचार करना इस का अनुभव मिला । इन के कुल में चार पीढी तक दो दो विवाह हुए । इसी स्थान में हर्षल है अतः ३६ वें वर्ष तक अस्थिरता, अपने व्यवसाय में असफलता, साझीदारी में यश यह फल मिला ।

इस हर्षल से स्त्री हठी, दुराग्रही, विक्षिप्त होती है ऐसा पश्चिमी ज्योतिषी कहते हैं। इस उदाहरण में इन का पहले एक कन्या से विवाह तय हुआ किन्तु वधूपक्ष के मतभेद से वह सम्बन्ध टूट कर दूसरी कन्या से विवाह हुआ, यह पत्नी मरने पर पुनः उसी पहली कन्या से विवाह हुआ। ये व्यापार के लिए बहुत प्रवास करते थे अतः साल में दस महीने स्त्री से दूर रहना पडा। पश्चिमी ज्योतिषी का स्त्रीस्वभाव वर्णन यहां गलत सिद्ध हुआ—इनकी पत्नी उदार, दयालु, शान्त, स्नेहशील, शीलवान, सत्यप्रिय, परोपकारी थी किन्तु उसे जीवन में बहुत कम सुख मिला। इन का पहिला विवाह छोटे वय में व दूसरा २० वें वर्ष हुआ। अष्टमेश शनि लग्न में राहु के साथ है— अष्टमेशे तनौ कामे भार्याद्वियं समादिशेत्। विष्णुद्रोहरतो नित्यं व्रणे रोगः प्रजायते। दो विवाह होना यह फल ठीक सिद्ध हुआ, देवता विरोध और व्रणरोग का फल नही मिला। मृत्यु के पहले जलवात से सब शरीर फूला, एक दिन पहले मृत्यु का आभास मिला। धनस्थान में गुरु है अतः स्त्री के पहले मृत्यु हुआ। एक साल बाद स्त्री का मृत्यु हुआ। पतिपत्नी दोनों का मृत्यु दारिद्रय में किन्तु वासनारहित शान्त मन से हुआ। नवमेश शनि लग्न में राहुयुक्त है अतः हमेशा प्रवास, स्थानान्तर, स्थावर सम्पत्ति न होना, पिता से अनबन, ३६ वें वर्ष तक अस्थिरता, एक दो सन्तानों की मृत्यु यह फल मिला। विवाह के वाद पत्नी के साथ विदेश यात्रा की कोशिश की किन्तु उस जमाने में सामाजिक रूढि का बन्धन था अतः जा नही सके, बंगाल में जाकर भाग्योदय हुआ, स्वभाव साहसी था। दशमेश गुरु धनस्थान में है—मनस्वी गुणवान् वाग्मी सत्यधर्मसमन्वितः। तेजस्वी, गुणवान, बोलनेमें चतुर, सत्य बोलनेवाले,

धार्मिक होते हैं—इस का अनुभव ठीक मिला, व्यापार में सफल सन्मान व कीर्ति से युक्त हुए। लाभेश मंगल तृतीय में है। अतः अति प्रयत्न से लाभ हो कर धन टिक नही सका, इच्छाएं अच्छी रहीं। व्ययेश शुक्र चतुर्थ में है तथा व्यय में चन्द्र है। दो विवाह हुए अपने सुखोपभोग में तथा परोपकार में बहुत धन खर्च किया। इस कुण्डली में व्यय से चतुर्थ तक पांच ही स्थानों में सब ग्रह हैं अतः पूर्व वय में कष्ट, मध्य वय में भाग्योदय मृत्युसमय दारिद्रय, बड़े व्यवसाय, परोपकार आदि फल मिला। इस कुण्डली में दारिद्रय योग चार प्रकार के हैं। (१) चन्द्र के धनस्थान में शनिराहु की युति (२) शुक्र के दशम में शनिराहु (३) चन्द्र के तृतीय में तथा लग्न से द्वितीय में गुरु (४) लग्न में शनिराहु—चन्द्र को राहु ग्रास कर रहा है तथा शुक्र, रवि, मंगल, बुध, गुरु, नेपच्यून इन सब के पीछे शनि है। इस कुण्डली में दारिद्रययोग तो हैं किन्तु दूसरों को कष्ट दे कर धन प्राप्त करने के योग नही हैं, यद्यपि लग्नस्थ शनिराहु ऐसे पापमूलक धन के कारक हैं। इन के पिता के द्वारा पापकृत्यों से अर्जित धन इन्हें मिला। इस का स्पष्टीकरण इन के कुण्डली के पितृ-स्थान को लग्न मान कर इन के पिता की कुण्डली बनाने से मिलेगा। यह कुण्डली इस प्रकार होगी—
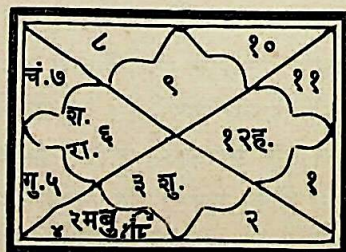
इन के मातापिता का मृत्यु बचपन में हुआ, स्वकष्ट से धनार्जन किया, सप्तम में शुक्र है अतः व्यापार में सफल रहे। लग्न के चतुर्थ में तथा चन्द्र के द्वितीय में शनिराहु हैं। चतुर्थ में मिथुन, कन्या, धनु, कुम्भ में राहु पापमूलक धन का कारक है। सन १८५७ के विद्रोह में लोगों ने गांव छोडते समय इन के पास अपने धन, आभूषण आदि धरोहर रखे, बाद में इन्हों ने वह सब धन किसी को लौटाया नही, तीनचार लाख रुपये इस तरह हडप लिये। इस पाप का फल इन के जीवन में तो नही मिला किन्तु अगली पीढियों को भयानक द्रारिद्रच के रूप मे मिला। शुक्र के केन्द्र में शनिराहु हैं अतः दो विवाह हुए। कन्यालग्न के लिए ऐश्वर्यकारक शनि व शुक्र यहां अनिष्ट सम्बन्ध में हैं अतः ऐश्वर्य कायम नही रहा। रवि मंगल के लाभस्थान में शनिराहु हैं अतः इस कुल में पांच पीढी तक यह हाल रहा कि पिता के जीवित रहने तक पुत्र का भाग्योदय नही हो सका, पुत्र का पिता को कोई लाभ नही हुआ।

सन १८५७ के विद्रोह में इसी तरह पापकृत्यों से धन प्राप्त करनेवाले एक व्यक्ति का उदाहरण हमने मध्यहिन्दुस्थान में देखा। इस व्यक्ति के मरते ही हानि शुरू होकर दारिद्रचयोग हुआ। उस के बाद तीन पीढी तक घर में कोई भाग जाना, स्त्रीसुख का अभाव, तीनचार विवाह हो कर भी एक ही सन्तान, शील का अभाव, सुख से भोजन न कर सकना यह हाल रहा। इस व्यक्ति को बचपन में सौतेली मां ने कष्ट दिया तथा धन का अपहार किया, इस के प्रतिशोध में इस ने बुढापे में उस मां को बहुत कष्ट दिया, चारचार दिन भूखी रखा, उस वृद्ध स्त्री के शाप का भी परिणाम इन्हें तीन पीढी तक भोगना पडा। इस

उदाहरण में दादा की कुण्डली इस प्रकार थी—जन्म शक १७७९ श्रावण कृ० १३ रात्रि ११ (मद्रास टाइम) स्थान अक्षांश १६–१२ रेखांश ७५–४५ तारीख १७–८–५७।
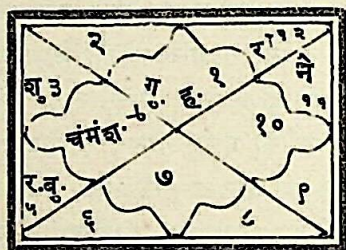
वंशपरम्परागत दोष के कारक ग्रहयोग और उन के फल इस प्रकार हैं—धन, चतुर्थ, पंचम, षष्ठ, सप्तम या व्यय में राहु से निम्नलिखित ग्रहों की युति या प्रतियोग के तीव्र परिणाम होते हैं, अन्य स्थानों में कम होते हैं—

रवि व गुरु—कुल में किसी व्यक्ति की सम्पत्ति का अपहार करने से उसे दारिद्रय आना, सम्पत्ति के लिए हत्या, विधवा स्त्री की धरोहर का अपहार आदि कृत्यों से उस पीडित व्यक्ति का शाप पांच पीढी तक कष्ट देता है-हर पीढी में दारिद्रय, पागलपन, घर का कोई व्यक्ति लापता होना यह फल मिलता है। हत्या हुई हो वह व्यक्ति पिशाच के रूप में पीडा देता है।

चन्द्र व शुक्र—निर्दोष स्त्री को व्यभिचार का आरोप लगा कर कष्ट देना, स्त्रीधन अपहार आदि कृत्यों से स्त्री का शाप सात पीढी तक कष्ट देता है। हर पीढी में पुरुष अविवाहित रहना, संन्यासी होना, स्त्रियों की अकाल मृत्यु, स्त्री को पिशाचबाधा, व्यवसाय में हानि, दारिद्रय का फल मिलता है।

मंगल---व्यभिचार की आशंका से या सम्पत्ति के लोभ से हत्या या विष प्रयोग करना--इस के परिणाम तीन पीढी तक मिलते हैं--महारोग, कोढ, क्षय, गण्डमाला, गूंगापन, सांप या शेर द्वारा मृत्यु, स्त्री सुख का अभाव, स्त्रियों की मृत्यु ये फल मिलते हैं।

बुध---उपनयन अधूरा रह कर किसी बच्चे की मृत्यु होना, सौतिया डाह से बच्चे की हत्या करना इस का परिणाम--उस बच्चे के प्रेतात्मा द्वारा कष्ट होता है। वंश खण्डित होता, है, दत्तक भी टिकते नही, अन्धापन, पागलपन, निर्वासन, दारिद्रय, निवास स्थान दूषित होना, रोग का निदान न हो कर धन बहुत खर्च होना आदि फल मिलते है।

शनि---आत्महत्या, पीडा से उकता कर दिया हुआ शाप--इस का परिणाम सात पीढी तक चलता है। अगली पीढी के लोग शीलवान होने पर भी बहुत विपत्तियां आती हैं, पूर्ववय साधारण और उत्तरार्ध दारिद्रयपूर्ण रहता है। दो विवाह, सन्तति कम, कन्याएं तरुण वय में विधवा या परित्यक्ता होना यह फल मिलता है।

जन्मस्थ राहु की स्थिति से उस बालक के पूर्वजन्म के सम्बन्ध की भी कुछ कल्पना हो सकती है। लग्न में राहु हो तो दादा या नाना की आत्मा इस बालक की हो सकती है अथवा वह छोटे भाई का लडका हो सकता है। ऐसे उदाहरण में इस बालक का और दादा का जन्मलग्न एक ही पाया जाता है। धनस्थान में राहु अथवा धनेश के साथ राहु हो तो वह बालक माता का बडा भाई, जामात का पिता या अन्य कुटुम्बीय व्यक्ति

का पुनर्जात रूप हो सकता है। तृतीय में अथवा तृतीयेश के साथ राहु हो तो भाई, बड़े भाई के लडके, माता के चाचा आदि हो सकते हैं। चतुर्थ में अथवा चतुर्थेश के साथ राहु हो तो माता, परदादा, ससुर, मित्र आदि हो सकते हैं। पंचम में अथवा पंचमेश के साथ हो तो पुत्र, दादा का बडा भाई आदि हो सकता है। षष्ट में अथवा षष्ठेश के साथ हो तो मामा, मौसी, दादा के चाचा या शत्रु पक्ष का कोई व्यक्ति हो सकता है। सप्तम में या सप्तमेश के साथ हो तो पत्नी, पत्नी के घर के लोग, दादा हो सकते है। अष्टम में या अष्टमेश के साथ हो तो पिता के बडे भाई, ससुर के घर के लोग हो सकते हैं। नवम में या नवमेश के साथ हो तो छोटे भाई, बहिनें, पिता के चाचा, साले आदि हो सकते हैं। दशम में या दशमेश के साथ हो तो पिता, मामा या मौसी की सन्तान हो सकती है। लाभस्थान में या लाभेश के साथ हो तो बडे भाई, अन्य पुत्र आदि हो सकते हैं। व्यय में या व्ययेश के साथ हो तो चाचा, पिता की बहिनें, पत्नी के मामा, पुत्र, भाई हो सकते हैं। ऐसा देखा जाता है कि पूर्वजन्म में कुल के प्रति सद्भावना रखनेवाला व्यक्ति इस जन्म में भी कुल को बढाता है। तथा पूर्वजन्म में शत्रुपक्ष का रहा हुआ व्यक्ति इस जन्म में कुल की हानि करता है। इस प्रकार राहु से वंशपरम्परा व जन्मान्तर विषयक विचार का स्पष्टीकरण हुआ।

फलज्योतिष पर दो मुख्य आक्षेप लिये जाते हैं। एक यह कि एक ही पिता के छह पुत्रों की कुण्डलियां भिन्न भिन्न हैं तो उन पुत्रों के पिता को एक ही फल कैसे मिल सकता है। इस का उत्तर यह है की एक विशिष्ट फल एक ही ग्रहयोग से

मिले यह जरूरी नही है। भिन्न भिन्न ग्रहयोगों से भी समान फल मिलता है अतः छह पुत्रों की कुण्डलियों के पितृस्थान के योग भिन्न होने पर भी फल समान हो सकते हैं। अतः ऐसे उदाहरणों में भिन्न भिन्न ग्रहयोगों का पूरा विचार करना चाहिए। दूसरा आक्षेप यह है कि मनुष्य की सब शुभाशुभ परिस्थिति पूर्वजन्म के कर्म पर आधारित है, उस में दूसरा कोई कुछ परिवर्तन नही कर सकता। किन्तु यह मत भारतीय परम्परा के प्रतिकूल है। गीता में किसी भी कार्य के पांच कारण बताये हैं—आधार, कर्ता, कारण, कार्य और दैव—इन पांचों को मिल कर कोई कार्य होता है—अधिष्ठानं तथा कर्ता कारणं च पृथग्विधम्। विविधाश्च पृथक् चेष्टाःदैवं चैवात्र पंचमम्॥ इसी तरह महाभारत में भीष्म ने धर्मराज से कहा है—यदि किसी को उस के पाप का फल उस के जीवन में न मिले तो वह उस के पुत्र-पौत्रो को अवश्य मिलता है—पापं कर्मकृतं किंचित् यदि तस्मिन् न दृश्यते। नृपते तस्य पुत्रेषु पौत्रेष्वपिच नप्तृषु॥ अतः किसी व्यक्ति की शुभाशुभ परिस्थिति में उस के सम्बन्धी अन्य व्यक्तियों के परिणाम का भी अवश्य विचार करना चाहिए॥

प्रकरण ११ महादशाविचार

राहु की महादशा १८ वर्ष होती है। आर्द्रा, स्वाति तथा शततारका जन्मनक्षत्र हो तो जन्म से १८ वें वर्ष तक, मृग, चित्रा धनिष्ठा जन्मनक्षत्र हो तो ८ वें वर्ष से २६ वें वर्षतक; रोहिणी हस्त, श्रवण नक्षत्र हो तो १८ से ३६ वें वर्ष तक, कृत्तिका, उत्तराषाढा, उत्तरा नक्षत्र हो तो २३ वें वर्ष से ४१ वें वर्ष तक भरणी, पूर्वा, पूर्वाषाढा नक्षत्र को ४३ से ६१ वें वर्षतक यह दशा होती है।

महादशा के फल देखते समय मूल कुण्डली में राहु और अन्य ग्रहों के सम्बन्ध का विचार अवश्य करना चाहिए। राहु अन्य ग्रहों से शुभ सम्बन्ध में हो और अकेले चन्द्र से अशुभ सम्ब्रन्ध में हो तो भी उस के फल अशुभ मिलते हैं। दशम में कर्क या सिंह में राहु अन्य ग्रहों से शुभ योग में हो तो अतिशय उन्नति कारक होता है किन्तु वही चन्द्र के साथ हो तो सब शुभ फल नष्ट होते हैं। ग्रन्थकारों ने जन्मस्थ राहु उच्च हो तो दशाफल में सुख, मित्रप्राप्ति, राज्यवैभव, धनधान्यसमृद्धि यह वर्णन दिया है तथा नीच राशि में राहु की दशा हो तो चोर, अग्नि, राजदण्ड, कैद, फांसी, विषबाधा आदि के भय का फल बताया है। किन्तु हमारे अनुभव में उच्च राहु के फल अशुभ और नीच के शुभ होते हैं। अब हम कुण्डली मे राहु की स्थिति के अनुसार दशाफल का वर्णन करते हैं।

लग्नस्थान—वृषभ, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर व मीन मे राहु हो तो—यह दशा बचपन मे हो तो स्वास्थ्य अच्छा रहता है। शिक्षा अच्छी होती है। माता-पिता की स्थिति अच्छी रहती है। तरुण वय में दशा हो तो बडे व्यवसायों की इच्छा होती है। अदालतों में जय मिलता है, विवाह हो कर पहली पुत्रसन्तति होती है, शिक्षा पूरी हो कर डिग्री मिलती है, नौकरी में जलदी तरक्की होती है, बडे लोगों के परिचय से लाभ होता है। मेष, मिथुन, तुला, धनु, कुम्भ में—बचपन की दशा में सूखा, नजर लगना, चेचक, अतिसार, दांत आते वक्त तकलीफ, बोलना देर से सीखना, शिक्षा में रुकावटें, मैट्रिक या बी. ए. में फेल होना, आदि से कष्ट होता है। तरुण वय में दशा हो तो दो विवाह होना, पहली कन्या सन्तति होना,

सन्तति मृत होना, अपने लोगों से विरोध होना, नौकरी या व्यवसाय में हानि, व्यसन, अपमान, दूसरों की गुप्त बातें खोज-कर अफवाहें फैलाना आदि अशुभ फल मिलते हैं।

धनस्थान—वृषभ, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर में राहु हो तो—बडे व्यवसाय, नौकरी छोड कर स्वतन्त्र व्यवसाय करना, काम में सफलता, पूर्वार्जित इस्टेट न होते हुए अपनी मेहनत से कमाई, दूरदृष्टि, अदालतों में जय, शिक्षा का अच्छा उपयोग होना, शिक्षा कम मिलना, अच्छा भोजन मिलना, लावा-रिस का धन मिलना आदि फल मिलते हैं। अन्य राशियों में—व्यवसाय में दिवाला निकलना, कर्ज, बेइज्जती, अपने लोगों का व स्त्री का विरोध, भाइयों से झगडे, अदालत में असफलता, स्त्री का मृत्यु, कन्या सन्तति होना, अन्न अच्छा न मिलना, मेहमान ज्यादा होने से कष्ट, काम की दिशा गलत होना, वृद्ध वय में पुत्रलाभ, कुटुम्बसौख्य में कमी ये फल मिलते हैं।

तृतीयस्थान—वृषभ, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर व मीन में अन्य ग्रहों से शुभ सम्बन्धित राहु की दशा हो तो स्वकष्ट से प्रगति होती है। शिक्षा में रुकावटें आती हैं। किन्तु शिक्षा अच्छी मिलती है। व्यवसाय में धन मिलता है। नौकरी हो तो बडे अधिकारी प्रसन्न रहते हैं, तरक्की होती है। दूर के प्रवास, विदेश यात्रा होती है। स्त्री अच्छी मिलती है। पुत्रलाभ होता है। यह दशा भाइयों की एकत्रित प्रगति के लिए ठीक नही होती, अत: बंटवारा अच्छा रहता है। अन्य राशियों में अशुभ योग में राहु हो तो--वाममार्ग से प्रगति करता है। लोगों में निन्दा होती है, निर्दय होता है। भाइयों को मारक योग

होता है। उन का कुटुम्ब देखना पडता है। कन्याएं विधवा होती हैं। उद्योग या नौकरी में अस्थिरता रहती है। प्रवास जरूरी होने पर भी कर नही पाते। स्त्री-पुत्रों का वियोग होता है। मित्र कम होते हैं।

चतुर्थस्थान––चतुर्थराशिस्थितराहुदाये मातुर्विनाशं त्वथवा तदीयम्। क्षेत्रार्थनाशं नृपतेः प्रकोपं भार्यादिपातित्यमनेकदुःखम्॥ राहु चतुर्थ में हो तो उसकी दशा में माता की मृत्यु, धन और जमीन की हानि, राजा का क्रोध, स्त्री पतित होना आदि से कष्ट होता है। चौराग्निबन्धार्तिमनोविकारं दारात्मजानामपि रोगपीडाम्। चतुर्थराशिस्थितराहुदाये प्रभग्नसंसारकलत्रपुत्रम्॥ इसे चोर, आग, कैद, मानसिक विकार, स्त्री-पुत्रों को रोग होना, संसार व स्त्री-पुत्रों का नाश होना आदि कष्ट होते हैं।

हमारे अनुभव में यह राहु वृषभ, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर व मीन में अन्य ग्रहों से शुभ योग में हो तो इस की दशा में माता को अति शरीर कष्ट से व्यंगता आती है। पत्नी रोगी होती है। व्यवसाय में नुकसान होता है, नौकरी ठीक रहती है। एक भाई की मृत्यु होती है। उदरनिर्वाह से अधिक धन नही मिलता। मिथुन, कन्या, धनु, कुम्भ में यह राहु हो तो पूर्वार्जित इस्टेट में वृद्धि होती हैं, गोद लिए जाने से बडी सम्पत्ति मिलती है अथवा किसी लावारिस का धन मिलता है। दो विवाह होते हैं। पुत्र होते हैं किन्तु उन से सुख नही मिलता। माता पिता का सुख नष्ट होता है। अन्य राशियों में आर्थिक व मानसिक कष्ट रहता है, व्यवसाय या नौकरी में तकलीफ होती है। मृत्यु किराये के घर में, बुरी हालत में होती है।

पंचमस्थान—बुद्धिभ्रमं भोजनसौख्यनाशं विद्याविवादं कलहं च दुःखम् । कोपं नरेन्द्रस्य सुतस्य नाशं राहोः सुतस्थस्य दशाविपाके ।। इस राहु की दशा में बुद्धि में भ्रम, भोजन नष्ट होना, विवाद, झगडे, दुःख, राजा का क्रोध तथा पुत्रनाश ये फल मिलते हैं । यह वर्णन अनुभव से मिलता है । राहु, वृषभ, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन में हो तथा अन्य ग्रहों से शुभ योग में होकर दशा बचपन में हो तो बुद्धि अच्छी होती है, शाला में कीर्ति होती है, किसी विषय में प्रावीण्य मिलता है । कालेज में भी अच्छी कीर्ति मिलती है । प्रयत्न हुआ तो डाक्टरेट मिल सकती है । सिनेमा में धन व कीर्ति मिल सकती है । विवाह जल्दी होकर पुत्र सन्तति होती है । इन की कीर्ति जीवन-पर्यन्त होती है, मृत्यु के बाद लोग भूल जाते हैं । राहु अन्य राशि में तथा अन्य ग्रहों से अशुभ योग में हो तो बुद्धि अच्छी होती है किन्तु प्रयत्न करने पर भी धन नही मिलता अतः लोग इसे भ्रमिष्ट, मूर्ख समझते हैं । सुख नष्ट होता है । स्त्री-पुत्र नही होते । किसी विषय में अति परिश्रम के साथ संशोधन करते हैं—उस से जीवन भर उपहास, निन्दा, कष्ट, दारिद्रय में रहते हैं—मृत्यु के बाद कीर्ति होती है । बडे व्यक्तियों का परिचय, दैवी दृष्टान्त, स्वप्न, सत्पुरुषों का दर्शन, परमार्थ की ओर प्रवृत्ति इस दशा में होती है । इसे भोजन कभी अच्छा नही मिलता, बासे पदार्थ खाने पडते हैं—उस में भी कंकड आदि रहते हैं । लोगों से अकारण शत्रुता होती है । सर्वत्र अपमान होता है । यह अनुभव मेष, सिंह, धनु में विशेष मिलता है । स्त्री से बनती नही । दो विवाह होते हैं । स्त्री पति को छोड कर अलग रहती है । अथवा हमेशा बीमार रहती है । अपवाद फैलता है । धन नष्ट हो कर भ्रमिष्ट

स्थिति होती है। व्यभिचारी, कुसंगति में रहनेवाला होता है। इस का परिणाम जीवन भर भोगना पडता है।

षष्ठस्थान---यहां वृषभ, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर तथा मीन में राहु अन्य ग्रहों के शुभ योग में हो तो उसकी दशा में लोगों के साथ अकारण झगडे होते हैं। किन्तु अन्त में कष्ट से यश मिलता है। स्वास्थ्य अच्छा रहता है। बडे कार्य होते हैं। परिश्रमपूर्वक प्रगति होती है। बडे अधिकारी वश होकर काम कर देते हैं। अन्य राशियों में अन्य ग्रहों से अशुभ योग में राहु हो तो अपने लोगों द्वारा व लोगों द्वारा विरोध बहुत होता है। शत्रु विजयी होता है। निन्दा सहन करनी पडती है। चमत्कारिक रोग होते हैं। मामा, मौसी व एक भाई को मारक योग होता है। मन संसार से विरक्त होकर मोक्ष की ओर झुकता है।

सप्तमस्थान--यहां वृषभ, कर्क, सिंह, कन्या वृश्चिक, मकर व मीन में अन्य ग्रहों के साथ शुभ योग में हो तो इस की दशा में शिक्षा पूरी होती है किन्तु शिक्षा का व्यवसाय में कोई उपयोग नही होता। पत्नी एक हो कर सन्तति हुई तो व्यवसाय में हमेशा परिवर्तन होता है। दो विवाह हुए तो व्यवसाय में स्थिरता रहती है, पतिपत्नी प्रेमपूर्वक रहते हैं। पत्नी हमेशा बीमार रहती है। नौकरी में स्थिरता रहती है, तरक्की जल्दी होती है। सन्तति बहुत होती है--उस में पुत्र अधिक होते हैं। राहु अन्य राशियों में अशुभ योग में हो तो--स्त्री का मृत्यु होता है। विवाह देर से होता है। पत्नी इच्छानुसार नही मिलती। झगडे होते हैं। कदाचित

विभक्त रहती है। व्यवसाय में दिवाला निकलना, विदेश में भटकना, व्यवसाय बारबार बदलना, व्यभिचार में धनहानि, अस्वास्थ्य, पुत्रों की मृत्यु, गर्भपात, दीनता, कर्ज बहुत बढना, कारावास का भय, शिक्षा न होना, हमेशा फेल होना, कुसंगति आदि अशुभ फल मिलते हैं।

अष्टमस्थान---यहां वृषभ, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर व मीन में अन्य ग्रहों से शुभ योग में राहु हो तो इस की दशा में अयोग्य मार्ग से धन मिलता है। विक्षिप्त बरताव के कारण लोग इससे डरते हैं। स्वाथ्य अच्छा रहता है। दीर्घायु होता है। दशा के अन्त में भाग्योदय होता है। पुत्रसन्तति बहुत होती है। राहु अन्य राशियों में अशुभ योग में हो तो दीर्घकाल के रोग होते हैं। फौजदारी मामले में कारावास होता है। सट्टा, लाटरी, रेस, फीचर आदि की धुन में रहते हैं। उस में लाभ होता है। मेहनत बहुत करते हैं किन्तु अन्त में सब धन नष्ट होता है। अपने लोगों का विरोध बहुत होता है। एक कन्या की मृत्यु होती है।

नवमस्थान---यहां वृषभ, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर व मीन में राहु अन्य ग्रहों से शुभ योग में हो तो इस की दशा में शिक्षा अच्छी होती है किन्तु उस का प्रभाव नही पडता। व्यवसाय या नौकरी में प्रगति होती है। सरकार से सन्मान, प्रवास बहुत होना, भोगविलास प्राप्त होना, कन्याएं होना ये फल मिलते हैं। एक बहिन का भार वहन करना पडता है। हनुमान की उपासना करते हैं। अन्य राशियों में अशुभ योग में राहु हो तो नीच स्त्रियों से सम्बन्ध आता है। भाइयों की मृत्यु

होती है। शिक्षा में रुकावटें आती हैं। विदेश में शिक्षा ठीक होती है। डाक्टरेट तक मिल सकती है। विद्वान के रूप में प्रसिद्ध होते हैं। सन्तति नही होती अथवा हो कर जीवित नही रहती। मातापिता का मृत्यु होता है।

दशमस्थान--यहां वृषभ, कन्या, कर्क, सिंह, वृश्चिक, मकर व मीन में राहु अन्य ग्रहों से शुभ योग में हो तो सम्पत्ति क्रमश: बढती है। बडे कार्य होते हैं। अधिकारियों पर प्रभाव रहता है। अदालती मामलों में हर तरह से जीतता है। सामाजिक व राजनीतिक कार्य से प्रसिद्धि मिलती है। यह बडा अधिकारी या संन्यासी होता है। मातापिता व कुछ पुत्रों का मृत्यु होता है। अन्य राशियों में अन्य ग्रहों से अशुभ योग हो तो पूर्वार्जित सम्पत्ति नष्ट होती है। बहुत कष्ट, व्यवसाय में हानि, बारबार परिवर्तन, पुत्रों का विरोध, एक पुत्र व्यंगसहित होना ये फल मिलते हैं।

लाभस्थान--यहां स्त्री राशि में राहु अन्य ग्रहों से शुभ योग में हो तो विधानसभा के सदस्य हो सकते हैं, यूनिवर्सिटी में चुन कर आते हैं। अकस्मात लाभ, नष्ट धन पुन: प्राप्त होना, कीर्तिदायक काम पूरे होना, पुत्र देर से होना ये फल मिलते हैं। अन्य राशियों में अन्य ग्रहों से अशुभ योग में हो तो पुत्रों का मृत्यु, धनहानि, रेस, लाटरी, सट्टा, जुआ आदि में धननाश, लाभ में विघ्न, अयोग्य मित्र मिलना, स्त्री अस्वस्थ रहना ये फल मिलते हैं :

व्ययस्थान--यहां वृषभ, कर्क, सिंह, कन्या, मकर व मीन में राहु अन्य ग्रहों से शुभ योग में हो तो व्यवसाय के लिए विदेश

में घूमना पडता है, व्यवसाय में कीर्ति होती है। पुत्र कम होते हैं। कई लोगों को मदद करनी पडती है। ऐश्वर्य का उपभोग करते हैं। अन्य राशियों में व अशुभ योग में हो तो सभी कामों में असफल होता है। भ्रमिष्ट जैसा हो कर अकारण ही स्त्रीपुत्रों से दूर भटकता है। व्यर्थ खर्च करता है। अपवाद फैलते हैं। कुछ व्यभिचारी होता है। कई जगह नौकरी करता है। व्यवसाय बदलता है। स्थिरता नही होती।

दशाफल के बारे में साधारण विचार--पराशर ने राहु की १८ वर्ष की महादशा के तीन भाग कर फलों का वर्णन इस प्रकार किया है--दशादौ दुःखमाप्नोति दशामध्ये सुखं यशः। दशान्ते स्थाननाशं च गुरुपुत्रादिनाशनम् ॥ विनश्येद् दारपुत्राणां कुत्सितान्नं च भोजनम्। दशादौ देहपीडा च धनधान्यविनाशकृत्। दशान्ते कष्टमाप्नोति स्थानभ्रंशो मनोव्यथा ॥ इस दशा के प्रारम्भ में दुःख, मध्य में सुख व कीर्ति तथा अन्त में स्थान नष्ट होना, बडे लोग व पुत्र आदि का मृत्यु ये फल मिलते हैं। दशा के प्रथम भाग में स्त्री पुत्रों का मृत्यु, भोजन अच्छा न मिलना, शारीरिक कष्ट, तथा धनधान्य का नाश ये फल मिलते हैं। दशा के मध्य में सुख व अपने प्रदेश में धनलाभ होता है। अन्त में कष्ट, स्थान से दूर होना, व मानसिक पीडा होती है। हमारे अनुभव दोनों प्रकार के हैं--कहीं कहीं प्रारम्भ में सुख व अन्त में नाश यह फल भी देखा है। कुण्डली में राहु अनिष्ट हो किन्तु जीवन में राहु की महादशा न हो तो इस के फल कब मिलेंगे यह एक प्रश्न उपस्थित किया जाता है। इस के दो उत्तर हैं--एक तो अन्य ग्रहों की महादशा में राहु की अन्तर्दशा हो तब ये फल मिलते हैं। दूसरे--आयु के ४२ से ५६ वें वर्ष तक राहु का पाक

काल होता है तब ये फल मिलते हैं। अब राहु-चन्द्र योग में राहुदशा के फल के उदाहरणस्वरूप एक कुण्डली देखिए---यह कुण्डली इस प्रकार है---
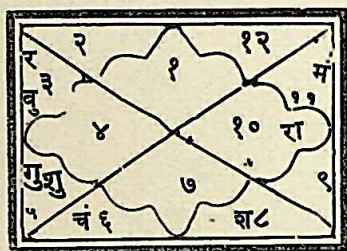
इस में चन्द्र के पंचम में अंशतुल्य राहु है। इस राहु की दशा के प्रारम्भ में ही व्यवसाय नष्ट हुआ। पिता का मृत्यु, दारिद्र्य, एक वर्ष में तीन पुत्रों का मृत्यु, पत्नी बहुत अस्वस्थ होना, बहुत जगह नौकरी करना, अस्थिरता ये फल मिले। साथ ही बडे कार्य, बडे लोगों की मित्रता आदि से लाभ भी हुआ। मेरी समझ में यहां राहु का चन्द्र से नवपंचम योग अशुभ है अतः इतने तीव्र फल मिले।

गौरीजातक के अनुसार राहुदशाके फल--- सौख्यादिवित्तस्थितिनाशनं च कलत्रपुत्रादिवियोगदुःखम्। अतीवरोगं परदेशवासं विवादबुद्धिं कुरुते फणीशः॥ दीनो नरो भवति बुद्धिविहीनचिन्ता-सर्वांगरोगभयदुःखसुदुःखिता च। पापानि बन्धबहुकष्टदरिद्रयुक्त-राहोर्दशा जननकालदशा भवन्ति॥ इस की दशा में सुख, धन, स्त्री, पुत्र इन सब का नाश होता है। बहुत रोग, विदेश में घूमना, विवाद, दीनता, बुद्धिहीनता, चिन्ता, भय, कष्ट, दारिद्र्य आदि से कष्ट होता है।

अन्तर्दशा-फल

१ राहु महादशा में राहु की अन्तर्दशा—– राहोर्दशायां भार्याया वियोगो बन्धनक्षयः। अर्थनाशोऽन्यदेशेषु गमनं गौरवाल्पता ।। स्त्री का वियोग, धन की हानि, बन्धन दूर होना, विदेश में घूमना, मान कम होना ये फल हैं।

२ राहु महादशा में गुरु की अन्तर्दशा—-व्याधिशत्रुविनाशं च राजप्रीतिधनागमम्। पुत्रलाभं महोत्साहं गुरौ राहुदशान्तरे ।। रोग व शत्रु नष्ट होते हैं। राजा की कृपा व धन प्राप्त होते हैं। पुत्र होता है। बहुत उत्साह रहता है।

३ राहुमहादशा में शनि की अन्तर्दशा—-वातपित्तकृता पीडा कलहोऽन्यजनैःसह। देशभृत्यमतिभ्रंशः शनौ राहुदशागते ।। वात और पित्त के रोग होते हैं, दूसरों से झगडे होते हैं। विदेश में जाना पडता है, बुद्धि में भ्रम होता है।

४ राहु महादशा में बुध की अन्तर्दशा—-अकस्मात् कलहश्चैव गुरुपुत्रादिनाशनम्। अर्थव्ययो राजकोपो दारपुत्रादिपीडनम्।। अकस्मात झगडा, गुरु (पिता या माता) व पुत्र का मृत्यु, खर्च अधिक होना, राजा का क्रोध, स्त्री पुत्रों को कष्ट ये फल हैं।

५ राहु महादशा में केतु की अन्तर्दशा– चौर्यं स्वमानहानिं च पुत्रनाशं पशुक्षयम्। सर्वोपद्रवमाप्नोति केतौ राहुदशान्तरे ।। चोरी, मानहानि, पुत्रों का मृत्यु, पशुओं का नाश और सभी तरह के उपद्रव होते हैं।

६ राहु महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा—- विदेशाद्धनप्राप्तिः छत्रचामरसम्पदः। रोगारिबन्धुभीतिः स्यात् शुक्रे

राहुदशान्तरे ।। विदेश में वाहन, धन व छत्रचामर (राजा जैसा वैभव) प्राप्त होता है। रोग, शत्रु, व स्वजनों से भय होता है।

७ राहु महादशा में रवि की अन्तर्दशा——मनोऽभीष्टप्रदानं-च पुत्रकल्याणसम्भवम् । धनधान्यसमृद्धिश्च अल्पसौख्यं सुखा-वहम् ।। मन की इच्छा पूरी होती है, पुत्र का कल्याण होता है, धनधान्य की समृद्धि होती है। सुख मिलता है।

८ राहु महादशा में चन्द्र की अन्तर्दशा——भोगसम्पद् भवे-न्नित्यं सस्यवृद्धिर्धनागमः । स्वबन्धुजनविवादश्च चन्द्रे राहुदशा-न्तरे ।। उपभोग, धन, धान्य की वृद्धि होती है। अपने लोगों से विवाद होता है।

९ राहुमहादशा में मंगल की अन्तर्दशा——नष्टराज्यधन-प्राप्तिर्गृहक्षेत्रादिवृद्धिकृत् । इष्टदेवप्रसादेन सन्तानसुखभोजनम् ।। नष्ट हुआ राज्य प्राप्त होता है। धन, घर, खेती प्राप्त होती हैं। इष्ट देवता की कृपा से सन्तति प्राप्त होती है। भोजन अच्छा मिलता है।

केतुमहादशा के अन्तर्दशाफल

१ केतु महादशा में केतु की अन्तर्दशा——केतोर्दशायां हानिः स्यात् व्रणनाशोऽरिविग्रहः । भयं राजकुलोद्भूतं मित्रैःसह कलि-र्भवेत् ।। हानि, व्रण दूर होना, शत्रु से झगडा, राजा का भय, मित्रों से झगडा ये फल है।

२ केतु महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा——अग्निदाहो ज्वर-स्तीव्रः कलहो ब्राह्मणैः सह । स्त्रीत्यागः कन्यकाजन्म शुक्रे केतु-दशाश्रिते ।। आग से जलना, तेज बुखार, ब्राह्मणों से झगडा, स्त्री को छोडना, कन्या का जन्म ये इस दशा के फल हैं।

३ केतु महादशा में रवि की अन्तर्दशा--भवेत् व्याधिर्ग्रहा घोरा नृपस्त्रीभिश्च विग्रहः। बन्धुनाशोऽर्थनाशश्च सूर्ये केतु-दशाश्रिते ॥ रोग, घोर ग्रह, रानियों से झगडा, बन्धु व धन का नाश ये फल हैं।

४ केतु महादशा में चन्द्र की अन्तर्दशा--सुखदुःखे स्त्रिया लाभो धनलाभो धनक्षयः। स्यातां पुनः पुनः पुंसाम् इन्दौ केतुदशागते ॥ इस दशा में बारी बारी से सुख व दुःख, धनलाभ व धनहानि होती है। स्त्री की प्राप्ति होती है।

५ केतु महादशा में मंगल की अन्तर्दशा--चौराग्निभ्यां महाभीतिः विग्रहं गोत्रभिः सह। देहपीडां च माहेयः कुर्यात् केतुदशाश्रितः ॥ चोर व अग्नि से बहुत भय, कुटुम्बीयों से झगडा और शारीरिक कष्ट होता है।

६ केतु महादशा में राहु की अन्तर्दशा--सुवृत्तैःशत्रुभिर्घोरैः विग्रहो विग्रहो यथा। तदा स्याद् देहिनां पीडा पातः केतुदशा-श्रितः ॥ चारों ओर से शत्रुओं से भयंकर कष्ट होता है।

७ केतु महादशा में गुरु की अन्तर्दशा--द्विजेन्द्रैः राजपुत्रस्य संयोगः सुतसम्भवः। सुलाभं कुरुते पुंसां गुरुः केतुदशागतः ॥ ब्राह्मणों व राजपुत्रों से मित्रता होती है। पुत्र होता है। अच्छा लाभ होता है।

८ केतु महादशा में बुध की अन्तर्दशा--सुहृद्बन्धुसमा-योगो भूमितन्तुकलिर्भवेत्। ज्वरोऽस्य देहपीडा च बुधे केतु-दशागते ॥ मित्र व स्वजनों से संयोग होता है। जमीन के बारे में झगडा होता है। बुखार से शारीरिक कष्ट होता है।

१ केतु महादशा में शनि की अन्तर्दशा---वातपित्तोद्भवा पीडा अधमैः सह विग्रहः। विदेशगमनं कुर्यादार्किः केतुदशाश्रितः॥ वात और पित्त से कष्ट, नीच लोगों से झगडा और विदेश में प्रवास होता है।

प्रकरण १२ राहु योगों के कुछ प्रसिद्ध उदाहरण

लग्नस्थान---(१) स्व. श्री तात्यासाहब सांगलीकर---सांगली रियासत के अधिपति---कुम्भ लग्न में राहु व चन्द्र--कई विवाह करने पर भी इन्हें सन्तति नही हुई, शरीर यष्टि भव्य, सुन्दर, स्वभाव अभिमानी व बरताव अत्यन्त नियमित था (२) स्व. डाक्टर नाडगीर---इनकी कुण्डली मंगल विचार में दी है। लग्न में राहु व शुक्र हैं। रंग काला, कद नाटा, बोलना बहुत धीरे, आंखें बडीं, यह इन का स्वरूप था। स्वकष्ट से प्रगति की। (३) श्री. एन्. सी. गुप्ता, ए. सी.---जन्मता०२४-१-१९०४ कन्या लग्न में राहु---चेहरा गोल, रंग सांवला-गोरा, बोलते समय हंसमुख, स्वभाव मधुर, खुले दिल से बरताव, न्यायी प्रवृत्ति, कद मध्यम, जलदी अधिकारपद मिला, सुखी रहे। (४) श्री. समीरमल जैनी, एम्. ए. एल्. एल्. बी. जन्म ता. २०--९--१९०७, लग्न में राहु व नेपच्यून, वर्ण सांवला, चेहरेपर चेचक के दाग, आंखें मदयुक्त, कद मध्यम, चेहरा गोल, स्वभाव मिलनसार, खुले दिल का बरताव, व्यवस्थित, धनार्जन अच्छा, सुखी रहे। (५) डाक्टर हरिहर सीताराम राजन्देकर, होमिओपैथिक डाक्टर, ज्योतिषी, पंचांगकर्ता--
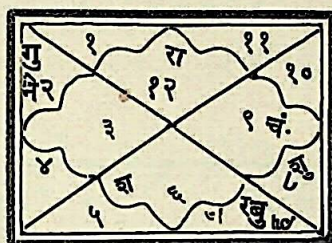
रंग काला, बदन छरहरा, चेहरा लम्बा, आंखें कमजोर, ऊंचाई साधारण, स्वभाव सरल किन्तु गूढ, बोलना कम, दूसरों के कामों में दखल न देना, अपने काम में मग्न---यह इन का वर्णन है।

धनस्थान---(१) वेदान्त के प्रसिद्ध विद्वान स्वामी रामतीर्थ (२) सेनापति पांडुरंग महादेव बापट---महाराष्ट्र के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी व राजकीय नेता (३) सुप्रसिद्ध योगी व क्रान्तिकारी नेता महर्षि अरविन्द घोष (४) स्व. मल्लप्पा अण्णावारद---शोलापुर की नरसिंग गिरजी मिल के संस्थापक---जन्म ता. १७-६-१८५१ सुबह ५।
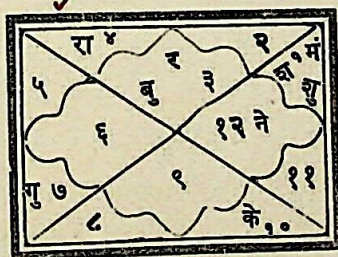
जन्म साधारण स्थिति में हुआ, अपने कर्तृत्व से बडे व्यवसाय में सफल हुए, हायस्कूल स्थापित किया, अच्छी इस्टेट प्राप्त

की, दान बहुत दिया, तीन विवाह हुए किन्तु पुत्र एक ही हुआ। यह राहु स्त्री राशि में है।

(५) एक क्ष--
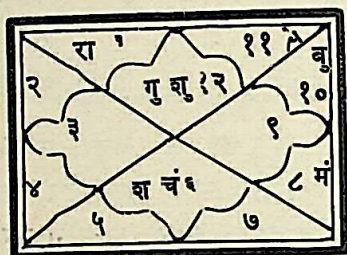
यहां राहु पुरुषराशि में है। इन्हों ने सन १९३२ तक व्यवसाय में बहुत अधिक धन कमाया, किन्तु बाद में स्वतन्त्र बडे व्यवसाय को चलाते समय उलझनें पैदा हो कर सब सम्पत्ति गंवाने की नौबत आई। वृत्ति स्वतन्त्र, बरताव अति व्यवस्थित था।

(६) स्व. नामदेवबुवा--गायक-अमरावती-जन्म फाल्गुन व. ४, शनिवार, शक १७८२ रात्रि १०।
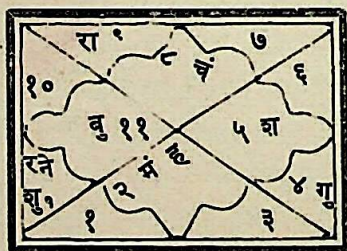
ये उत्कृष्ट गायक थे। गाते समय सुधबुध भूल जाते थे। धनलाभ अच्छा हुआ। आजन्म अविवाहित रहे।

(७) स्व. कृष्णाजीपन्त खाडिलकर—जन्म ता. २५—११—१८७२ कार्तिक व. १० सोमवार शक १७९४ दोपहर ४।। स्थान सांगली ।
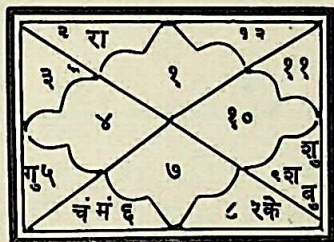
पूर्ववय में स्थिरता नही थी। बम्बई में 'नवाकाळ' वृत्तपत्र की स्थापना की तब से स्थिति अच्छी हुई। पूर्वार्जित सम्पत्ति नही थी। स्वकष्ट से प्रगति की। धनलाभ अच्छा हुआ, स्थावर इस्टेट हुई। ये प्रसिद्ध मराठी नाटककार तथा राजकीय नेता थे।

तृतीयस्थान—(१) रावसाहब विनायक त्र्यम्बक आगाशे एम्. ए. एल्. सी. ई,—इंजिनीअर, इन्हें एक भाई था, एक बहिन को आश्रय देना पडा, स्वकष्ट से प्रगति की। (२) डाक्टर ई. राघवेन्द्रराव-मध्यप्रदेश के भूतपूर्व गवर्नर—तृतीय में राहु—स्वकष्ट से प्रगति की। (३) स्व. दाजी आबाजी खरे (४) श्री. दाजी गणेश आपटे (५) श्री. भाऊराव कोल्हटकर—ये किर्लोस्कर संगीत नाटक मंडली में प्रसिद्ध नट थे। (६) फ्रान्स का बादशाह नेपोलिअन बोनापार्ट (७) महाराष्ट्र के भक्त-लेखक लक्ष्मण रामचन्द्र पांगारकर।

चतुर्थस्थान—एक क्ष—जन्म मार्गशिर शु. १३ शक १८०४ रात्रि ८ बम्बई।
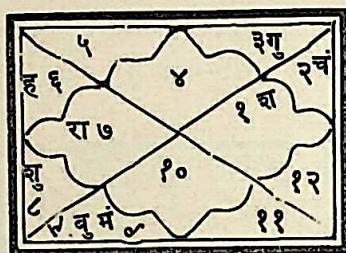
इन्हें पूर्वार्जित सम्पत्ति बहुत मिली किन्तु निरुद्योगी, अविवाहित रहे। इन के कुटुम्ब में कई पीढियों से कोई व्यक्ति अविवाहित रहता आया है।

(२) श्रीमन्त प्रतापसेठ, अमलनेर—जन्म ता. ११—१२—१८७९ कार्तिक व. १३ शक १८०१ गुरुवार रात्रि २-१३ अक्षांश २६-२५ रेखांश ७४-५०।
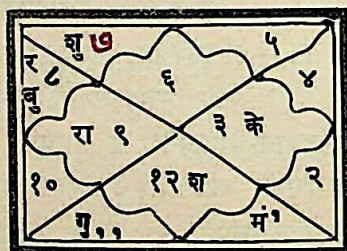
इन्हें गोद लिए जाने से ऐश्वर्य मिला। बहुतसी संस्थाएं स्थापन कीं, दान दिया, बडे व्यवसायों में यश मिला।

(३) एक क्ष—जन्म शक १८३१ कार्तिक व. ७ दोपहर १२-१०।

इन के कुल में चार पीढियों से आत्महत्या, घर छोड कर जाना, अविवाहित रहना आदि प्रकारों से कष्ट रहा है।

पंचम स्थान--(१) सर चन्द्रशेखर वेंकटरामन-प्रख्यात वैज्ञानिक व नोबेलपुरस्कार विजेता (२) बंगाल के प्रसिद्ध कथालेखक प्रभातकुमार मुकर्जी (३) बम्बई के प्रसिद्ध राजकीय नेता सर फेरोजशाह मेहता (४) श्री. पं. रा. पा. मोघे ज्योतिष-शास्त्री, पंचांगकर्ता (५) स्व. विष्णुबुवा ब्रह्मचारी--महाराष्ट्र के प्रसिद्ध पण्डित व समाजसुधारक लेखक विद्वान (६) स्व. पं. ईश्वरचन्द्र विद्यासागर--बंगाल के प्रसिद्ध विद्वान व समाज-सुधारक (७) बाबू सुरेन्द्रनाथ बानर्जी--बंगाल के प्रसिद्ध वक्ता व नेता (८) बैरिस्टर जयकर--बम्बई के भूतपूर्व न्यायाधीश व राजकीय नेता।

षष्ठस्थान(१) स्व. न्यायमूर्ति रानडे--महाराष्ट्र के राज-कीय नेता व बम्बई के न्यायाधीश (२) स्व. श्री. दादासाहब खापर्डे--विदर्भ के नेता व जमींदार (३) श्रीमती सरोजिनी नायडू--कवि व राजकीय नेत्री (४) स्व. पं. मदनमोहन मालवीय--बनारस विश्वविद्यालय के संस्थापक व प्रसिद्ध कांग्रेस नेता। ये सब लोग आयु के उत्तरार्ध में कीर्ति एवं सफलता से युक्त हुए।

सप्तम स्थान--(१) थिआसाफिकल सोसाइटी की प्रमुख डाक्टर एनी बिझान्ट (२) झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई (३) जमखिंडी रियासत के अधिपति श्री. भाऊसाहब (४) कुरुन्दवाड रियासत के अधिपति श्री. अण्णासाहब (५) महाराष्ट्र के प्रख्यात ज्योतिषी स्व. गणकभास्कर श्री. नवाथे (६) महाराष्ट्र की प्रसिद्ध नाटक मण्डली ललितकलादर्श के प्रमुख श्री. बापूराव पेण्ढारकर --इन के दो विवाह हुए।

अष्टमस्थान--(१) मराठी के प्रसिद्ध नाटककार एवं इतिहासवेत्ता वासुदेव शास्त्री खरे (२) राजकीय नेता, वृत्तपत्र संपादक एवं लेखक शिवराम महादेव परांजपे (३) गन्धर्व नाटक मण्डली के प्रमुख श्री. नारायणराव राजहंस 'बालगन्धर्व' (४) अमरावती के वृत्तपत्र संपादक व नेता श्री. बामणगांवकर (५) डाक्टर कुर्तकोटी शंकराचार्य--जन्म ता. २०-५-१८७९ सुबह ८-३६ स्थान कुर्तकोटी (हुबली के पास)।
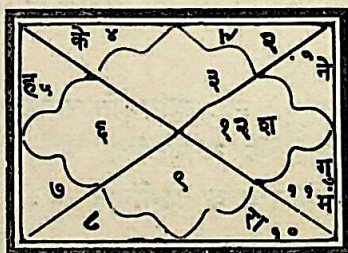
इन्हें ३६ वें वर्ष के बाद शंकराचार्य पद मिला। (६) एक क्ष--जन्म ता. २८-५-१८९७ सुबह १० स्थान डिचोली (गोवा)।
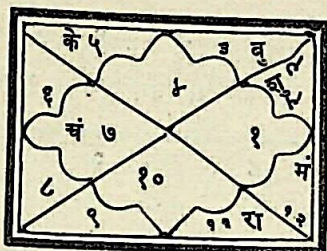
ये रेलवे में नौकर हैं। कभी विशेष तरक्की या लाभ नही हुआ।

नवमस्थान—(१) स्व. डाक्टर रामकृष्ण गोपाल भांडारकर-प्रख्यात इतिहासवेत्ता (२) गणित के विद्वान व पूना विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति रैंगलर परांजपे (३) समाज-सुधारक विद्वान, नेता व वृत्तपत्रसंपादक प्रिन्सिपल गोपाल गणेश आगरकर (४) वैमानिक मधुकर चिन्तामणि दाते (५) हिन्दू महासभा के नेता डा. मुंजे (६) प्रो. विश्वनाथ बलवन्त नाईक—फर्ग्युसन कालेज, पूना में गणित के प्रोफेसर, बम्बई विश्वविद्यालय के फेलो—जन्म ता. २७–२ – १८८०, शक १८०१, माघ व. २, शुक्रवार, इष्ट घटी ६–१५।
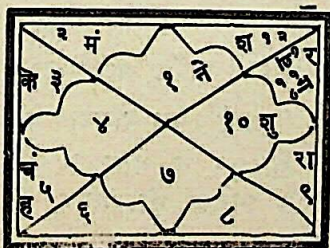
(७) श्री. भुलाभाई देसाई—बम्बई के प्रसिद्ध सालिसिटर तथा नेता जन्म शक १७९९ आश्विन शु० ७ रात्रि १२ ।
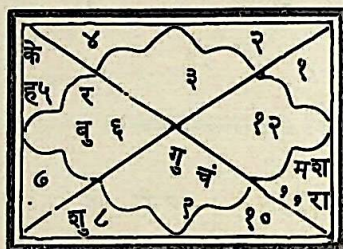
दशमस्थान——(१) महात्मा गांधी (२) स्व. दादाभाई नौरोजी (३) दे. गंगाधरराव देशपांडे (४) स्व. व्यंकटेश बापूशास्त्री केतकर——पंचांगकर्ता (५) श्रीगणेश बळवंत भाटे——जन्म शक १८०३ फाल्गुन शु० ६ गुरुवार इष्ट घटी १–३ ।
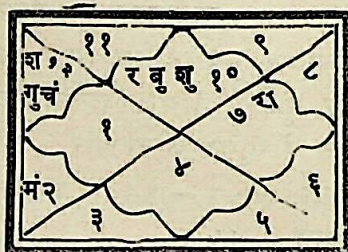
ये अच्छे गायक व नाटकमंडली के प्रमुख थे ।

(६) ज्योतिषी होरारत्न वसन्त लाडोबा म्हापणकर

(७) स्व. प्रिन्सिपल गोविंद सदाशिव आपटे ।

लाभस्थान——(१) बैरिस्टर रामराव देशमुख अमरावती—विदर्भ के प्रसिद्ध जमींदार व नेता (२) स्व. बलवंतराव किर्लोस्कर—मराठी के प्रसिद्ध नाटककार (३) ज्योतिषी बी. सूर्यनारायणराव, मद्रास ।

व्ययस्थान---(१) लार्ड सिंह (२) स्व. गोपाल कृष्ण गोखले (३) स्व. नरसिंह चिन्तामणि केलकर (४) बैरिस्टर विनायक दामोदर सावरकर (५) स्व. हरि नारायण आपटे (६) सरदार माधवराव किबे (७) भूतपूर्व राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्रप्रसाद (कन्या में राहु)

(८) **श्रीमती जमनाबाई गायकवाड---बडौदा की महारानी** जन्म शक १७७५ श्रावण व.९रविवार रात्रि २-३० मद्रास टाइम स्थान-- रहिमतपुर (सातारा)।
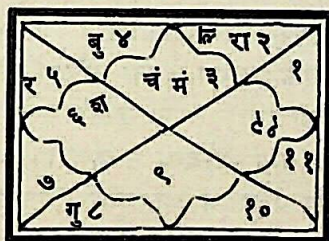
इन का जन्म साधारण स्थिति में हुआ। बडौदा के महाराज़ा खण्डेराव गायकवाड से विवाह होने पर एकदम ऐश्वर्य मिला। एक कन्या हुई, पति का मृत्यु हुआ। बाद में ३० वर्ष तक बडौदा रियासत का काम योग्यतापूर्वक सम्हाला।

समारोप

कुछ ज्योतिषियों का कथन है कि राहु व केतु ये ग्रह घन-द्रव्य के नही हैं---चन्द्रकक्षा के दो बिन्दु मात्र हैं, अतः इन का शुभाशुभ फलविचार नही करना चाहिए। हम ने भी राहु-केतु घन द्रव्ययुक्त ग्रह हैं ऐसा कभी नहीं माना। किन्तु फलविचार में इन का समावेश अवश्य किया है। प्राचीन समय से सभी ज्योतिर्विद आचार्यों ने इन के फलों का वर्णन किया है तथा अनुभव से भी इन के फल महत्त्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। आचार्य वराहमिहिर ने राहुचार नामक एक प्रकरण अपनी संहिता में दिया है इस से राहु का महत्त्व अच्छी तरह स्पष्ट होता है। कुछ ज्योतिषी राहु--केतु को सिर्फ अन्य सम्बन्ध से फलदायी मानते हैं---यथा यद्यद्भावगतौ वापि यद्यद्भावेशसंयुतौ। तत्तत्फलानि प्रबलौ प्रदिशेतां तमोग्रहौ ॥ यदि केन्द्रे त्रिकोणे वा निवसेतां तमोग्रहौ। नाथस्यान्यतरस्यैव सम्बन्धाद् योगकारकौ ॥ तमोग्रहौ शुभारूढौ असम्बन्धाच्च केनचित्। अन्तर्दशानुरूपेण भवेतां योगकारकौ ॥ अर्थात्---प्रबल राहु-केतु जिस भाव में हों अथवा जिस भावाधिपति के साथ हों उस के अनुसार फल देते हैं। वे शुभ स्थान में हों और अन्य ग्रह से सम्बन्धित न भी हों तो उनके योगों के फल अन्तर्दशा के अनुसार मिलते हैं। वे केन्द्र और त्रिकोण में हों तथा अन्य स्थानाधिपति से सम्बन्धित हों तो योगकारक होते हैं। किन्तु राहु-केतु के फल पर इस प्रकार दूसरे ग्रहों के सम्बन्ध की मर्यादा बतलाना उचित नही है। इसी ग्रन्थ में पंचम के दृष्टि रहित निर्बल केतु को विद्या व सन्तति में विघ्नकारक

माना है। इस से भी राहु केतु की स्वतन्त्र फल देने की शक्ति सिद्ध होती है।

पहले वंशानुगत फलविचार में राहुयोग से वंशपरंपरा से चलनेवाले कुछ दोषों का विचार किया है। ये दोष दूर करने के लिए उन के मूल कारणीभूत पापकृत्यों का परिहार करना जरूरी होता है। लावारिस के धन का दोष हो तो वह धन समाजहित के कार्य में दान देना चाहिए; किसी का संसार उजडने का दोष हो तो गरीब, अनाथों के संसार बसाना चाहिए; किसी व्यक्ति को बहुत कष्ट देनेका या उसकी हत्या का दोष हो तो उस व्यक्ति की आत्मा की शान्ति के लिए नागबलि अथवा नारायणबलि विधि करना चाहिए; सूर्य की उपासना व धर्मग्रन्थों का पारायण करना चाहिए। इस प्रकार धर्माचरण से पापकृत्य का दोष दूर होकर अगली पीढियां सुखी होती हैं।

हरएक ज्योतिषी और ज्योतिष शास्त्रके अभ्यासकों के लिये अत्यंत उपयुक्त ग्रंथ । इन सब ग्रंथोंके बिना ज्योतिष-शास्त्रका ज्ञान अधूरा रहता है ।

सर्वोत्कृष्ट ज्योतिष-ग्रंथ

लेखक—स्व. ज्योतिषी ह. ने. काटवे

रवि–विचार	२–००	गोचर–विचार	३–५०
चन्द्र–विचार	२–००	शुभाशुभ ग्रह–निर्णय	३–५०
मंगल–विचार	२–५०	योग–विचार १ ला	१–००
बुध–विचार	२–००	योग–विचार २ रा	३–५०
गुरु–विचार	२–५०	योग–विचार ३ रा	२–००
शुक्र–विचार	२–५०	योग–विचार ४ था	१–२५
शनि–विचार	२–५०	योग–विचार ५ वा	२–२५
राहू केतू–विचार	३–५०	योग–विचार ६ वा	३–००
भाव–विचार	३–००	योग–विचार ७ वा	२–५०
भावेश–विचार	३–५०	अध्यात्म-ज्यो.-विचार	१०–००

नागपुर प्रकाशन, सीताबर्डी, नागपुर १.